सद्गुरु अवतरण विशेषांक
अप्रैल-2021
मूल्य-40/-
वर्ष 11
अंक 7
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
गुरुकृपा प्राप्ति सा.
शत्रु स्तम्भन प्रयोग
तांत्रोक्त हनुमत कल्प
अक्षय तृतीया
अक्षय लक्ष्मी साधना
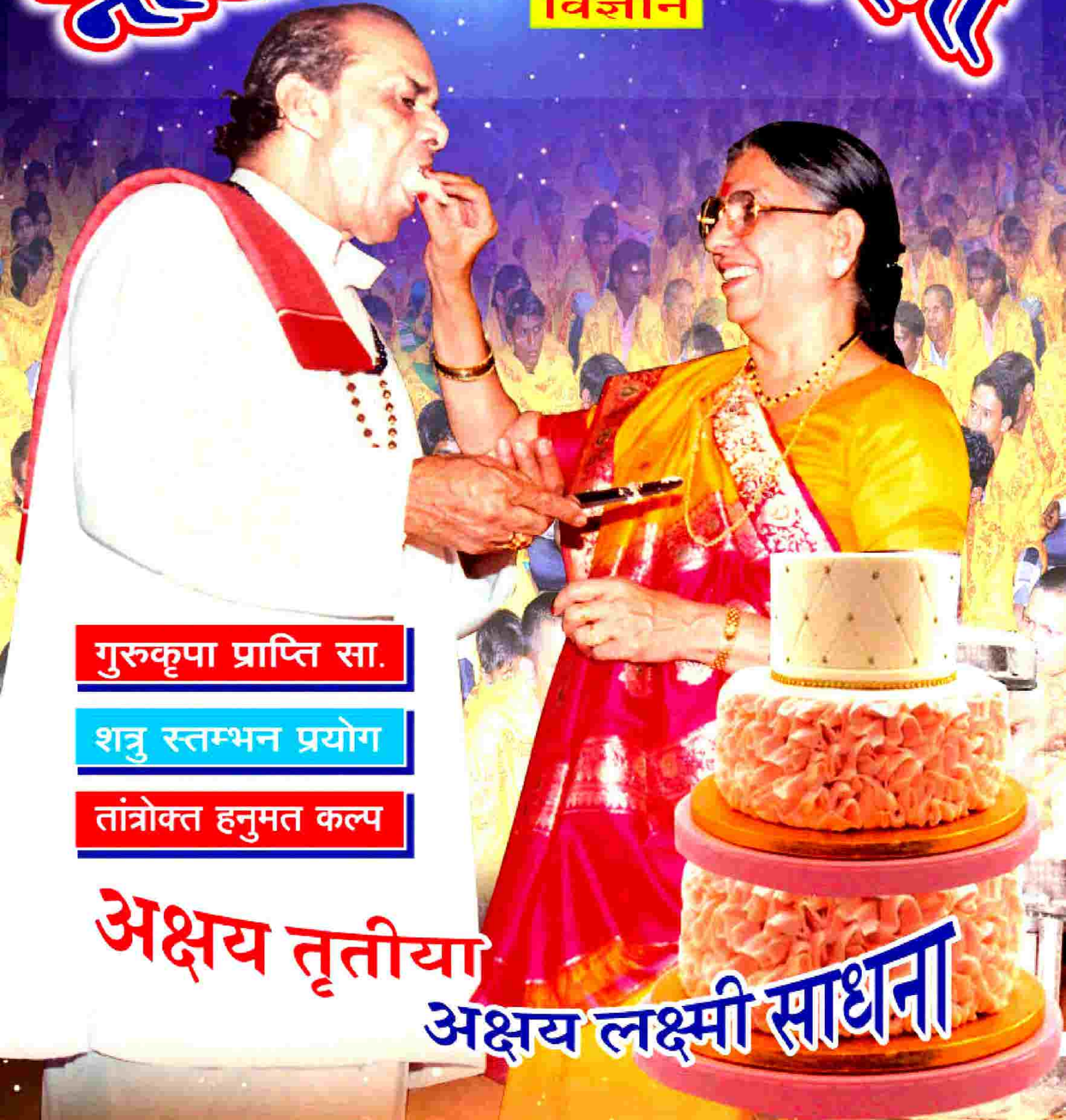
नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खातें में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-	हनुमान यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	गणपति यंत्र एवं माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450	1 वर्ष सदस्यता 405/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

समृद्धि एवं सम्पन्नता प्राप्ति हेतु : अक्षय लक्ष्मी साधना

रस विलास की एकमात्र साधना : मातंगी महाविद्यासाधना

बल, बुद्धि और विद्या प्राप्ति हेतु सर्वश्रेष्ठ : तांत्रोक्त हनुमत कल्प

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

शिष्य धर्म 34
गुरुवाणी 35
नक्षत्रों की वाणी 46
मैं समय हूँ 48
वराहमिहिर 49
इस मास दीक्षा 62
एक द्रष्टि में 63

साधनाएँ

गुरू कृपा प्राप्ति प्र. 20
अक्षय लक्ष्मी साधना 21
मातंगी साधना 23
मनोकामना पूर्ति प्र. 36
सौन्दर्य साधना 37
तांत्रोक्त हनुमत कल्प 40
नृसिंह साधना 50
भुवनेश्वरी प्रयोग 53
शत्रु स्तम्भन साधना 54

ENGLISH

Divya Suryatva Sadhana 60

विशेष

अब प्रभु कृपा.... 28
गुरू मंत्र विवेचन 30
प्रभु की सामीप्यता 44
अद्वितीय ज्योतिषी 56

स्तोत्र

तारा स्तोत्र 26
श्री गुरू स्तवन 55

आयुर्वेद

हींग 42

योग

पद्मासन 57

यात्रा

ज्योतिर्लिंग केदारनाथ धाम यात्रा 65

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
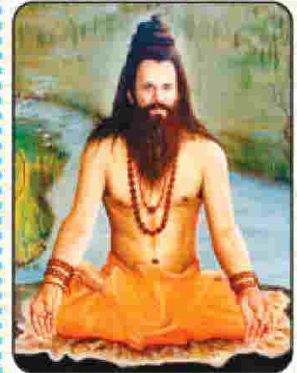
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
प्रगति प्रिंटर्स
A-15, नारायणा, फेज-1
नई दिल्ली: 110028
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रति 40/-
वार्षिक 405/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me
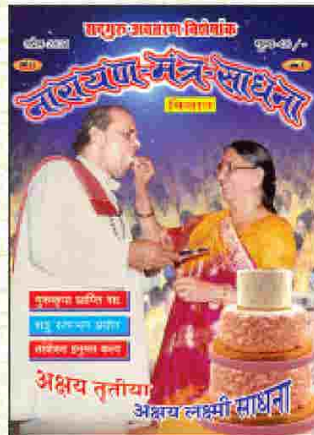
प्रार्थना

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मी रूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रता रूप से, शुद्धान्तःकरण वाले पुरुषों के हृदयों में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जा रूप से निवास करती हैं, उन भगवती को हम लोग नमस्कार करते हैं। देवि! विश्व का सर्वथा पालन कीजिये।

गुरु आज्ञा पालन परमो धर्म

विद्यालय सत्र पूरा होने पर आचार्य ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही। सभी शिष्यों के हाथ में बास की टोकरियां थमाते हुए आचार्य ने कहा, ''इन में नदी का जल भर कर लाना है, और उस से विद्यालय भवन की सफाई करनी है।''

शिष्य आचार्य की आज्ञा सुन कर चकरा गए कि बांस की टोकरी में जल लाना कैसे संभव होगा, लेकिन सभी ने टोकरियां उठाई, नदी पर गए, प्रयास किया, किन्तु बांस की टोकरियों के छिद्रों में से जल रिस जाता।

हताश शिष्यों ने लौट कर गुरूदेव को वस्तुस्थिति बताई, किन्तु एक छात्र अपने कर्तव्य के प्रति गंभीर था। उसके मन में गुरू के प्रति पूर्ण निष्ठा और आस्था थी। वह यह सोच कर बारबार जल भरता रहा कि गुरूदेव ने ऐसी आज्ञा दी है तो यों ही नहीं दी होगी, उनके कहे के पीछे जरूर कोई अर्थ होगा। प्रातः से सायं तक वह जल ही भरता रहा।

जल में बांस की टोकरी के रहने से बांस की तीलियां फूल चुकी थी और छिद्र बंद हो चुके थे, अतः शाम को वह टोकरी में जल ले कर विद्यालय पहुंचा।

अब गुरू ने शिष्यों को इकट्ठा किया और परिश्रम का महत्व बतलाते हुए कहा, ''कार्य तो मैंने तुम्हें अकल्पनीय और दुरूह ही सौंपा था, किन्तु विवेक, धैर्य, लगन, निष्ठा तथा निरंतर प्रयास से कठिन कार्य भी संभव हो सकता है।''

सद्गुरुदेव कहते हैं, शिष्य बनना जीवन का महानतम कार्य है और शिष्य में ज्ञान, गुण, चतुराई, शक्ति, शौर्य, साहस होना ही चाहिये। साथ ही आलस्य उससे दूर रहे। शिष्य बनने में आनन्द ही आनन्द है क्योंकि समर्पित शिष्य बनते ही गुरु हृदय में स्थापित हो जाते हैं। हनुमान का उदाहरण देते हुए गुरुदेव का यह प्रवचन वास्तव में शिष्यों के लिए एक सारगर्भित प्रवचन है, जिसके प्रत्येक शब्द को ध्यान से समझें -

शिष्योर्वतां शिष्य सदैव जीवं प्राणं च आत्मा बल चैव ज्ञानं
चिंत्यं विचिंत्यं देवत्व मेदवं शिष्यत्व रूपं शिष्यत्व दिव्यं।

हनुमत सैव्य ग्रंथ है, जो आपने देखा नहीं है।

हनुमान जैसा विद्वान और शिष्य पृथ्वी पर अभी तक कोई पैदा नहीं हुआ। शिष्यता की वे पराकाष्ठा थे और विद्वता की भी पराकाष्ठा थे।

हनुमान को हमने देखा है राम के सेवक के रूप में जब कि जहाँ भी शिष्य शब्द का प्रयोग होगा वहाँ हनुमान का नाम लेना ही पड़ेगा और उन्होंने अपने जीवन में तीन ग्रंथ लिखे। उनमें से हनुमत सैव्य में लगभग 115 श्लोक हैं और एक-एक श्लोक एक-एक हीरे की तरह है।

और उस पुस्तक के बाद जिसने भी लिखा है वह उस पुस्तक की नकल ही की है, उस पुस्तक का सारभूत लेकर ही चलाया है। वह ग्रंथ अपने आपमें बेजोड़ है और बचपन में मुझे वह पूरा का पूरा ग्रंथ कंठस्थ था और आज भी है और मैं उसके प्रत्येक शब्द को, प्रत्येक श्लोक को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करता था जब मैं शिष्य था। शिष्य मैं आज भी हूँ क्योंकि शिष्य शब्द अपने आपमें समाप्त होता ही नहीं है।

इन श्लोकों का सार जब मोतियों की तरह गले में पहना होता है तो अपने आप में वह एक साधारण शिष्य देवता बन जाता है और इतना बड़ा देवता बन जाता है कि राम स्वयं हनुमान को कहते हैं, कि तुम भरत से भी ज्यादा प्रिय मेरे भाई हो।

तुलसीदास भी कहते हैं-

जै हनुमान ज्ञान गुण सागर...

आप ज्ञान और गुण के सागर हैं, और तुलसीदास जी आगे कहते हैं कृपा करो गुरुदेव की नाई।

जैसे गुरु कृपा करते हैं वैसे ही हनुमान आप कृपा करें। गुरु की कृपा देवताओं से भी ज्यादा उच्चकोटि की कही जाती है।

तुलसीदास यह भी कह सकते थे कि कृपा करो इंद्र की नाई या कृपा करो विष्णु की नाई। वे ऐसा भी लिख सकते थे। मगर वे विद्वान थे और उन्होंने कहा कि जितना दयालु और जितना अद्वितीय स्वरूप गुरु का हो सकता है उतना और किसी का नहीं हो सकता।

जब तुलसी ने हनुमान चालीसा लिखा तो उन्होंने इसी शब्द का प्रयोग किया और कहा कि आप ज्ञान और गुण के अद्वितीय सागर हैं और आप क्रोध में अग्नि स्वरूप हैं कठिन से कठिन कार्य करने में आप अग्रणी रहे हैं, फिर भी आप गुरु की तरह हम सब पर कृपा करें।

इससे इस बात का परिचय मिल जाता है कि गुरु क्या है और शिष्य क्या है? और जब तक हम उस भाव को समझेंगे नहीं तब तक हमारे जीवन में कुटिलता बनी रहेगी और कुटिलता का अर्थ है नीचे गिरना।

आप चाहे पुरुष हैं, चाहे स्त्री हैं, आप शिष्य तब कहलाएंगे जब शिष्य की कसौटी पर खरे उतरेंगे। मैं अपने को भगवान कह दूँ, मगर जब भगवान की कसौटी पर खरा उतरूँगा तब मैं भगवान हूँ। शिष्यता की कसौटी पर आज मुझे घिसा जाए और मैं उस कसौटी पर खरा उतरूँ तो मैं शिष्य हूँ। गुरु की कसौटी पर खरा उतरूँ तो मैं गुरु हूँ।

क्रोध तो मैं भी कर ही सकता हूँ। दोनों आँखों को सूर्य और चन्द्रमा कहा गया है। एक आँख अपने आपमें सूर्य समान क्रोधमय और अग्निमय होनी चाहिए और गुरु की दूसरी आँख बहुत शीतल और पवित्र भी होनी चाहिए। कोई क्रोध में जलाकर शिष्य को समाप्त करना गुरु का कर्त्तव्य नहीं है। . . .परंतु किसी भी शिष्य के अंदर पाप हो, तो उसे क्रोध के माध्यम से जलाकर के और शीतल जल से स्नान कराकर के उसे सही अर्थों में शिष्य बनाना, वह गुरु का धर्म है।

हो सकता है सामने वाला शिष्य नहीं बन पाए और हो सकता है बहुत जल्दी बन जाए। मगर संसार में यह हनुमान का उदाहरण है कि उन्हें देवताओं से भी अधिक पूजा जाने लगा है। भारतवर्ष में राम के इतने मंदिर नहीं होंगे जितने हनुमान के हैं।

राम, कृष्ण और अन्य देवताओं के इतने मंदिर हैं नहीं। उनके मंदिरों को जोड़कर जो संख्या बनती है उससे भी ज्यादा हनुमान के मंदिर हैं, उस सेवक के मंदिर हैं, उस शिष्य के मंदिर है। इसका तात्पर्य है कि गुरु से भी उच्चकोटि की कोई स्थिति है तो वह शिष्यता है।

जब जीवन का सौभाग्य उदय होता है तो व्यक्ति गुरु नहीं बनता, जब जीवन कापुण्य उदय होता है तो व्यक्ति शिष्य बनता है। हनुमत सैव्य अद्वितीय ग्रंथ है जिसे वास्तव में हमें प्रकाशित करना चाहिए और प्रकाशित करके वितरित करना चाहिए। हो सकता है कोई चिंगारी किसी को लग जाए और सौ दो सौ में कोई एक शिष्य बन जाए। हनुमान के स्वयं के भी कोई अस्सी हजार शिष्य थे। नल, नील, जाम्बवन्त तक ने हनुमान को अपना गुरु माना। यहाँ तक कि सुग्रीव ने भी हनुमान के चरणों में सिर रख कर कहा कि तुम्हारे समान कोई गुरु नहीं बन सकता।

पूर्णत्व परिपूर्ण स्वरूप भवतं हनुमत महां राम वै पूरा
गुरुवैं सहितां पूर्वं शिष्यं गुरु मेवं च उच्यते।

जहाँ गुरु शब्द आएगा वहाँ हनुमान शब्द आएगा और जहाँ शिष्य शब्द आएगा वहाँ भी हनुमान का नाम आएगा।

मगर हनुमान ने कहा है कि मैं गुरु नहीं बनना चाहता हूँ। मैं जितना आनंद शिष्य बन कर के ले रहा हूँ उतना आनंद तो पृथ्वी पर कोई देवता ले ही नहीं सकता।

और हनुमान गुणों के भी सागर थे, ज्ञान के भी सागर थे और चौबीस घंटों में एक बार भी उनके अंदर आलस्य और कुटिलता नहीं आती थी। और ऐसा भाव नहीं आता था, कि अगर हम कल सुबह देर से भी सो कर उठेंगे तो गुरु क्या कर लेंगे? जब आप स्वयं गुरु को कसौटी पर कसना शुरु कर देंगे तो फिर आपका शिष्य भाव, तिरोहित हो ही जाएगा। ऐसा सोचना शिष्य के लिए बड़ा ही ओछापन, घटियापन है कि यदि शिष्य के मन में कुटिलता आए या आलस्य आए।

आप शिष्य बनना चाहते हैं तो आपके अंदर ज्ञान और गुण दोनों आने चाहिए। ज्ञान का अर्थ है कि अंदर एक प्रकाश पैदा होता रहना चाहिए और गुण का अर्थ है कि जो गुरु ने कहा है उन गुणों से हम विभूषित होते रहें। हीरे और मोतियों से विभूषित नहीं। . . . और आलस्य और शिष्यता का आपस में कोई संबंध नहीं है।

केवल 32 मिनट की नींद अपने आपमें संपूर्ण है यदि वह पूर्ण हो। गहराई के साथ हो तो केवल 32 मिनट की नींद पूरे 24 घंटे ऊर्जा प्रदान करती रहती है। हमें तो 32 मिनट से ज्यादा नींद प्राप्त होती है इसलिए आलस्य तो आना ही नहीं चाहिए शिष्य के जीवन में।

शिष्यता तो एक आनंद है, मस्ती है, अपने आपमें, हर क्षण एक तत्परता है। गुरु धीरे-धीरे जड़ होता जाता है। वह बैठा रहता है प्रवचन करता रहता है, विषय उसमें धीरे-धीरे बढ़ते रहते हैं, और रोगों से ग्रस्त होकर, वह समाप्त हो जाता है और अस्सी, परसेंट गुरु ऐसे हुए जो जीवन में अकर्मण्य हो गए, शिष्य भाव उनमें नहीं रहा। और शिष्य भाव नहीं रहा, केवल गुरु भाव रहा, तो अपने आप में रोगों में ग्रस्त होते गए। शरीर तो रोग ग्रस्त हो सकता है पर वे मन से भी रोग ग्रस्त हो गए, क्रोधमय बन गए, चिड़चिड़ापन आ गया, लड़ाई झगड़ों में मन आ गया, वे स्वार्थ में आ गए।

इसीलिए हनुमान ने पहले ही कहा कि मैं शिष्यवत् ही रहना चाहता हूँ। . . . और जब लव और कुश से राम पराजित हो गए, अपने पुत्रों से पराजित हो गए। लव कुश को तो मालूम था ही नहीं। उन्होंने अपने जीवन में पिता को देखा ही नहीं था। लव जब गर्भ में था तभी सीता वाल्मीकि के आश्रम में चली गई थी, वहीं पर वह पैदा हुआ। वहीं पर कुश भी पैदा हुआ और दोनों बड़े हुए। . . . और जब चक्रवर्ती बनने के लिए राम ने अश्व पूरे भारत वर्ष में भेजा कि जो भी इस अश्व को पकड़ेगा वह मेरा शत्रु है और राम को यह भाव था कि मेरा पूरे भारत वर्ष में कोई शत्रु हो ही नहीं, मैं सबको परास्त करूँ और चक्रवर्ती कहला सकूँ। पहले चक्रवर्ती बनने के लिए ऐसी क्रिया करनी पड़ती थी।

और जब वह अश्व दौड़ता वहाँ तक पहुँचा तो लव ने उसे पकड़ लिया। अश्व रुका तो सूचना पहुँची अयोध्या में और राम युद्ध करने के लिए आए और घनघोर युद्ध हुआ। राम जैसा विश्वामित्र का शिष्य और लक्ष्मण के साथ में। जब युद्ध हुआ तो लव कुश ने राम और लक्ष्मण दोनों को बाँध कर गिरा दिया और जाकर माँ को कहा कि चक्रवर्ती बनने के लिए कोई अयोध्या के राजा आए थे और उनको हमने बाँध कर पटक दिया।

सीता चिंतित हो गई और दौड़ कर एकदम आई। देखा तो फड़ाफड़ा रहे थे दोनों। राम भी बँधे हुए, लक्ष्मण भी बँधे हुए। उनकी वीरता धरी रह गई।

सीता ने कहा – यह तुमने क्या कर दिया, यह तुम्हारे पिता हैं।

लव कुश ने कहा – ऐसे हमारे पिता नहीं हो सकते जो हमारी माँ को उठाकर जंगल में फेंक दें। मगर आपने हमें ज्ञान दिया कि हमें शिष्यवत रहना है सदा। इसलिए हम इनको बंधन मुक्त करते हुए इनके चरणों में प्रणिपात करते हैं।

यह एक छोटी सी कथा है पर इस छोटी सी कथा के पीछे तथ्य यह कि शिष्य अपने आपमें बुद्धि बल, शक्ति, शौर्य साहस का प्रतीक होता है। उसमें केवल क्षमा और सेवा के गुण नहीं होते, बल भी होता है, साहस भी होता है, इन चारों चीजों से मिलकर शिष्य शब्द बनता हैं

शिष्य का अर्थ है अपराजेय, यानि वह जीवन में पराजित हो ही नहीं। और बल का अर्थ है शौर्य और साहस। बल का मतलब यह नहीं कि हर किसी से युद्ध करे। बल का अर्थ है यह निश्चय कि मैं जो कुछ करूँगा, करूँगा ही। हर हालत करूँगा। और यह करके दिखा दूँगा। बुद्धि का अर्थ है कि उस कार्य को किस प्रकार किया जाए, उसकी समझ हो। इतनी चतुराई के साथ कार्य हो कि दूसरे लोग अहसास कर सकें कि वास्तव में यह एक शिष्य द्वारा किया गया कार्य है।

इन तथ्यों को लेकर के हनुमत सैव्य ग्रंथ लिखा गया हैं इसका ही एक श्लोक आपके सामने स्पष्ट कर रहा हूँ।

शिष्योर्वतां शिष्य सदैव जीवं प्राणं च आत्मा बल चैव ज्ञानं
चिंत्यं विचिंत्यं देवत्व मदेवंशिष्यत्व रूपं शिष्यत्व दिव्यं।

हनुमान ने कहा है कि शास्त्र बिल्कुल सही हैं और शास्त्रों में लिखा है कि चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ व्यक्ति मनुष्य देह धारण करता है। बड़ी मुश्किल से यह शरीर मिलता है। और मनुष्य देह की विशेषता यह है कि मनुष्य ही सोच सकता है, समझ सकता है, आनंद ले सकता है। देवता नहीं ले सकते, राक्षस भी नहीं ले सकते। इसलिए बड़ी कठिनाई से यह शरीर मिलता है जिसके महत्व को हमने समझा नहीं। हमने समझा ही नहीं कि मनुष्य देह हमने क्यों धारण की, क्या इसकी विशेषता है? जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं, हम इस मनुष्य देह में प्राप्त कर सकते है और किसी

अन्य देह के माध्यम से प्राप्त नहीं कर सकते।

और पहले श्लोक का अर्थ है कि ज्योंही हम शिष्य बनते हैं, चौरासी लाख योनियां अलग रह जाती हैं। बाकी सारी योनियां पार हो जाती हैं, बाकी सारी योनियां अपने आप समाप्त हो जाती हैं। फिर मृत्यु के बाद चौरासी लाख योनियों में भटकना नहीं पड़ता। केवल चार योनियां बाकी रह जाती हैं। फिर आने वाले समय में उन चौरासी लाख योनियों में भटकना नहीं पड़ता। केवल चार योनियां बाकी रह जाती हैं यदि हम शिष्य शब्द से विभूषित हो जाएं। और चाहे कुछ न किया, केवल गुरु के चरणों में सिर को झुका दिया। इतना करने से ही चौरासी लाख योनियां चार योनियों में सिमट कर रह जाती है। हो सकता है, फिर मृत्यु हो जाए परंतु फिर केवल चार योनियों में भटकने के बाद मनुष्य शरीर धारण कर सकते हैं। यह अपने आपमें बहुत बड़ी बात, बहुत बड़ा गुण है। केवल गुरु चरणों में सिर झुकाने से इतनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त हो जाती है।

और हनुमान ने कहा है कि यह जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि इसलिए है क्योंकि इन चार योनियों को भी इसी देह में समाप्त कर सकते है जिससे मनुष्य शरीर समाप्त हो ही नहीं।

इस श्लोक में कहा है कि शिष्य का अर्थ है पूर्ण आलस्य विहीन होने की क्रिया। और हनुमान ने कहा है कि मेरा जीवन इस बात का प्रमाण है। एक भी क्षण ऐसा नहीं रहा, जहाँ मैंने प्रमाद किया हो या आलस्य किया हो। राम ने मुझे आज्ञा नहीं भी दी और मुझे मालूम पड़ा कि यह समस्या मेरे गुरु मेरे स्वामी के सामने आ रही हैं, तो मैंने तत्क्षण उस समस्या को दूर किया ही।

।। वंदो गुरुवदं चरण कमल पूर्ण भवत भवतु वै।।

हनुमान कह रहे हैं कि मैं गुरु के चरण कमलों में अपने आपको प्रणिपात करता हुआ, यह हनुमत सैव्य ग्रंथ लिख रहा हूँ।

उन्होंने राम शब्द का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने गुरु कहा। उन्होंने हनुमान और राम का संबंध नहीं लिखा उन्होंने गुरु और शिष्य के संबंध के बारे में लिखा। उन्होंने कहा – इससे ज्यादा पवित्र संबंध संसार में नहीं है। और शिष्य का सबसे बड़ा गुण, अगर वह शिष्य भगवान की तरह पूजा जाए, यदि वह जीवन में बहुत ऊंचाई पर उठ जाए, यदि पूरा विश्व उसका ध्यान करने लग जाए, पूजा करने लग जाए और आप देखेंगे कि संसार के प्रत्येक देश में, चाहे वह ईसाई देश हो या मुसलमान देश हो, हनुमान के मंदिर अवश्य हैं। दुबई में भी राम का मंदिर चाहे न हो पर हनुमान का मंदिर है और हम लोग वहाँ हनुमान की पूजा करते हैं, मुसलमान देशों में भी, ईसाई देशों में भी..... चाहे उनका धर्म अलग है क्योंकि हनुमान अपने आपमें शिष्य का
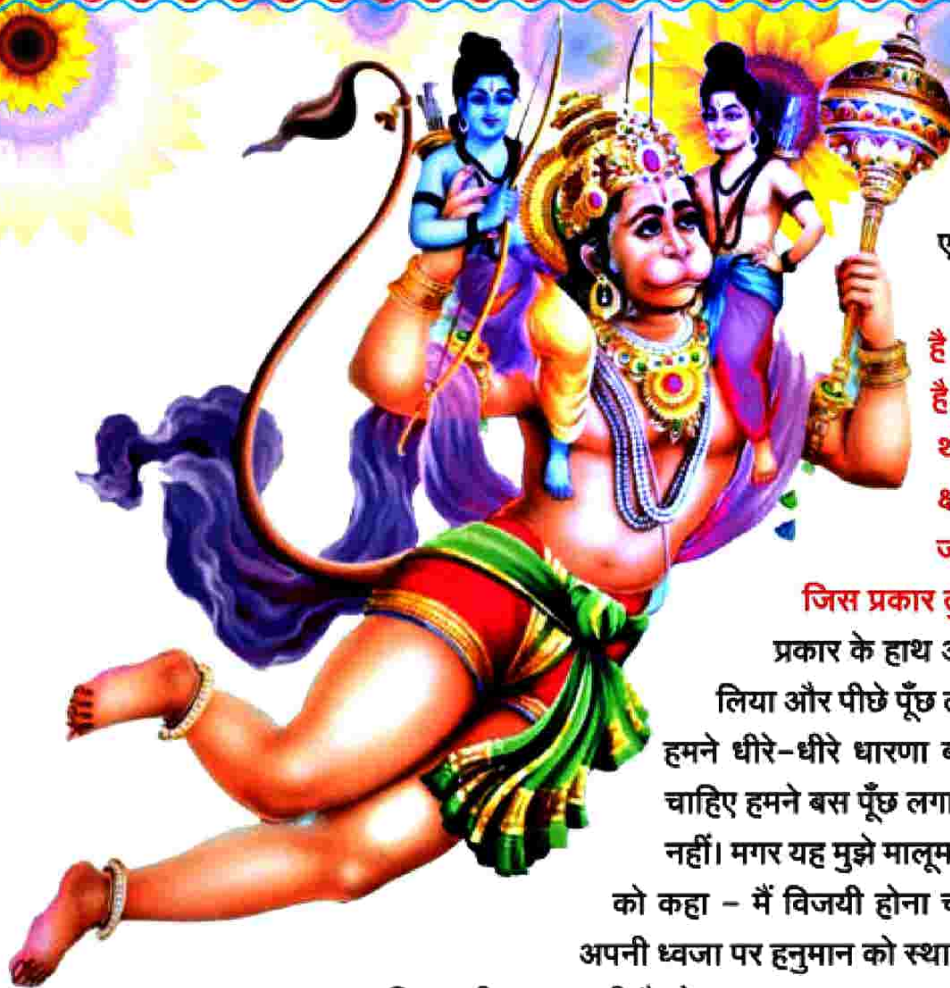
एक प्रतीक बन गए।

और जो आपके मन में यह चित्र बना हुआ है कि हनुमान का वानर की तरह मुँह है, और पूँछ है, वह तो एक प्रतीक है, वह तो वानर एक जाति थी उस समय, जिस प्रकार ब्राह्मण जाति है, क्षत्रिय जाति है उसी प्रकार उस समय वानर जाति थी। और वे भी उसी प्रकार मनुष्य थे जिस प्रकार तुम और मैं हूँ। उसी प्रकार का चेहरा था, उसी प्रकार के हाथ और पाँव थे, हमने वानर जाति को बंदर समझ लिया और पीछे पूँछ लगा दी। न उनके पूँछ थी न वे वानर थे। लेकिन हमने धीरे-धीरे धारणा बना ली कि वे वानर थे, वानर की पूँछ होनी चाहिए हमने बस पूँछ लगा दी। यह पूँछ हनुमान के कहाँ लगी मुझे मालूम नहीं। मगर यह मुझे मालूम है कि महाभारत युद्ध में भी जब अर्जुन ने कृष्ण को कहा - मैं विजयी होना चाहता हूँ, मैं क्या करूँ? तो कृष्ण ने कहा - अपनी ध्वजा पर हनुमान को स्थापित कर दो। कृष्ण ने एक ही बात कही - तुम्हें विजय ही प्राप्त करनी है तो ध्वजा पर हनुमान का स्थापन कर दो, जिससे प्रत्येक क्षण हनुमान तुम्हारे सामने रहें और उस ध्वजा पर जो हनुमान का चित्र था वह मानव आकृति का था, वानर का नहीं।

यह मैंने एक चिंतन को अपने सामने स्पष्ट किया कि हनुमान मनुष्य रूप में विद्यमान थे।

हनुमान ने कहा कि राम ने आज्ञा दी या नहीं दी, मैंने सदा उनके हित से प्रेरित होकर हर कार्य किया। जब मुझे मालूम पड़ा कि राम को अहिरावण लेकर गया पाताल में -

और ज्योंहि वह अहिरावण राम लक्ष्मण की बलि देने के लिए तैयार हुआ, त्योंही हनुमान वहाँ पहुँच गए क्योंकि हनुमान शिष्य था। उसका ध्येय यही था कि मैं बिना आलस्य के अपने गुरु की रक्षा करूँ, उनके लिए जीवन समर्पित करूँ। जीवन समर्पण करना शिष्य का धर्म और कर्त्तव्य है।

शिष्य का पहला कर्त्तव्य है आलस्य विहीन होना, शिष्य का दूसरा कर्त्तव्य है उस गुरु की रक्षा करना, गुरुत्व की रक्षा करना। मैं गुरु शब्द प्रयोग कर रहा हूँ। कोई राम की रक्षा या नारायण दत्त श्रीमाली की रक्षा करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। शिष्य का धर्म है गुरु की रक्षा करना और हनुमान सीधे पाताल लोक में गए और उस अहिरावण को समाप्त करके राम-लक्ष्मण को कंधे पर उठा करके वापस अपने स्थान पर लेकर आ गए। उसको कोई राम ने आज्ञा नहीं दी। राम ने यह नहीं कहा कि यह दानव मुझे पाताल लेकर जा रहा है, तुम मेरे पीछे आओ और छुड़ा कर ले जाओ।

हनुमान अपने आपमें पूर्ण सचेष्ट था, सर्तक था कि कहाँ मेरे गुरु हैं? कहाँ मेरे स्वामी हैं? कहाँ है, और किस जगह है? किस स्थिति में है और मुझे क्या करना है? इसको चतुराई कहते हैं। चतुर का अर्थ है कि शिष्य की पैनी दृष्टि रहती है कि वे गुरु कहाँ पर हैं, किस स्थिति में हैं और उनके प्रति मेरा क्या कर्त्तव्य है और उनको किसी प्रतिकूल स्थिति से बचाना बल का पर्याय है।

इसलिए मैंने कहा – बुद्धि और बल शिष्य के गुण हैं। तुलसी ने कहा है –

कृपा करो गुरुदेव की नाईं

हनुमान मैं आपको गुरुदेव की नाईं स्मरण करता हूँ। बल, बुद्धि में आप अद्वितीय हैं। इसलिए आप सही अर्थों में शिष्य हैं। आपमें बल है, क्षमता है, और बल का अर्थ है कार्य करने की चतुराई। किस तरह से मैं कार्य करूँ जिससे कि वह गुरुत्व बचा रह सके। हर हालत में मुझे गुरुत्व को बचाकर इसलिए रखना है क्योंकि मुझे ये चारों योनियां समाप्त करनी हैं और चारों योनियों को समाप्त करने में गुरु के अतिरिक्त कोई और सहायक नहीं हो सकता संसार में – न राम, न कृष्ण, न इंद्र, न यम, न कुबेर।

इन चार योनियों को गुरु के अतिरिक्त कोई नहीं समाप्त कर सकता। अगर वे कर सकते तो वे स्वयं गुरु को धारण नहीं करते। ऐसा कोई देवता नहीं हुआ जिसने गुरु को धारण नहीं किया हो – चाहे इंद्र हो। उसने बृहस्पति को अपना गुरु बनाया।

इंद्र जो देवताओं का राजा है, वह कहता है – हम बार बार मन से और तन से पराजित हो रहे हैं और हम उच्चकोटि के देवता तभी बन सकेंगे जब हे बृहस्पति! आप पूर्ण गुरुत्व मय रूप में हमारे हृदय में स्थापित हो सकेंगे। मेरे अंदर के अंधकार और आलस्य को दूर करिए अन्यथा राक्षस हम पर हावी होकर हमें समाप्त कर देंगे।

बृहस्पति तो बेचारा अकेला आदमी था, दुबुला–पतला। और ये सारे देवता इतने बलशाली थे ये इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मा, महेश, वरुण, यम, कुबेर परन्तु उन्होंने कहा – आप हैं बृहस्पति हमारे अंदर स्थापित, तभी हम देवता कहला सकेंगे।

हनुमान ने भी अपने ग्रंथ के पहले श्लोक में कहा है – गुरु को इसलिए मुझे अपने भीतर स्थापित करना आवश्यक है क्योंकि मैं अपनी चारों योनियों को समाप्त करके इसी जीवन में पूर्णता प्राप्त करूँ।

यजुर्वेद के पहले श्लोक में कहा है कि मनुष्य जीवन एक बुलबुले की तरह है। एक पानी का बुलबुला है जो समुद्र में से उठा, फूँक मारी और समाप्त हो गया। पानी का बुलबुला थोड़ा उठता है और समाप्त हो जाता है. . .ऐसा मनुष्य का जीवन है।

मगर उस मनुष्य के जीवन में एक छटपटाहट है एक वेदना है क्योंकि वह कुछ कर नहीं पाता। उसे अहसास है कि वह कमा भी रहा है तो बेकार है, पुत्र भी पैदा कर रहा है तो बेकार है क्योंकि उसके जीवन में आनंद नहीं है। वह बाजार में घूमता है तो भी आनंद नहीं है और होटल में खाना खाता है तो भी आनंद नहीं है क्योंकि उसके विकार समाप्त नहीं होते, उसमें कुटिलता बनी रहती है और हर बार उसका मन उन कुटिलताओं की ओर अग्रसर होता है और वह छटपटाता है कि कैसे बुद्धि को कीलित करें।

एक बूँद जब सागर से उठती है सूर्य की धूप के कारण भाप बनकर के . . . और जब बादल बनती है तब भी उसमें बहुत छटपटाहट होती है, वह आवाज करती है, तड़पती है।, गरजता है बादल क्योंकि उसे बेचेनी है कि क्या करे कहाँ जाए? हवा उसे उड़ा कर ले जाती है कभी पूर्व कभी पश्चिम और वह बादल डोलता रहता है जैसे मनुष्य डोलता रहता है।

कुछ मालूम नहीं कि करना क्या है, सुबह भागते हैं, दौड़ते हैं ऑफिस पहुँचते हैं, नौकरी करते हैं, दुकान पर बैठते हैं, ग्राहकों को धोखा देते हैं, शाम को आते हैं हारे थके हुए, मरे हुए और बिस्तर पर पड़ जाते हैं। उनको यह पता ही नहीं हम कर क्या रहे हैं, कहाँ सुख है, कहाँ आनंद है कहाँ मस्ती है और मुस्कराहट कहाँ है?

पूरे जीवन में उन्हें मुसकराहट प्राप्त होती ही नहीं क्योंकि उनके जीवन में गुरु ही नहीं है। उनके जीवन में कोई तथ्य नहीं है, आधार नहीं है, अवलंब नहीं है।

उस बादल के मन में भी कहीं खुशी नहीं है। वह उड़ता एक पहाड़ से टकराता है, हिमालय से टकराता है और टकराते ही बादल वापस बदल जाता है एक बूँद में। बादल रहता ही नहीं, एक बूँद बन जाती है टकराते ही।

पहली बार व्यक्ति जब गुरु से टकराता है तो वह भी परिवर्तित हो जाता है, शिष्य बन जाता है . . .और वह बूँद बहने लग जाती है, धीरे धीरे एक धारा का रूप धारण करती है और फिर एक नदी बन जाती है और जितनी छटपटाहट जितनी वेदना उस नदी में होती है, उतनी छटपटाहट और वेदना पूरे संसार में नहीं है। किनारों को तोड़ देती है, क्रोध का एक पुंज बन जाती है, मनुष्यों, जानवरों को बहा कर ले जाती है, गाँव बहा ले जाती है नदी। इस बात की परवाह नहीं करती कि क्या होगा। बस इस बात की चिंता होती है कि मुझे उस जगह मिल जाना है जहाँ से मैं उठी हूँ जहाँ से मेरा प्रादुर्भाव हुआ है। .... और वह दौड़ती हुई समुद्र में मिल जाती है और मिलते ही शांत हो जाती है। उसका दौड़ना भागना, इतना व्यग्र होने की क्रिया कि सब कुछ समाप्त हो जाते हैं।

....और हनुमान कहते हैं कि मनुष्य भी एक बूँद है और उसमें एक छटपटाहट है और संसार का कोई मंत्र, कोई विधि, कोई व्यक्ति उसकी छटपटाहट वह तब समाप्त कर सकता है जब वह गुरु में लीन हो जाए और गुरु को अपने हृदय में धारण कर ले। हर क्षण उसके हृदय में गुरु ही रहे।

और जब हनुमान से पूछा कि तुम कह रहे हो हर क्षण हृदय में गुरु धारण रहना चाहिए, वह कहाँ है? तो हनुमान ने अपना सीना फाड़ कर दिखा दिया कि देख लो मेरे सीने में और कोई चीज नहीं है, बस राम और सीता बैठे हुए हैं। हनुमान ने कहा कि मेरे प्रत्येक रोम में, मेरी प्रत्येक हृदय की धड़कन में एक चेतना पुंज समाहित था कि मेरे हृदय में कोई विकार ही नहीं है, कोई कुटिलता ही नहीं है, केवल है तो वह राम सीता की जोड़ी है, वह गुरुत्व है, उसके अलावा तो हृदय में कुछ रखना ही नहीं चाहता हूँ, क्योंकि मैं सही अर्थों में शिष्य बनना चाहता हूँ, मैं बेचेनी नहीं चाहता, और जब गुरु अंदर हैं तो विकार आ ही नहीं सकता और जब वे अंदर हैं तो मेरी मृत्यु हो ही नहीं सकती। मैं जीवित रहूँगा।

. . .और त्रेता युग से लगाकर आज कई हजार वर्ष बाद भी हनुमान जीवित है। आज भी
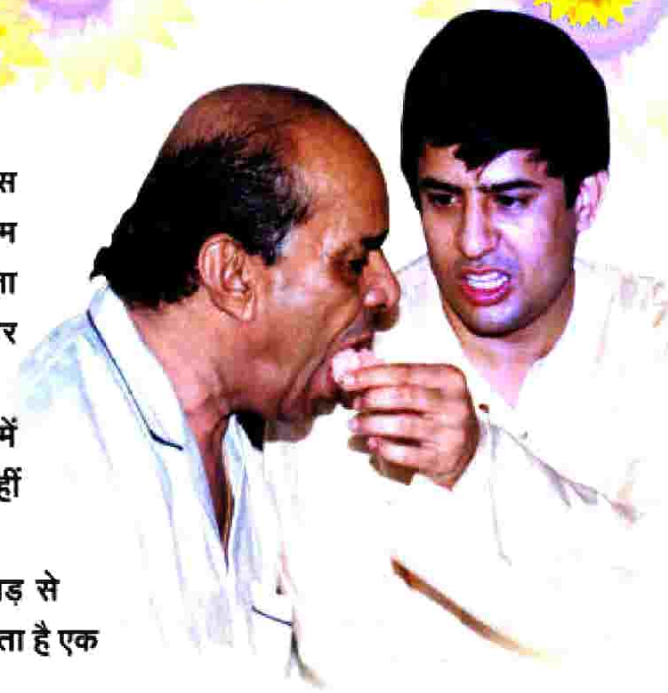
हम उनका स्मरण करते हैं, आज भी उनके मंदिर हैं, आज भी उनकी पूजा करते हैं। एक सेवक की पूजा कर रहे हैं, एक दास की पूजा कर रहे हैं, जो राम के चरणों में रहा है, उसकी पूजा कर रहे हैं . . . और राम से भी ज्यादा हनुमान को पूजते हैं।

तुलसी कहते हैं कि हे हनुमान! राम से भी आप ऊँचे हैं, राम से भी आप महान हैं, राम तक पहुँचने के लिए भी केवल आपके माध्यम से होकर गुजरना पड़ता है। राम ने तो कई बाद अपूर्णता दिखाई मगर आपने तो कभी आलस्य दिखाया ही नहीं। एक चिंतन, एक ही विचार कि कहाँ गुरु हैं और मुझे क्या करना हैं किस प्रकार किस युक्ति से, बल और चतुराई से उनकी रक्षा करनी है और अपने जीवन की उन चारों योनियों को समाप्त करना है, क्योंकि न मालूम हम मृत्यु के बाद वापस क्या बनेंगे, किस योनि में जाएंगे, कुछ पता ही नहीं।

मृत्यु तो एक आनंद पूर्ण घटना हैं मृत्यु हो और हम आनंद के साथ उसका वरण कर पाएं। यों गोली खाकर भी लोग मरते हैं ऐसी अकाल मृत्यु हमें नहीं चाहिए। . . . और आपको पता ही नहीं, आपकी मृत्यु कहाँ हो सकती है?

और शिष्य की मृत्यु हो ही नहीं सकती। इसलिए, क्योंकि उसके ह्रदय में गुरुत्व है। और उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली तो चारों योनियों पर भी विजय प्राप्त कर ली। जब मृत्यु होगी ही नहीं तो फिर योनियां होंगी कहाँ से?

तो हनुमान ने कहा कि जीवन की श्रेष्ठतम जो स्थिति है, वह शिष्य है, और मैं जीवन के अंतिम सांस तक शिष्य ही बना रहना चाहता हूँ, मुझे देवता नहीं बनना।

जब सुग्रीव ने उनकी पूजा करनी शुरु की, जब जाम्बवंत ने हाथ जोड़े तो हनुमान ने कहा – जाम्बवन्त आप हाथ मत जोड़िए। हाथ जोड़कर मुझे नीचे मत गिराइए। मुझे शिष्य बने रहने दीजिए, मुझे गुरु बनना ही नहीं। क्योंकि शिष्य का जो आनंद है, वह गुरु नहीं ले सकता। गुरु अपनी मर्यादाओं में बँधा रहता है, शिष्य खुला रहता है क्योंकि वह निर्भीक होता है, उसको विश्वास होता है कि मेरे ह्रदय में गुरु हैं, मेरी मृत्यु हो नहीं सकती, मृत्यु मेरे सामने आकर कुछ कर नहीं सकती, रोग मुझे हो नहीं सकते, समस्या, बाधा मेरे सामने आ नहीं सकती, क्योंकि ये जिम्मेवारी तो मैं गुरु को सौंप चुका हूँ। मैं अपना तन, मन और प्राण उन्हें सौंप चुका हूँ, वे अपने आप सब करेंगे क्योंकि वे गुरु हैं। मैं तो केवल जिन्दगी में आनंद ही भोगने के लिए बैठा हूँ। . . . और मेरे मन में विकार आएगा ही नहीं क्योंकि मैं पहले ही ह्रदय में गुरु को समाहित कर चुका हूँ।

हनुमान ने कहा कि जीवन की प्रत्येक तत्परता यानि कहा और किया। राम ने कहा – तुम्हें जाकर सीता की सुधि लानी है और बिना सीता के ये प्राण अपने आपमें व्यर्थ है।

तो हनुमान ने कहा – इतनी छोटी सी बात की मुझे कोई चिंता नहीं। माना कि सैकड़ों योजन समुद्र है और रावण है, कुछ भी है परंतु आप मेरे अंदर बैठे हुए हैं, आपका साहस मुझमें है।

और हनुमान ने तुरंत छलांग लगाई। इतना सोचा ही नहीं कि मैं डूब जाऊँगा, समुद्र में गिर जाऊँगा। वह हनुमान भी मनुष्य ही था। वहाँ अशोक वाटिका में जाकर उसका विध्वंस कर दिया, शत्रुओं का नाश कर दिया और

अकेले व्यक्ति ने पूरी लंका को जला दिया। पूँछ में रावण को बाँधकर सिंहासन से गिरा दिया। जहाँ उस रावण के सैकड़ों मंत्री, सेनापति सभी थे। और उसने रावण से कहा – मैं राम का सेवक हूँ, शिष्य हूँ और तुम मेरा कुछ बिगाड़ ही नहीं सकते क्योंकि मेरे हृदय में राम स्थापित हैं, वह बल, बुद्धि, साहस, चतुराई मुझमें हैं।

और रावण को भी इस बात को स्वीकार करना पड़ता है कि तंत्र से भी कोई ऊँची चीज है, तो शिष्यत्व है। मंत्र से भी कोई ऊँची चीज है तो शिष्यत्व है क्योंकि उसमें तत्परता है। तत्परता को शिष्य कहते हैं। शिष्य का अर्थ है, जो निरंतर करता है, और करता है गुरु के लिए, यह शिष्य गुरु का संबंध सबसे ज्यादा पवित्र है। यही सबसे ज्यादा आँखों में आँसू लाने वाला संबंध है। जब भी मैं गुरु को स्मरण करता हूँ तो एकदम आँसू बाहर आने के लिए उद्यत हो जाते हैं और दूसरे क्षण मैं अपने आपको रोकने की कोशिश करता हूँ कि शिष्य क्या सोचेंगे? और मैं मर्यादा में बँधा हुआ अपने आपको रोक लेता हूँ। मेरे मन में एक ही चीज गूँजती है कि कब वह क्षण आएगा जब मैं गुरु के चरणों में पहुँच जाऊँगा, उनकी सेवा करूँगा, उनके चरणों को सहलाऊँगा,उनकी बात सुनूँगा। ऐसा क्षण मेरे भाग्य में कब आएगा? कहाँ मैं उलझा हुआ हूँ? क्या कर रहा हूँ? यह जीवन मेरे क्या काम आएगा? यह मकान, यह वैभव, यह धन, यह सुख, यह सौभाग्य, ये गाड़ियां – ये मेरे क्या काम की हैं?

आज मैं आठ फीट की गाड़ी मैं कैद हो गया हूँ, मैं तो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़, हजारों मील, घूमता था, वह ज्यादा श्रेयस्कर था। आज मुझे आठ फीट की गाड़ी में कैद कर दिया गया है, एक बीस फुट के मकान में कैद कर दिया गया है, और कहाँ मैं पूरे हिमालय में विचरण करता था। आज मैं एक कैदी बन कर रह गया हूँ। यह कैसा मेरा दुर्भाग्य है? मैं शिष्य तो हूँ पर शिष्यत्व कर नहीं पा रहा हूँ, उस आनंद को नहीं ले पा रहा हूँ। वह जीवन का श्रेष्ठतम आनंद है, यह मेरे जीवन की न्यूनता है और मैं अपने गुरुदेव को कहता भी हूँ कि आपने मुझे कहाँ धकेल रखा है? बहुत हो गया, जो मुझे काम करना था कर लिया, अब आप और किसी योगी या संन्यासी को भेज दें, मैं आपके चरणों में रहना चाहता हूँ कुछ और ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। और आधे घंटे तक मैं प्रार्थना करता हूँ तो भी वे यही कहते हैं – नहीं निखिल! तुम्हें वहीं काम करना है।

शायद उनके मन में कोई और तथ्य होगा। यह उनकी श्रेष्ठता है कि वे मेरे माध्यम से कुछ कार्य करा रहे हैं। पर यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उनके चरणों में रहकर उनकी सेवा नहीं कर पा रहा हूँ। यह छटपटाहट है, वेदना है, यह बेचैनी है – इस बेचैनी को मैं ही समझ सकता हूँ और कोई नहीं समझ सकता। उनकी आज्ञा पालन करना मेरा धर्म और कर्त्तव्य है। मुझे आग में जलना पड़ा तो भी जलता ही रहूँगा। और मेरी विनय को उनको सुनना ही पड़ेगा। हर बार मैं कहता हूँ कि बहुत हो गया।

कभी आपके मन में करुणा व्याप्त होनी चाहिए कि वह आदमी बहुत जल चुका – आलोचनाओं से, विपत्तियों से, उन शिष्यों की न्यूनताओं से, घटियापन से। मैं शिष्य रहा हूँ और मैंने देखा है और मैंने शिष्यों का घटियापन भी देखा है और मेरा मन कचोट करके रह जाता

है कि मैं इनको कैसे समझाऊँगा? और शिष्यों के घटियापन को देखता हूँ तो मन टूट कर, बिखर कर रह जाता है और मन इतना बेचैन हो जाता है कि मैं सोचता हूँ, मुझे यहाँ से उठकर चल देना चाहिए।

यह भाव मैं गुरुदेव के आगे रखता भी हूँ और आधे पौने घंटा सुनने के बाद वे कहते हैं, तुम्हें अभी वहीं काम करना है। और मैं मन मार कर वापस आप लोगों के बीच आ जाता हूँ जबकि मैं सदा अपने गुरुदेव के साथ रहना चाहता हूँ।

और यही बात हनुमान कहते हैं मैं एक क्षण भी राम से अलग रहना नहीं चाहता। वे अयोध्या में रहें तो मैं अयोध्या में रहूँ, वे जंगल में रहें तो मैं जंगल में रहूँ। अगर उन्होंने कहा है कि सीता की सुधि लानी है तो मुझे लानी है, चाहे कहीं भी हो संसार में। राम ने ऐसी कोई आज्ञा दी नहीं थी कि तुम्हें लंका जाना है, अशोक वाटिका को उजाड़ना है यालंका को जलाना है। यह तो हनुमान की चतुराई थी। राम ने तो केवल काम सौंपा था कि तुम्हें यह काम करना है। हनुमान ने कहा – आप कहें तो सीता को ले आऊँ।

राम ने कहा – तुम्हें यह काम नहीं करना है, तुम्हें केवल यह मुद्रिका देनी है, और सीता की निशानी लानी है। यह मैं समझता हूँ कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ।

हनुमान ने कहा कि गुरु आज्ञा दें तो शिष्य तत्पर रहे। प्रमाद रहित और आलस्य से रहित होकर के निरंतर एक ही आज्ञा के पालन के लिए तत्पर हो जाना और पूर्ण रूप से हृदय में गुरुत्व को स्थापित कर देना, यह शिष्य का धर्म और कर्तव्य है। जब गुरु हृदय में स्थापित होगा तो मन में कुटिलताएं नहीं पैदा होंगी फिर मन में छल नहीं पैदा होगा, पाखंड पैदा नहीं होगा।

और अगर आपके मन में पाखंड और छल है तो फिर आप शिष्य भी नहीं है। शिष्य हैं तो आपको फिर छल, धूर्तता से ऊपर उठना होगा। मैं तो आपको उस जगह पहुँचाना चाहता हूँ जो साधना की उच्चतम भूमि है। उन साधनाओं को आपको देकर मैं वहाँ आपको पहुँचा देना चाहता हूँ जो कि उच्चतम और श्रेष्ठतम स्थिति है। शिष्यों को मैं उस ऊंचाई पर पहुँचाना चाहता हूँ, जहाँ से वे सिद्धाश्रम पहुँच सके, जहाँ पर वे जीवन के आनंद को प्राप्त कर सकें। मैं चाहता हूँ कि एक छलांग से शिष्यों को वहाँ तक पहुँचा दूँगा। मैं इसमें निरंतर प्रयत्नरत हूँ।

मैं कोई आप से सेवा नहीं चाहता हूँ। सेवा चाहता तो पाँच-पाँच सौ के दस बारह नौकर रख लूँगा। मेरा कार्य चलता रहेगा। प्रश्न यह नहीं है। प्रश्न यह है कि आप मेरे पास हैं तो मैं आपको क्या दे पाया। . . .और दे तब पाऊँगा जब आप हृदय में गुरुत्व को धारण करेंगे।

और हनुमान कहते हैं कि जब हृदय में गुरु स्थापित होते हैं तो फिर कोई कार्य असंभव रहता ही नहीं। फिर ६०० घंटों का काम शिष्य २४ घंटों में कर लेता हैं मगर यह तब हो सकता है जब शिष्य आलस्य, प्रमाद से रहित हो और उसके हृदय में गुरु स्थापित हों।

अगर बड़ी सितार के पास छोटी सितार रख दें और बड़ी सितार को बजावें, तो छोटी सितार अपने आप झंकृत हो जाती है, यदि बड़े कुण्ड में अमृत भरा हुआ हो और पास में ही छोटा कुण्ड बना दिया जाए तो अन्दर ही अन्दर सिंचित होकर छोटा कुण्ड भी लबालब भर जाता है।

ठीक इसी प्रकार यदि शिष्य गुरु साधना को ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मान कर पूरी तरह से उस साधना में उतर जाता है तो गुरु के पास जितनी सिद्धियां होती हैं, जितनी साधनाएं होती हैं, जितनी यौगिक क्रियाएं होती हैं, वे स्वतः ही शिष्य के शरीर में उतर जाती हैं, उसे कुछ भी करने की जरूरत नहीं होती। लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि शिष्य अपने अस्तित्व को समाप्त कर दे। स्व का विसर्जन कर दे, अपना नाम, पद, श्रेष्ठता के भावों को तिरोहित कर दे। विनम्रता से गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करे। जहाँ घमण्ड है वहां शिष्यता नहीं है।

हनुमान ने कहा – राम! आप मेरे गुरु हैं, जीवन का प्रत्येक क्षण आपको समर्पित है। . . .और आप मुझे एक वरदान दें। कभी भी आप मुझे गुरु नहीं बनाएं। कभी ऐसी आज्ञा नहीं दें कि मैं उन वानरों के बीच जाकर गुरु बनूँ और प्रवचन दूँ। चाहे मैं कितना ही ज्ञानवान हूँ, गुणों का सागर हूँ मगर मैं आपके चरणों में ही जीवन की आखिरी सांस लेना चाहता हूँ क्योंकि यह मेरे जीवन का अद्वितीय आनंद है।

जब राम अयोध्या वापस लौटे पुष्पक विमान से तो सरयू के किनारे उतरे जहाँ भरत तपस्या कर रहा था। भरत से मिले और जो वानर सेना साथ आई थी उन सबसे कहा कि तुम वापस जाओ हनुमान तुम भी जाओ। . . . तो हनुमान ने कहा – मैं सरयू में कूद कर प्राण त्याग सकता हूँ पर आपको नहीं छोड़ सकता। यह मेरे लिए संभव नहीं है। जहाँ आप हैं वहाँ मैं हूँ। मैं रहूंगा आपके चरणों में ही हर क्षण। एक भी क्षण ऐसा नहीं होगा कि आपको तकलीफ हो जाए और तकलीफ हो जायेगी तो उससे पहले हनुमान मर जाएगा, कट जाएगा। मैं ऐसा कलंक अपने सिर पर नहीं लेना चाहता हूँ, क्योंकि मैंने आपको गुरु धारण किया है।

हनुमान कहते हैं कि शिष्य बनना जीवन का श्रेष्ठतम आनंद है, एक अपूर्व मस्ती है यदि उसके हृदय में गुरु स्थापित हैं और हनुमान ने सीना फाड़कर सबको दिखा दिया कि देख लो, कोई विकार, कोई छल, कोई कपट नहीं है मेरे सीने में, हैं तो केवल गुरु स्थापित हैं। और जब वो स्थापित हैं तो कुछ न्यूनता नहीं रह सकती।

इतनी उच्चकोटि की भाव भूमि पर जब शिष्य पहुँचता है, जब उसके मन में चौबीस घंटे चिंतन रहता है कि यह जो कार्य गुरु ने सौपा है यह कोई उनका कार्य नहीं है। यह कार्य वे किस प्रयोजन से कर रहे हैं यह समझने की बात है और गुरु इसलिए कार्य सौंपते है कि वे चारों योनियों को समाप्त कर देना चाहते हैं।

मैं भी नहीं चाहता कि मेरे किसी शिष्य को चारों में से किसी योनी में जन्म लेना पड़े। मैं नहीं चाहता कि संसार में आपको उलझना पड़े। हनुमान भी चाहते तो शादी कर सकते थे, संतान पैदा कर सकते थे। उन्होंने सोचा, ऐसे तो शिष्यत्व धर्म समाप्त हो जाएगा मेरा। ये तो जीवन के बंधन हैं, जीवन में एक ही बंचन रहे . . . –

गुरुत्वं त्वमेवं,
गुरुत्वं त्वमेवं।

हे गुरुदेव! तुम हो और तुम्हारे मेरे बीच हवा भी पार नहीं हो पाए, इतने हम एक दूसरे से जुड़ जाएं। इतने जब प्राणों से जुड़ जाएं तो गुरु शिष्य का संबंध होता है।

शिष्य का अर्थ है मस्ती, शिष्य का अर्थ है आनंद, शिष्य का अर्थ है उंचाई, शिष्य का अर्थ है श्रेष्ठता और शिष्य का अर्थ है पूर्ण समर्पण। . . .और गुरु का अर्थ है तनाव झेलना क्योंकि शिष्य को कहाँ पहुँचाना है यह तनाव उसे होता है।

आप सही अर्थों में शिष्य बन पाएं और हनुमान की तरह गुरु को हृदय में स्थापित करते हुये जीवन का पूर्ण आनंद प्राप्त कर पाएं, ऐसा ही मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूँ, कल्याण कामना करता हूँ –

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

परामबा माँ जगतजननी माँ भुवनेश्वरी दस महाविद्याओं में से एक है तथा अपने साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने में समर्थ हैं। माँ भुवनेश्वरी की साधना से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है, समस्त विद्याओं में श्रेष्ठता प्राप्त होती है, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। दरिद्रता का नाश होकर सौभाग्य का हृदय होता है तथा शत्रुओं, विरोधियों व समस्त प्रकार की विपरीत परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होती है। मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित भुवनेश्वरी यंत्र में भगवती भुवनेश्वरी की समस्त शक्तियाँ समाहित होती हैं, जिसके स्थापन पश्चात्, यदि इस पर भुवनेश्वरी मंत्र 'ह्रीं' का जप किया जाए तो साधक को माँ भुवनेश्वरी की तत्काल कृपा प्राप्त होने लगती है। 'मंत्र महार्णव' में तो यह भी कहा गया है कि जिस घर में भुवनेश्वरी यंत्र स्थापित होता है, वह घर स्वर्ग के समान होता है।

भुवनेश्वरी यंत्र

विधान

मंत्र : ह्रीं

आने वाले किसी भी बुधवार को इस यंत्र को ताम्र प्लेट में पीला कपड़ा बिछाकर उस पर स्थापित करें। फिर अक्षत, कुंकुम, पुष्प, धूप से पूजन करें एवं दूध से बना प्रसाद अर्पित करें और फिर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक मंत्र जप 30 दिनों तक करें। फिर यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

जीवन में अनेक ऐसे क्षण आते रहते हैं, जब हमें यह अनुभव होता है, कि काश हमें अपने श्रेष्ठजनों का आशीर्वाद प्राप्त होता...

.....और ऐसे अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं, जब श्रेष्ठजनों की कृपा प्राप्त कर स्वयं को और अधिक दृढ़ अनुभव करते हैं। हमारी यह दृढ़ता तब और भी अधिक दृढ़ हो जाती है जब हमारे ऊपर गुरु कृपा हो जाएं, क्योंकि किसी भी साधक के लिए, शिष्य के लिए गुरु कृपा से बढ़कर कोई कृपा नहीं है।

गुरु कृपा प्राप्ति के लिए

माह की 21 तारीख को या किसी भी गुरुवार को साधक प्रातः पीला वस्त्र बिछाकर चावल की ढेरी पर 'सिद्धाश्रम गुटिका' स्थापित करें फिर पीले पुष्पों से पूजन करें। दीपक जलायें एवं गुरु माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें। फिर मंत्र जप की समाप्ति के बाद उसे धारण कर लें -

ॐ गुरुत्वं देवत्वं पूर्ण चैतन्यं दर्शय दर्शाय ॐ

OM GURUTVAM DEVATVAM POORNA
CHEITANYAM DARSHAY DARSHAAY OM

साधक को चाहिए कि नित्य पूजन में उपरोक्त मंत्र का 11 बाद उच्चारण करें, फिर चालीस दिनों तक गुटिका को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

सिद्धाश्रम गुटिका : 150/-
गुरु माला : 300/-

लक्ष्मी तंत्र में बताया गया है, कि स्वयं कुबेर ने इस साधना के माध्यम से लक्ष्मी को अनकूल बनाया था।

महर्षि विश्वामित्र ने अक्षय तृतीया के अवसर पर लक्ष्मी को पूर्णता के साथ प्रत्यक्ष प्रगट किया था, स्वयं गोरखनाथ ने एक स्थान पर कहा है, भले ही अन्य सारे प्रयोग असफल हो जायें, भले ही साधक नया हो, भले ही उसे स्पष्ट मंत्रों का उच्चारण ज्ञात न हो या उसे पूजा पद्धति की जानकारी न हो, परन्तु यदि अक्षय तृतीया के अवसर पर इस अक्षय लक्ष्मी साधना को सम्पन्न करता है, तो उसे जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण अनुकूलता एवं लाभ प्राप्त होता है। इसलिए तो साधक अक्षय तृतीया की प्रतीक्षा करते रहते हैं। राजस्थान और गुजरात में तो अक्षय तृतीया को श्रेष्ठ मुहूर्त मान लिया जाता है, और वे यह मानते हैं कि अक्षय तृतीया के लिये किसी मुहूर्त, योग या ज्योतिष की आवश्यकता नहीं होती, इस दिन जो भी प्रयोग किया जाता है वह अपने आप में पूर्ण सफल होता है और इसलिए अक्षय तृतीया के दिन बिना मुहूर्त देखे ही सैकड़ों विवाह सम्पन्न होते हैं।

अक्षय लक्ष्मी साधना

इस वर्ष अक्षय तृतीया 14.5.21 को सम्पन्न हो रही है,

अत: यह अक्षय लक्ष्मी साधना इस दिवस पर अवश्य सम्पन्न की जानी चाहिए, यह रात्रिकालीन साधना है, यह अचूक साधना है और यह सफलतायुक्त साधना है।

साधना समय

शास्त्रों में बताया गया है कि यों तो यह प्रयोग अक्षय तृतीया को ही सम्पन्न किया जाना चाहिए, परन्तु यदि किसी कारणवश अक्षय तृतिया को यह प्रयोग सम्पन्न न हो सके तो किसी भी अमावस्या की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, और इसका अनुकूल फल प्राप्त किया जा सकता है।

साधना सामग्री

इसके लिए कोई विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती। निम्न वस्तुओं की जरूरत होती है – **1. अक्षय लक्ष्मी चित्र, 2. भगवती अक्षय लक्ष्मी महायंत्र - जो इंद्रकृत विधि से सिद्ध और चैतन्य हो, 3. कमलगट्टे की माला, 4. तांत्रोक्त नारियल।**

इसके अलावा जल पात्र, केसर, चावल, नारियल, दूध का बना हुआ प्रसाद, फल, शुद्ध घृत का दीपक आदि की व्यवस्था भी पहले से ही कर लेनी चाहिए।

साधना प्रयोग

अक्षय तृतीया की रात्रि को अर्थात् इस वर्ष 14.5.21 की रात्रि को कोई भी साधक अकेले या अपनी पत्नी के साथ साधना सम्पन्न कर सकता है, रात्रि का तात्पर्य सूर्यास्त से सूर्योदय तक होता है।

इससे सम्बन्धित विशिष्ट सामग्री पहले से ही मंगा कर रख लेनी चाहिए जिससे कि समय पर इसका उपयोग किया जा सके, इसमें अक्षय लक्ष्मी महायंत्र अपने आप में अद्वितीय होता है, क्योंकि इसे विशेष रूप से सिद्ध और चैतन्य किया जाता है। इस यंत्र पर लक्ष्मी के सभी रूपों की पूजा एक साथ हो जाती है, क्योंकि इसमें योगी मत्स्येन्द्र नाथ ने लक्ष्मी के जिन-जिन रूपों की व्याख्या की है, उन सभी के मंत्रों से इसे सिद्ध और चैतन्य बनाया जाता है।

सामने पात्र में त्रिगंध से स्वस्तिक का चिह्न बना कर उस पर महायंत्र को स्थापित कर दें और इस महायंत्र पर नौ स्थानों पर त्रिगंध से बिन्दियां लगावें और फिर यंत्र के सामने नौ गुलाब के पुष्प या किसी भी प्रकार के पुष्प समर्पित करें। इसके साथ ही **तांत्रोक्त नारियल** स्थापित करके तिलक करें।

फिर सामने दूध का बना हुआ प्रसाद का भोग लगावें, नारियल को स्थापित करें और फल, दक्षिणा आदि समर्पित करें।

इसके बाद यंत्र के आगे शुद्ध घृत के छोटे-छोटे नौ दीपक लगावें, जिनका मुंह साधक की ओर हो। इसके बाद साधक निम्न मंत्र की नौ माला मंत्र जप करे, यह मन्त्र भले ही छोटा सा दिखाई दे, पर यह बीज रूपेण होने की वजह से अपने आप में ही सिद्ध और अलौकिक है, इसमें कमलगट्टे की माला का ही प्रयोग किया जा सकता है, इसके अलावा अन्य किसी भी माला का प्रयोग न करें और **यदि कमलगट्टे की माला पहले किसी अन्य प्रयोग में उपयोग की हुई है, तो उस माला का भी प्रयोग वर्जित है।**

अक्षय महालक्ष्मी मन्त्र

।। ॐ ऐं ऐं अक्षय लक्ष्मी ऐं ऐं नमः ।।

जब नौ माला मन्त्र जप हो जाए, तब सामने किसी पात्र में अग्नि लगा कर घृत और कमलगट्टे से 101 आहुतियाँ उपरोक्त मन्त्र से ही दें, इसमें एक चम्मच में शुद्ध घृत तथा एक कमल का बीज अर्थात् कमलगट्टा लेकर उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण कर अग्नि में समर्पित कर दें, आप चाहे तो आपने **जिस माला से मन्त्र जप सम्पन्न किया है, उसी कमलगट्टे का प्रयोग इस यज्ञ में कर सकते हैं अथवा पहले से ही एक कमलगट्टे की अन्य माला या 101 कमल बीजों को प्राप्त कर उनका प्रयोग कर सकते हैं।**

जब यह हवन सम्पन्न हो जाय, तब साधक को चाहिए, कि कपूर से भगवती लक्ष्मी की आरती पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न करें।

आरती के बाद साधक सामने रखे हुए प्रसाद को पूरे घर के सदस्यों में वितरित करें और भक्ति भाव से अक्षय महालक्ष्मी महायंत्र को प्रणाम करें और उसे घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें एवं तांत्रोक्त नारियल रात्रि में ही किसी चौराहे पर या किसी मन्दिर में जाकर रख दें।

वास्तव में ही यह दुर्लभ और अद्वितीय साधना है, जिसे प्रत्येक साधक को सम्पन्न करनी ही चाहिए।

न्यौछावर - 600/-

श्यामलांगी साधना

रस विलास की एकमात्र साधना है

मातंगी महाविद्या

दस महाविद्या स्वरूपों में देवी का एक स्वरूप है भगवती मातंगी। जो स्वरूप है सुख, आनन्द और विलास का... जीवन के रस प्रधान तत्वों का पूर्ण रूप से जागरण सम्भव है तो मातंगी उपासना से ही, क्योंकि रस-विलास भी तो जीवन की एक मूलभूत स्थिति है....

भगवान शिव का ही एक नाम मतंग भी है और ऐसे मतंग स्वरूप शिव की शक्ति है भगवती मातंगी।

विलास जीवन का हो या वाणी का, विलास के अभाव में जीवन का कोई अर्थ ही नहीं क्योंकि विलास ही जीवन का सौन्दर्य है।

विलास का तात्पर्य है जीवन की समस्त कलाओं के प्रति रसमय होने की मानसिकता प्राप्त करना, क्योंकि जीवन में केवल ज्ञान ही पर्याप्त नहीं, यदि धन आवश्यक है तो उसके साथ आनन्द भी परम आवश्यक है।

देवी के उग्र स्वरूपों की आराधना भी अपूर्ण है यदि हृदय में मातंगी का विलास नहीं है। गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने में तो मातंगी साधना की कोई समता ही नहीं और मातंगी ही वाणी-विलास की भी देवी है।

एक रूप में इनको मतंग मुनि की कन्या माना गया है और इसी कारणवश उन्हें मातंगी कहा गया है। श्याम स्वरूपा मातंगी का रूप तो प्रत्येक देवी से निराला, मां भगवती जगदम्बा के सामान्य सभी स्वरूपों से अलग, न गौरवर्णीय, न महाकाली के समान कृष्ण वर्णीय अपितु श्याम वर्णीय यह देवी सौन्दर्य और परिष्कृत भावनाओं की साकार प्रतिमूर्ति ही तो है।

माणिक्य में निर्मित वीणा को बजाती हुई आह्लादित करने वाली, माधुर्य युक्त शब्द ध्वनित करने वाली, इन्द्रनील मणि के समान कोमल अंगों वाली मतंग ऋषि की कन्या देवी मातंगी का मैं मानसिक स्मरण करता हूं।

मातंगी को वाणी-विलास की देवी मानने के उपरोक्त ध्यान में ही छुपा है एक रहस्य जो वास्तव में किसी भी पुरुष या स्त्री के जीवन की सम्पूर्णता का रहस्य है। भारतीय साधना पद्धति में वाक् को ही शक्ति कहा गया है। वाक् को ही आत्मविद्या माना गया है और सच भी तो है कि केवल उसके पास वाक्-सिद्धि हो सकती है जो जीवन में प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण हो। वाक् पुष्टि, आत्मविश्वास का ही तो दूसरा रूप है मातंगी वास्तव में जीवन की ऐसी परिपूर्णता प्रदान करने की आधारभूत देवी है।

इस युग की प्रवृत्तियों और भावनाओं के कारण दस महाविद्या साधनाओं में केवल बगलामुखी या तारा महाविद्या को प्रधानता दी गयी, क्योंकि अधिकांश व्यक्ति जीवन में या तो शत्रुओं से पीड़ित हैं या तो धन के अभाव से खिन्न, लेकिन इसके उपरान्त भी जीवन की इन आवश्यक स्थितियों के निराकरण करने के पश्चात् जीवन को एक सुललित भावना और कोमलता भी प्रदान करनी ही चाहिए। साधकों ने इस पक्ष पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया और इसी कारणवश मातंगी महाविद्या की साधना अतिमहत्वपूर्ण होते हुए भी प्रचलन में नहीं आ सकी।

देवी का प्रत्येक स्वरूप अपने आप में किसी एक प्रमुखता के साथ सम्पूर्ण होता है। ऐसा नहीं कि व्यक्ति मातंगी की साधना करे और उसके

जीवन में अभाव रह जाए। मातंगी एक ओर सुललित और कोमल है, श्यामांगी और सुप्रिया है, फिर वहीं अपने उग्रमय स्वरूप में चाण्डाली भी हैं। मातंगी का ही एक नाम उच्छिष्ट चाण्डाली भी है क्योंकि वह अपने संग शिव का चाण्डाल रूप भी समाहित किए है, इसी कारण यह सहज रूप से विघ्नहर्त्री भी हैं और सत्य ही तो है कि जहां एक ओर ऐसा निवारक स्वरूप होगा वहीं तो जीवन के सौन्दर्य की स्थितियाँ भी निर्मित हो सकेंगी।

मातंगी साधना स्पष्ट शब्दों में पूर्ण पौरुष की साधना है। दस महाविद्याओं में और कोई ऐसी साधना है ही नहीं कि व्यक्ति उसे सम्पन्न करे और पूर्ण पौरुषता प्राप्त करे, किंतु मातंगी एक मात्र ऐसी महाविद्या साधना है जिसको सम्पन्न कर व्यक्ति यदि पौरुषहीन भी हो गया हो तो पुनः पूर्ण क्षमतावान, सौन्दर्यवान सुदृढ़ पुरुष बन सकता है, आत्मविश्वास से भरा हुआ और सभी कला पक्षों को अपने-आप में समाहित करता हुआ। महर्षि विश्वामित्र ने शोधपूर्वक ऐसा उपाय प्राप्त किया जिसके द्वारा एक सामान्य साधक भी इसके द्वारा अनुकूल लाभ प्राप्त कर सकता है और उन्होंने इसी महाविद्या पर आधारित एक सफल प्रयोग वर्णित किया जिसे कम पढ़ा-लिखा साधक भी अपने जीवन में उतार सकता है भले ही वह महाविद्या साधना न सिद्ध करे किंतु अनुकूलता तो प्राप्त कर ही सकता है।

जीवन की कई स्थितियाँ ऐसी होती हैं जहां व्यक्ति लज्जावश अथवा मर्यादावश खुलकर कुछ नहीं कह सकता और व्यक्ति के यौन जीवन से संबंधित सभी पक्ष इसी श्रेणी में आते हैं, कैसा भी, कोई भी पक्ष हो या कैसी भी, कोई भी दुर्बलता हो, व्यक्ति अपने कष्ट को कागज पर साफ-साफ लिखकर यंत्र के सामने रखकर यदि इस साधना को सम्पन्न करता है तो निश्चित रूप से उसे अनुकूलता

प्राप्त होती है और यदि इस प्रयोग को व्यक्ति आगे भी नियमपूर्वक करता रहता है तो मातंगी महाविद्या की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

मातंगी महाविद्या की सिद्धि का अर्थ है कि व्यक्ति केवल नगर या क्षेत्र का ही नहीं वरन देश का प्रख्यात वक्ता बन जाता है। साक्षात् सरस्वती उसके जिह्वा पर विराजमान हो जाती है उसे ऐसी अद्भुत शक्ति मिल जाती है कि उसकी बातों को घंटों-घंटों लोग मुग्ध होकर सुनते ही रह जाते हैं और शक्तियामल तंत्र में यहाँ तक वर्णन किया गया है कि भगवती मातंगी के सिद्ध साधक का कहा वचन मिथ्या हो ही नहीं सकता यदि समस्त परिस्थितियाँ प्रतिकूल भी हों तब भी प्रकृति बाध्य हो जाती है ऐसे साधक के वचन को सार्थक करने के लिए। एक प्रकार से उसे वरदान देने की और श्राप देने की शक्ति मिल जाती है। उसके चेहरे पर एक अनोखा लावण्य खिल उठता है फिर चाहे वह गोरा हो अथवा सांवला, कद-काठी कैसी भी हो लेकिन सामने वाला उसको ठिठक कर देखने के लिए बाध्य हो ही जाता है क्योंकि मातंगी का स्वरूप भी तो अपने-आप में अपूर्व लावण्य एवं ऐसी मोहकता से भरा है।

कहते हैं कि मातंगी मंत्र का नित्य एक बार उच्चारण अथवा स्मरण मात्र कर लेने से ही उस दिन के समस्त पापों का क्षय हो जाता है। जो भी साधक तंत्र के क्षेत्र में जाकर विशिष्ट शक्तियों को हस्तगत करना चाहते हैं, वे ऐसी साधनाओं में प्रवृत्त होने के पूर्व महाविद्या मातंगी से संबंधित प्रयोग अथवा पूर्ण मातंगी साधना अवश्य ही सम्पन्न करते हैं, जिससे वे वचनसिद्ध अपूर्व तेज व सौन्दर्य से भरकर तंत्र में सहज ही सफल हो सकें।

भगवती मातंगी की यह विद्या विशिष्टतम होने के कारण प्राय: गोपनीय ही रही किंतु विश्वामित्र ने सर्वप्रथम इसको सभी साधकों के लिए सुलभ किया।

यौवन, बल, ताजगी और दिन-प्रतिदिन के एक ढर्रे में बंधे जीवन का एक परिवर्तन संभव हो पाता तो मातंगी देवी की कृपा से और फिर उसी जीवन में सहज ही व्यक्ति को ऐसी सरसता और आनंद प्राप्त होने लगता है, ऐसा नवीन सृजन होने लगता है कि व्यक्ति अचम्भित हो जाता है एक प्रकार से उसके मन पर पड़े अनावश्यक बोझ हट जाते हैं और वह जीवन का सौन्दर्य निहारने में

समर्थ हो पाता है। मातंगी की साधना से यह अवश्य होता है कि व्यक्ति के अंदर आनंद का सोता सा फूट पड़ता है जिससे सहज ही बसन्त ऋतु जैसा वातावरण उसके तन-मन पर छा जाता है।

विधान

प्रात: साधक उठकर भगवान सूर्य को प्रणाम करे, अर्घ्य दे यदि उसे संध्या विधि का ज्ञान हो तो संध्या सम्पन्न करे अथवा गायत्री मंत्र का एक माला मंत्र जप करे। इसके बाद पहले से ही प्राप्त किए हुए मातंगी महायंत्र को किसी श्रेष्ठ धातु के पात्र में स्थापित कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे, पात्र के अभाव में पुष्प की पंखुड़ियों पर भी यंत्र स्थापित किया जा सकता है।

मातंगी यंत्र का ही इसमें सर्वाधिक महत्त्व है जो महर्षि विश्वामित्र प्रणीत नर्वाण मंत्रों से सिक्त हो ऐसे यंत्र के चारों ओर चार क्लीं बीज स्थापित करें। जो पूर्ण पौरुष प्रदायक अनंग प्रयोग से सिद्ध हो यदि आपको मातंगी देवी का प्राण प्रतिष्ठित चित्र मिल सके तो उसे मढ़वा कर साधना स्थान में अवश्य स्थापित करें।

गणपति पूजन एवं गुरु पूजन के बाद क्रमश: एक माला गणपति मंत्र व पांच माला गुरु मंत्र का जप करें–

मंत्र

ॐ गं गणपतये नम:

तथा सभी यंत्र चित्रों का पूजन कुंकुम अक्षत, पुष्प आदि से करने के बाद मातंगी के मूल मंत्र का पांच माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ ह्रीं क्लीं हुं मातंग्यै फट् स्वाहा।।

प्रथम दिन 5 माला मंत्र जप करना आवश्यक है, उसके पश्चात् अगले माह तक प्रतिदिन केवल 1 माला मंत्र जप ही पर्याप्त है।

यदि साधक इस बीच में कहीं बाहर जाता है तो केवल अपने साथ मातंगी महायंत्र एवं रसेश्वरी माला ही ले जाए, चारों क्लीं बीज यंत्रों को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दे तथा जब भी अवसर मिले प्रतिदिन केवल एक माला मंत्र जप कर ले। इसमें समय का बंधन नहीं है। तीस दिनों तक नियमित यह क्रम करने के बाद साधक चारों क्लीं बीजों को किसी हरे और फले-फूले खेत अथवा उद्यान में चुपचाप फेंक दे तथा शिव मंदिर में कुछ भेंट चढ़ा दे। इस प्रकार से यह साधना सम्पूर्ण होती है। मातंगी महायंत्र को साधक अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दे और रसेश्वरी माला को निरन्तर अपने गले में धारण किए रहे। रूप, रस, विलास, भोग और कायाकल्प की यह एकमात्र व अनूठी महाविद्या साधना है।

साधना सामग्री- 510/-

तारा शक्ति स्तोत्र

हम अपने मुंह से जो शब्द निकालते हैं, वह वायुमण्डल में गुंजरित रहता है, क्योंकि इस वायुमंडल से उत्पन्न ध्वनि कभी भी समाप्त नहीं होती। इसीलिये आज वैज्ञानिक इस बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि यदि ध्वनि समाप्त नहीं होती, वह शाश्वत रहती है तो श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवाद तथा वह ध्वनि भी वायुमंडल में ही गतिशील होगी। यदि ध्वनि की उस वेव को पकड़ा जा सके तो उस संवाद को भी सुना जा सकता है।

इसीलिये जब हम किसी विशेष देवता को प्रसन्न करने के लिए तथा मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिए स्तोत्र पाठ करते हैं तो उस शब्द संयोजन से एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है जो इस जगत में स्थित सम्बन्धित देवताओं की भावनाओं को उद्वेलित या आन्दोलित करता है और देवता उस प्रभाव से हमारे अनुकूल होकर हमें मनोवांछित फल देने में सहायक हो जाते हैं।

तारा साधना के विषय में कहा गया है कि जो साधक जीवन में अतुलनीय उन्नति करना चाहता है उसे अवश्य एक बार यह साधना सम्पन्न करीन चाहिए। बुद्धि, ज्ञान, शक्ति, विजय तथा पूर्णत्व प्राप्ति हेतु तथा अकाल मृत्यु एवं दुर्घटना निवारण हेतु यह साधना लक्षित की जाती है। सबसे बड़ी बात यह कि आकस्मिक धन प्राप्ति एवं अतुलनीय व्यापार वृद्धि हेतु इस साधना से उत्तम उपाय दूसरा नहीं।

मुण्डमाला तंत्र में तारिणीशतनाम स्तोत्र है। इसमें तारा के विभिन्न रूपों की चर्चा है। उपासना के प्रसंग में उनकी महिमा का गायन है। साधना सम्पन्न कर इस स्तोत्र का पाठ करें–

स्तोत्र

तारिणी तरला तन्वी तारा तरुण वल्लरी।
तीर रूपा तरश्यामा तनुक्षीण पयोधरा।।
तुरीया तरला तीव्र गमना नीलवाहिनी।
उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेक जटाशिवा।।
तरुणी शाम्भवी छिन्नमाला च भद्रतारिणी।
उग्रा चोग्रप्रभा नीला कृष्णा नील सरस्वती।।
द्वितीया शोभिनी नित्य नवीना नित्य नूतना।
चण्डिका विजयाराध्य देवी गगन वाहिनी।।
अट्टहास्या करालास्या चरास्या दितिपूजिता।
सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्र देव पूजिता।।
रक्त प्रिया च रक्ताक्षी रुधिरासवभूषिता।
बलिप्रिया बलिरता दुर्गा बलवती बला।।
बलप्रिया बलरता बलराम प्रपूजिता।
अर्द्धकेशेश्वरी केशा केशवेश विभूषिता।।
पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिता।
दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणेतरा।।
वज्रपुष्प प्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता।
माहेश्वरी महादेवप्रिया पद्मविभूषिता।।
इड़ा च पिंगला चैव सुषुम्ना प्राणरूपिणी।
गांधारी पंचमी पंचाननादि परिपूजिता।।
इत्येतत् कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम्।
श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः।।
यः इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुति रहस्यकम्।
सर्वसिद्धि युतो भूत्वा विहरेत क्षितिमंडले।।
तस्मैवं मंत्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा।
भवत्येवं महाभागे सत्यं सत्यं न संशयः।।
मन्दे मङ्गलवारे च यः पठेन्निशि संयतः।
तस्मैव मंत्रसिद्धिः स्मादगानयत्नं लभेत्तुसः।।
श्रद्धयाऽनद्धया वापि पठेन्ताराहस्यकम्।
अचिरनैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत।।
सहस्रावर्त्तनाद्देवी पुरश्चर्या फलं लभेत।
एवं सतत युक्ता ये ध्यायन्तस्त्वामुपासते।
ते शिवो भवेत सहस्रावर्त्तनाद्देविपुरश्चर्याफलं लभेत।।

तारा शक्ति स्तोत्र

जो साधक इस स्तोत्र का पुरुश्चरण करता है, वह शिव स्वरूप को प्राप्त करके जीवनमुक्त हो जाता है।

भगवती तारा अपने भक्तों को भवसागर से पार कराने वाली है। चंचला, सुन्दर अंगों वाली यौवन से भरपूर, सब को सहारा देने वाली, अत्यन्त सौम्यमयी, सुन्दर और सुखद सर्वांगों से युक्त है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

मोक्ष स्वरूपा, गतिमयी, सर्वत्र गमनशीला, नील अंगों वाली आकाशीय तारा की तरह चमकने वाली, विजय प्रदान करने वाली, क्रोध स्वरूपा एक वेणी से युक्त कल्याणदायिनी है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

भरपूर यौवन से युक्त, शिव स्वरूपा, शत्रुओं के मस्तक को काटने वाली, सुगम मार्ग से भक्तों को पार करने वाली, उग्र स्वभाव वाली, अत्यन्त दीप्तयुक्त, नील और कृष्ण रंगों से युक्त होने के कारण नील सरस्वती कही जाती है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

अत्यन्त शोभामयी, नित्य नवीन, नित्य नये रूप में दर्शन देने वाली, शत्रुओं के लिए भयस्वरूपा, विजय देने वाली, वह आकाश मंडल में विचरण करने वाली है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

भयंकर गर्जन करने वाली, भयावह मुख वाली, समस्त प्राणियों से तथा देवताओं से पूजित अत्यन्त गुणवती सभी प्राणियों के आराध्या स्वरूपा तथा विष्णु, इन्द्र आदि देवताओं द्वारा पूजित है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

शत्रुओं के रक्त को पीने वाली लाल नेत्रों वाली, रुधिर मज्जा आदि से लिप्त बलि चाहने वाली, शत्रुओं की बलि देने वाली और दुर्गास्वरूपा बल और अनेक कलाओं से युक्त है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

अत्यन्त बलवती, बल कार्य करने वाली, बलराम से सुपूजित, सुन्दर केशों वाली तथा सुन्दर वेशभूषा से युक्त है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

कमल पुष्प की माला पहनी हुई, कमल के समान नेत्रों वाली, कामाख्या नाम वाली, पर्वतों पर विचरण करने वाली, साधकों को धन देने वाली, अत्यन्त चतुर भगवती तारा है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

वज्ररूपी पुरुष को चाहने वाली, शत्रुओं के खून से प्यास बुझाने वाली, फूलों से सुशोभित, शिव स्वरूपा भगवान शंकर की प्रिया तथा लक्ष्मी स्वरूपा है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियों को प्राण देने वाली, अष्टगंध से भरपूर पांच स्वरूपों वाली, सिंहों से युक्त भगवती तारा दस महाविद्याओं में अत्यन्त उग्र और तेजस्विनी है। हे भगवती तारा! आपको बारम्बार नमन्।

हे देवि पार्वती! भगवती तारा के इस रहस्यमयी चरित्र का मैंने आपके सामने वर्णन किया है, जिसे सुनकर भगवती तारा की कृपा से मोक्ष प्राप्त होता है।

भगवती तारा के इस रहस्य पूर्ण स्तोत्र को जो सुनता है। सभी सिद्धियों से युक्त होकर पृथ्वी तल पर विचरण करता है। ये श्रेष्ठतम सिद्धियाँ उसी पुरुष को प्राप्त होती है जिनमें कोई संशय नहीं है। जो साधक शनिवार और मंगलवार की रात्रि को संयमित होकर स्तोत्र का पाठ करता है, उसको शीघ्र ही मंत्र सिद्धि प्राप्त होती है।

जो भक्तगण श्रद्धा से इस रहस्यमय स्तोत्र का पाठ करते हैं, वह शीघ्र ही जीवनमुक्त शिव स्वरूप हो जाते हैं। जो साधक इस स्तोत्र का पुरुश्चरण करता है, वह शिव स्वरूप को प्राप्त करके जीवनमुक्त हो जाता है।

तारा शक्ति पूजा की परम्परा में सर्वपूज्या है। तारा के शतनाम स्तोत्र में प्रत्येक नाम की व्याख्या के मूल में ऐतिहासिक सन्दर्भ की सत्ता विद्यमान है। तारा शक्ति पूजा की लोकप्रिय देवी हैं इसका पाठ शक्ति साधक को अवश्य ही करना चाहिए।

इस स्तोत्र को सिद्ध करने की विधि अत्यंत सरल है। इसे आप किसी भी मंगलवार अथवा अष्टमी को 11 दिन तक नित्य 5 बार लयपूर्वक पाठ करें।

मां तारा का यह स्तोत्र सभी के लिए आवश्यक है और गृहस्थ व्यक्ति को इसका नियमित पाठ करना ही चाहिए। जिसका जीवन परिस्थितियों और दुर्भाग्य के कारण असहाय, दीन, जर्जर बन गया है, जीवन उस समय इस विजय तीव्र तारा स्तोत्र द्वारा संभव हो जाती है।

कई साधकों ने मात्र इसी स्तोत्र का श्रद्धापूर्वक पाठ करके माँ तारा के बिम्बवत दर्शन भी किए हैं।

❑❑❑

हे मेरे परम आराध्य.... थाम लो, मेरे इस मन की व्यर्थ भटकन को।

- **यदि मेरा जीवन यूं ही चलता रहेगा, तो**
  - क्या अर्थ होगा, इस जीवन का ?
  - क्या होगा मेरी इस गिरती हुई मनोदशा का ?
  - और क्या होगा आपके गुरुत्व का ?

प्रभु, मेरे जीवन की इस डोर को इतना ढीला भी न कीजिए, कि मेरा जीवन बिखर जाए या फिर मुझे इस बात का एहसास दीजिए, कि जो कुछ भी हो रहा है, वह आपकी कृपा कटाक्ष है।

मैं इस संसार में न चाहते हुए भी इस तरह से फंसता जा रहा हूं, जैसे कोई पथिक अनजाने में दलदल में गिर जाता है। गिरने के बाद वह जितना भी निकलने की कोशिश करता है, वह उतना ही उसमें फंसता जाता है। क्या आप जैसे मांझी के रहते हुए भी मेरी नौका इस भव सागर में डूब जायेगी ? क्या इस भंवर चक्र से मेरे निकलने का कोई उपाय आपके पास नहीं है ? यदि है तो फिर इतनी देर क्यों ... क्यों आप इतनी देर लगा रहे हैं ? मैं और अधिक सांसारिक अनुभव नहीं चाहता, यह तो सत्य है, कि इस संसार का मैं जितना भी अनुभव करूं, इसका स्वाद कसैला है और कसैला ही रहेगा। यही तो अनुभव है, मेरे अब तक के जीवन का, यही तो अनुभव किया है मैंने इस संसार सागर में डूबकर, सचमुच.... बहुत ही कसैला जल है इस सागर का।

अब प्रभु कृपा करहु एहि भांति

मैं जहाँ तक भी देखता हूं, एक बहुत बड़ी बेड़ी जिसे सामान्य भाषा में स्वार्थ कहा जा सकता है, उस बेड़ी ने प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को जकड़ रखा है, यहां जितने भी सम्बन्ध हैं, वे सभी तो स्वार्थ के आधार पर ही आधारित हैं। यहां कोई किसी ने निश्चल प्रेम नहीं करता.... सचमुच में ही नहीं करता, जरा आप अपने भीतर झांक कर तो देखिये, यहां सारे सम्बन्ध बेमानी हैं, जो कि मृत्यु के साथ ही एक ही झटके में समाप्त हो जायेंगे। लेकिन जब तक हम जीवित रहेंगे, कोई हमें इच्छित जीवन नहीं जीने देगा। हमारा जीवन दूसरों के इशारों से संचालित होने वाला जीवन बन गया है। यह जीवन केवल मेरा ही नहीं यहां सभी का ऐसा ही जीवन है।

और हम इस भ्रम जाल में प्रसन्न हैं, कि यह सब कुछ मेरा है, ये पत्नी, ये पुत्र-पुत्रियाँ, ये माता-पिता, ये सगे- सम्बन्धी, ये जमीन- जायदाद.... मगर सत्य तो यह है कि यहाँ कुछ भी मेरा नहीं है, ये सत्य ही नहीं परम सत्य है। समय-असमय सभी साथ छोड़ जाते हैं। अगर हम धन कमा लाते हैं, तो पिता को बहुत प्रिय है, यदि न कमा कर लायें, तो ये ही हमारे दुश्मन बनकर हमारा जीवन मुश्किल कर देते हैं। ये मित्र, जब तक समय अनुकूल चलता है ये साथ रहते हैं, जरा भी प्रतिकूल परिस्थिति आती है, ये तुरन्त किनारा कर लेते हैं। मैंने देखा है, मृत्यु को और बहुत करीब से देखा है।

मेरा एक मित्र मृत्यु को प्राप्त हो जाता है और जो माता-पिता उसे घर से बाहर नहीं जाने देते थे, कभी कोई इच्छित कार्य करने से नहीं रोकते थे वही माता-पिता, वही मित्र, वही सगे-संबंधी उसे एक अनजान वस्तु समझकर एक बेकार की चीज समझकर श्मशान ले जाते हैं और देखते-देखते उसे जलाकर हमेशा के लिए समाप्त कर देते हैं। कहां गई वह ममता, कहां गया वह प्यार... कहीं भी आत्मीयता तो दिखाई नहीं देती....अरे! जिसे तुम इतना चाहते थे, आज क्या हो गया... क्या उसके अस्तित्व को मिटाने की इतनी जल्दी कर दी।

यही सब तो मेरे साथ होगा, आपके साथ होगा और हम सब के साथ होगा, जिस पुत्र को हम इतना प्यार करते हैं, वही तो इस सुन्दर शरीर को अग्नि के सुपुर्द कर देगा और यह सुन्दर शरीर देखते-देखते जलकर समाप्त हो गया। मिट गया.......आपके लिए तो सब कुछ मिट गया... लेकिन वे मित्र, वे सगे- संबंधी, परिवार, भवन, मकान, दुकान, जायदाद सभी कुछ तो जैसा था वैसा ही है लेकिन है तो स्वयं आप नहीं होंगे।

आप मुझे विजय प्रदान कर दीजिए...

आप ही मुझे विजय दे सकते हैं और आपको विजय देनी ही होगी, क्योंकि मेरी हार में आपकी ही असफलता प्रकट होगी और आप तो अविजित है.....

हे मेरे परम आराध्य, कैसे होगा मुक्ति का ज्ञान? कब तक हम इन छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर, छोटे-छोटे तनावों को लेकर, छिछली सी माया को लेकर परेशान रहेंगे ? कब हम आपको समझेंगे और कब हम ब्रह्म को समझेंगे ? कब हमें ध्यान-धारणा का ज्ञान होगा ? कम हम साधनाओं में सफलता प्राप्त करेंगे ? कब हमारे भीतर पात्रता और श्रद्धा का भाव उदय होगा ? आखिर कब.... बहुत हो गया.... प्रभु, बहुत हो गया, अब तो यह एहसास करा ही दो, कि हमारा हाथ आपके हाथ में ही है।

कौन है हमारा इस संसार में आपके सिवाय, जो हैं, वे सभी तो नाममात्र के ही हैं। आखिर अंत में आप ही तो हैं, जो हमें थामेंगे... जो हमें संभालेंगे और उस दिव्यलोक तक हमारे साथ रहेंगे। फिर ये इतनी दूरी आपने हमसे क्यों बना रखी है ? क्या कसूर है हमारा... और अगर कुछ है, तो हम उसे कैसे दूर करें ? आखिर हमें कौन राह बतायेगा ? अगर आप ही हमारा साथ न देंगे, तो कौन हमारी सहायता करेगा? अब तो यही विनती है, कि आप हमारे हृदय में.... हमारे शरीर में.... हमारे रोम-प्रतिरोम में और हमारे प्रत्येक अणु-अणु में आप समाहित हो जायें।

हम देखें तो केवल आपको, हम सुनें तो केवल आपको, हम चाहें तो केवल आपको, हमारा सर्वस्व आप पर ही केन्द्रीयभूत हो जाए, कुछ ऐसी कृपा करो मेरे गुरुदेव! मैं 'मैं' न रहकर आपके ही अस्तित्व में विलीन हो जाऊँ। अब तो मैं रहना भी नहीं चाहता या फिर आप अगर मुझे रखना ही चाहते हो, तो गुरुमय बनाकर रखें। मेरे रोम-रोम से एक ही ध्वनि निकले गुरुदेव... गुरुदेव.... गुरुदेव...।

मैं जानता हूं, आप ये सब कर सकते हैं और होगा भी आपके करने से ही। मेरे तो सारे प्रयास ही निष्फल हो रहे हैं। मैं हार रहा हूं गुरुदेव, मैं हार रहा हूं।

आप मुझे विजय प्रदान कर दीजिए... आप ही मुझे विजय दे सकते हैं और आपको विजय देनी ही होगी, क्योंकि मेरी हार में आपकी ही असफलता प्रकट होगी और आप तो अविजित हैं, फिर आपकी हार संभव ही नहीं है। मैं भी विजय प्राप्त करना चाहता हूं, अगर आपका थोड़ा सा भी सहारा मुझे मिल जाए, तो मैं निश्चित रूप से विजय प्राप्त कर लूंगा और सीधे शब्दों में कहूं, तो मेरी विजय वास्तव में आपकी ही विजय होगी और मैं चाहता हूं कि आप विजयी हो, आपको विजयी होना ही होगा... आप मेरे जीवन की चिंता न करें, अगर मेरी जान भी चली जाए तो मुझे दुःख न होगा। अगर मैं हार कर मर गया, तो सचमुच मुझे कभी मुक्ति नहीं मिल पाएगी और मुझे मुक्त करना आपका कर्तव्य है।

ये अकेले मेरे ही भावोद्‌गार नहीं, वरन् समस्त अनखिले पुष्पों के भावोद्‌गार हैं। ये मेरे अकेले की व्यथा नहीं, वरन्, जो चाह कर भी खिल नहीं पा रहे। आप माली ही नहीं अपितु श्रीमाली हैं, आप गुरु ही नहीं सद्‌गुरु हैं। आपको इन अबोध व्यथित शिष्यों के जीवन को, मुरझाये हुए पुष्पों को सुवास देनी ही होगी। मैं जानता हूँ, जो पात्र होना चाहता है, उसे पात्र बनाने में आपको तनिक भी परेशानी नहीं होगी और जो पात्र नहीं बनना चाहते हैं, मैं उनके दुर्भाग्य को कभी माप नहीं सकता।

अत्यन्त ही दुर्भाग्यशाली हैं वे शिष्य, जो पात्रता की कसौटी से बचना चाहते हैं, जो अपने पूज्यवर के अनुकूल होने से कतराते हैं, आखिर इस जीवन का मूल्य ही क्या, जिसे आपने कई बार मृत्यु के मुख से बचाया है, अब यह जीवन है किसका ? आपका ही तो है. ... निःसन्देह यह जीवन आपका ही है। मैं बनना चाहता हूँ आपके मार्ग का दीपक.... आप जलायें तो सही, बस एक बार जला दीजिए, मैं जीवन भर जलता ही रहूंगा... जलता ही रहूंगा।

अब तो अपनी कृपा की वर्षा कर ही दीजिए। अब न रोकिए अपनी करुणा के उस अजस्र प्रवाह को, नहीं तो शिष्यों का मरुस्थल हृदय बेजान होकर समाप्त हो जाएगा, एक खिलती कली मुरझा जाएगी.....एक सुखद कहानी का दुखान्त हो जाएगा, इस कहानी को परवान चढ़ा दीजिए। अब कृपा कर दीजिए गुरुदेव... अब अपनी कृपा कर ही दीजिए....

अब प्रभु कृपा करहु एहि भांति।
सब तजि भजन करहुं दिन राति।।

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

गुरु मंत्र अपने आप में छोटा होते हुए भी अत्यधिक क्षमताओं से भरा होता है क्योंकि इसके एक-एक शब्द का अर्थ अपने आप में मूल्यवान है। पूरे शरीर को सूर्य के समान बना देने की शक्ति उसमें समाहित है, जो अचूक है, तीक्ष्ण एवं प्रभावकारी है। पूरे शरीर को ऊर्जा प्रदान करने में सक्षम है। गुरु मंत्र अपने आप में ऊर्जा का अक्षय भण्डार है। जब शिष्य को गुरु अपने श्रीमुख से यह गुरुमंत्र प्रदान करता है तो उसके पीछे एक गहन चिंतन, एक धारणा छिपी होती है। पूर्ण चेतनायुक्त इस मंत्र में शिष्य की पूर्णता छिपी होती है। जो कार्य किसी अन्य देवी-देवता के श्लोक या स्तुति से नहीं हो पाता उसे गुरु मंत्र तत्काल कर दिखाता है।

यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इसका जप किया जाय तो समस्याएँ उस साधक के पास आ ही नहीं सकतीं क्योंकि गुरु को ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश से भी अधिक तेजस्वी कहा गया है। वे ही ज्ञान एवं सिद्धियाँ देने में समर्थ हैं। भोग एवं मोक्ष दोनों प्रदान करने वाले सभी देवी-देवता भी इन्हीं के इंगित करने पर ही साधक को सिद्धि प्रदान करते हैं अत: यह प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

कहा जाता है कि आदिगुरु शंकराचार्य जब सब ओर से त्रस्त हो गए शरीर से क्षीण हो गए तब मां भगवती ने स्वयं आकर दर्शन दिए तथा अपने त्रिपुर सुन्दरी स्वरूप की साधना करने हेतु कहा और शंकराचार्य ने त्रिपुर सुन्दरी को अपनी आराध्य देवी के रूप में स्थापित कर उनके मंत्र का जप किया और यही नहीं इस मंत्र के-**'ह्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं'** प्रत्येक बीज मंत्र पर एक श्लोक की रचना की। ठीक इसी प्रकार योगियों ऋषियों ने गुरु मंत्र **'ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः'** के प्रत्येक बीज मंत्र पर भी एक श्लोक की रचना की है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस महान तेजस्वी मंत्र में कितना बड़ा ज्ञान का सागर भरा हुआ है।

ॐ
प र म त त्वा य ना रा य णा य गु रु भ्यो न मः

'प'

पकार पुण्यं परमार्थ चिन्त्यं
परोपकारं परमं पवित्रं
परम हंस रूपं प्रणवं परेशं
प्रणम्यं प्रणम्यं निखिलं त्वमेवं॥1॥

गुरु मंत्र में प्रदर्शित **'पकार'** बीज का अर्थ है पूर्णता की पराकाष्ठा जीवन में सर्वोच्चता परमार्थ चिंतन, परोपकार तथा जीवन की पावनता प्रणव स्वरूप परमेश्वर के स्वरूप को प्राप्त करना तथा परमहंस की गति को प्राप्त करके गुरुमय होना अत: दिव्य विभूति भगवत पूज्यपाद गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी प्रणम्य एवं सर्व स्तुत्य है।

'र'

रम्या सुवाणी दिव्यंच नेत्रं
अग्निं त्रिरूपं भवरोग वैद्यं
लक्ष्मी च लाभं भवति प्रदोषे
श्री राजमान्यं निखिलं शरण्यम्॥2॥

'रकार' बीज की साधना से वाणी में रमणीयता नेत्रों में दिव्यता तथा शरीर तथा मन के भीतर अग्नि त्रय के जागरण माध्यम से समस्त रोगों का शमन तथा भवरोग से मुक्ति अनन्त ऐश्वर्य प्राप्ति संभव होती है। रकार बीज की साधना राज मान्यता तथा निखिल की शरणागति प्रदान करती है।

'म'

महामानदं च महामोह निघ्नं
महोच्चं पदं वै प्रदानं सदैवं
महनीय रूपं मधुराकृतिं तं
महामण्डलं तं निखिलं नमामि॥3॥

'मकार' बीज माधुर्य का सूचक है मकार बीज की साधना से जीवन में माधुर्य तथा परमानन्द की उपलब्धि होती है समस्त मोह बंधन को दूर करके महोच्च पदवी प्रदान करती है, इस बीज की साधना से साधक मधुर आकृति एवं महनीय रूप युक्त तथा समस्त लोकों में महिमा मण्डित होता है, ऐसे निखिल तत्व को मैं नमन करता हूँ।

'त'

तत्व स्वरूपं तपः पूतदानं
तारुण्य युक्तिं शक्तिं ददाति
तापत्रयं दूरयति तत्वगर्भः
तमेव तत्पुरुषमहं प्रणम्यं॥4॥

'तकार' बीज की साधना से तत्व मसि रूप वेद महावाक्य की उपलब्धि संभव होती है क्योंकि तत्व ज्ञान में इस साधना का अत्यधिक महत्व है अपने स्वरूप ज्ञान के लिए इसमें तरुणता की शक्ति, ताप त्रय की विमुक्ति तथा रहस्य मय ज्ञान को साधक प्राप्त करता है उस परम पुरुष गुरुदेव निखिल को बारम्बार नमन करता हूँ।

'त्वा'

विभाति विश्वेश्वर विश्वमूर्ति
ददाति विविधोत्सव सत्व रूपं
प्राणालयं योग क्रिया निदानं
विश्वात्मकं तं निखिलं विधेयम्॥5॥

'वकार' बीज की साधना से सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमय गुरुत्व शक्ति की प्राप्ति होती है तथा इसी जीवन में आनंदमयता की पूर्ति और क्रियायोग के उस गुह्य तत्व को उद्घाटित करके समस्त ब्रह्माण्ड में विचरण करते हुए निखिलमय हो जाता है।

'य'

यशस्करं योग क्षेम प्रदं वै
योगश्रियं शुभ्रमनन्तवीर्यं

यज्ञान्त कार्य निरतं सुखं च
योगेश्वरं तं निखिलं वदेन्यम्।।6।।

'यकार' बीज की साधना से योग के यम नियम आदि अष्टांग योग को सम्पन्न करते हुए यशस्वी पुरुष योगक्षेम की चिंता से रहित योग के समस्त आयाम को पूर्ण करते हुए अनन्त शक्ति युक्त होकर यज्ञ विद्या को सर्वांग रूप से प्राप्त करता है तथा योगेश्वर निखिल के ब्रह्ममय स्वरूप में अधिष्ठित हो जाता है।

'ना'

निरामयं निर्मल भाव भाजनं
नारायणस्य पदवीं समुदारभावं
नवं नवं नित्य नवोदितं तं
नमामि निखिलं नवकल्प रूपम्।।7।।

'नकार' बीज की साधना से साधक रोग रहित सात्विक बुद्धि से युक्त शास्त्र सम्मत नारायण स्वरूप को प्राप्त करके नित्य नवीन जीवन के प्रत्येक क्षण को जीता हुआ कल्पान्त तक गुरुदेव निखिल की शरणागति को प्राप्त करता है।

'रा'

रासं महापूरित रामणीयं
महालयं योगिजनानु मोदितं
श्री कृष्ण गोपीजन वल्लभं च
रसं रसज्ञं निखिलं वरेण्यम्।।8।।

'रा' बीज की साधना से महारास की उपलब्धि होती है जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने गोपियों के साथ रासलीला की उसी तरह साधक भी योग के माध्यम से अपने इष्ट के साथ रसपूर्ण होकर निखिल स्वरूप में अभिसिक्त होता है।

'य'

यां यां विधेयां मायार्थ रूपां
ज्ञात्वा पुनर्मुच्यति शिष्य वर्ग:
सर्वार्थ सिद्धिं प्रददाति शुभ्रां
योगेन गम्यं निखिलं प्रणम्यम्।।9।।

इस द्वितीय **'यकार'** की साधना से माया के स्वरूप को जानकर शिष्य बंधन मुक्त होकर सभी श्रेष्ठतम् सिद्धियों को प्राप्त करके योगियों के द्वारा गम्य वन्दनीय निखिलेश्वर स्वरूप के रहस्य को प्राप्त करता है।

'णा'

निरंजनं निर्गुण नित्य रूपं
अणोरणीयं महतो महन्तं
ब्रह्म स्वरूपं विदितार्थ नित्यं
नारायणं च निखिलं त्वमेवम्।।10।।

'णकार' बीज के माध्यम से साधक नादब्रह्म को प्राप्त करके निरंजन तथा निर्गुण ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त करता है तथा अणु से अणु और महान से महान रहस्यमय ब्रह्माण्ड को जानकर नारायण स्वरूप को प्राप्त करता है।

'य'

यज्ञ स्वरूपं यजमान मूर्ति
यज्ञेश्वरं यज्ञ विधि प्रदानं
ज्ञानाग्नि हूतं कर्मादि जालं
याजुष्यकं तं निखिलं नमामि।।11।।

'यकार' बीज की साधना से साधक यज्ञ के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करके अनन्त भेद प्रभेदों को जानकर अपने शुभ अशुभ आदि कर्म रूपी हवि को ज्ञान रूपी अग्नि में आहुति देकर बंधन मुक्त हो जाता है तथा यज्ञ की साक्षात मूर्ति निखिल स्वरूप में समाहित हो जाता है।

'गु'

गुत्वं गुरुत्वं गत मोह रूपं
गुह्याति गुह्यं गोप्तृत्व ज्ञानं
गोक्षीर धवलं गूढ प्रभावं
गेयं च निखिलं गुण मन्दिरं तम्।।12।।

'गुकार' बीज अपने आप में अद्वितीय है इसकी साधना से साधक मोह रहित होकर गुरु तत्व को प्राप्त करके गुरुमय हो जाता है तथा गौदुग्ध के समान निर्मल ज्ञान को प्राप्त करके गूढ शास्त्र ज्ञान को प्राप्त करता है

तथा आनन्दमय युक्त जीवन व्यतीत करता है।

'रु'

रुद्रावतारं शिवभावगम्यं
योगाधिरूढिं ब्रह्माण्ड सिद्धिं
प्रकृतिं वसित्वं स्नेहालयं च
प्रसाद चित्तं निखिलं तु ध्येयम्।।13।।

'रुकार' बीज की साधना से साधक शिव भाव को प्राप्त करके योगमय होकर ब्रह्माण्ड की दिव्य सिद्धियों को प्राप्त करता है तथा प्रकृति के वशीभूत न होकर स्नेह युक्त होकर जीवन को अमृतमय बना देता है।

'भ्यो'

योगाग्निना दग्ध समस्त पापं
शुभा शुभं कर्म विशाल जालं
शिवा शिवं शक्तिमयं शुभं च
योगेश्वरं च निखिलं प्रणम्यं।।14।।

इस बीज की साधना से योगरूपी अग्नि में समस्त पाप समूह को दग्ध करके शुभा शुभ कर्म जाल से मुक्त होकर शिव और शक्ति रूप की साधना करके योगेश्वर निखिल स्वरूप को प्राप्त करके दिव्यतम बन जाता है।

'न'

नित्यं नवं नित्य विमुक्त चिंतं
निरंजनं च नरचित मोदं
ऊर्जस्वलं निर्विकारं नरेशं
निरत्रपं वै निखिलं प्रणम्यं।।15।।

'नकार' बीज की साधना से चिंता मुक्त होकर साधक नित्य नवीन जीवन जीता हुआ सभी मोह बाधाओं से रहित सभी प्राणियों को आनन्द देता हुआ ऊर्जा युक्त, निर्विकार और मनुष्यों में श्रेष्ठ होकर, निखिल के आनन्दमय स्वरूप का ध्यान करता हुआ पूर्णता युक्त जीवन व्यतीत करता है।

'म'

मातृ स्वरूपं ममतामयं च
मृत्युञ्जयं मानप्रदं महेशं
सन्मंगलं शोक हरं विभुं तं
नारायणमहं निखिलं प्रणम्यं।।16।।

'मकार' बीज की साधना से साधक मातृत्व गुण से युक्त होता है तथा प्रत्येक प्राणियों में दया करने वाला मृत्यु के भय से रहित, मंगल स्वरूप, शोक से रहित नारायण के साक्षात स्वरूप को प्राप्त करता है तथा दिव्यतम इस मानव जीवन को सार्थक करता है।

उपरोक्तानुसार मंत्र के बीज अक्षरों में छुपा रहस्य जब साधक को ज्ञात होता है, तब उसे मालूम होता है कि सद्गुरु के द्वारा दिया गया मंत्र कोई सामान्य मंत्र नहीं, मंत्र-राज है और इसका जप उसे इस संसाररूपी भवसागर से पार उतारने में पूर्ण सक्षम है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सद्गुरुदेव के चरणों में लीन होकर पूर्ण भाव से इसका जप करें सिर्फ गिनती करने से उसका फल नहीं मिलता। आध्यात्म के राह पर भाव का ही सर्वाधिक महत्व है।

भाव

एक यहूदी अनपढ़ था और ग्रामीण भी। प्रायश्चित पर्व पर सबको प्रार्थना करता देखकर वह भी बैठ गया। अन्य सभी लोग मंत्रों के माध्यम से उस पर्व पर प्रभु से प्रार्थना करते रहे। वह सोचने लगा कि मैं मंत्र कहाँ से लाऊँ। उसने सोचा कि मंत्र भी तो वर्णमाला से ही बने हैं और वह वर्णमाला के अक्षरों का ही पाठ करने लगा और भावना करने लगा, 'हे प्रभु! मुझे तो कोई मंत्र याद ही नहीं, इन अक्षरों को जोड़कर तुम्हीं मंत्र बना लेना। मैं तो तुम्हारा दास हूँ, पूजा के लिए नए भाव कहाँ से लाऊँ?'' जब तक दूसरे लोग प्रार्थना करते रहे, वह ऐसे ही भगवान का ध्यान करता रहा।

सायंकाल जब सब सामूहिक प्रार्थना में सम्मिलित हुए तो धर्मगुरु रबी ने उस ग्रामीण को भक्तों की अग्रपंक्ति में रखा। यह देखकर साथी ने आपत्ति की, ''श्रीमान् जी! इसे तो मंत्र भी अच्छी तरह याद नहीं''

''तो क्या हुआ?'' संत रबी ने आर्द्रकंठ से कहा, ''इसके पास शब्द नहीं, भाव तो है और भगवान सिर्फ का भाव भूखा है।''

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य क्या है? क्या केवल मुंह से जय गुरुदेव कहने से या फूल माला चढ़ाने से या चरण स्पर्श करने से व्यक्ति शिष्य हो जाता है? सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के अनुसार ये तो मात्र गुरु भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन मात्र हैं। शिष्य तो व्यक्ति तब होता है, जब उसमें कुछ विशेष गुण उत्पन्न होते हैं। क्या हैं वे गुण? आइए जानें।

- शिष्य अन्य साधना करता भी है तो इसी भाव से – हे गुरुदेव! आपके स्वरूप में सभी देवी देवताओं का वास है इसलिए इस देवी या देवता की पूजा द्वारा वास्तव में मैं आपके स्वरूप का चिंतन कर रहा हूं। आप ही मुझे जीवन में और सभी साधनाओं में पूर्ण सफलता देने में सक्षम हैं।
- शिष्य को एहसास होता है कि बिना सद्गुरु की इच्छा से कोई भी देवी–देवता उसे कुछ भी प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं चाहे वह कितना ही मंत्र जप क्यों न कर ले। इसलिए वह हर साधना के पूर्व और समापन पर गुरु पूजन एवं चिंतन अवश्य करता है।
- शिष्य के मंत्र जप में, साधना में कोई त्रुटि, कोई कमी भी रह जाए तो भी सद्गुरुदेव उसे उस साधना में पूर्णता प्रदान करने में सर्वथा सक्षम होते हैं, इसलिए शिष्य गुरु पूजन को और गुरुमंत्र जप को हर साधना का अभिन्न अंग मानता है।
- अगर शिष्य गुरु मंत्र जप कर लेता है तो उसे आधी सफलता तो स्वत: ही प्राप्त हो जाती है फिर तो उसे मात्र साधना क्रम को पूरा करना होता है, क्योंकि फिर सद्गुरु की शक्ति स्वयं उसे साधना में सफलता की ओर अग्रसर करती रहती है।
- शिष्य को ज्ञात होता है कि गुरु द्वारा प्रदत्त दीक्षा वह कुंजी है जिसके माध्यम से बड़ी से बड़ी साधना को सहज सिद्ध किया जा सकता है और बड़े से बड़े कार्य को पूर्ण किया जा सकता है। दीक्षा प्राप्ति का अर्थ है नब्बे प्रतिशत सफलता का स्वत: प्राप्त होना। इसलिए शिष्य प्रयत्न करके अवश्य किसी भी महत्वपूर्ण कार्य सा साधना से पूर्व दीक्षा प्राप्त कर लेता है।
- शिष्य द्वारा साधना में सफलता प्राप्त करना ही सद्गुरु के लिए सबसे बड़ी दक्षिणा है। अत: शिष्य पूर्ण मनोयोग से साधना में तत्पर होता हुआ सिद्धियां प्राप्त करता है तथा गुरु के ज्ञान को जीवित एवं सुरक्षित रखता है।

- गुरु जो रास्ता बताए उस पर बढ़ना बहुत कठिन कार्य है। केवल हिम्मतवान व्यक्ति ही उस पर बढ़ सकता है। कायर और बुजदिल नहीं बढ़ सकते। गया बीता व्यक्ति पूर्ण समर्पण नहीं कर सकता। समर्पण के लिए तो व्यक्ति को वीर होना होगा, महावीर होना पड़ेगा।
- गुरु तो चाहते हैं कि शिष्य दिव्यता के मार्ग पर अग्रसर हो, पूर्णता के रास्ते पर अग्रसर हो और शिष्य ऐसा करता है तो उसे पहली बार एहसास होता है कि संतोष क्या है, आनंद क्या है, पूर्णता क्या है, जीवन की उमंग, उल्लास क्या है।
- तुम भी अपनी असली प्राकृतिक छवि को जाग्रत कर सकते हो। अपना स्वयं का आत्म साक्षात्कार कर तुम बुद्धत्व को प्राप्त कर सकते हो और यह सत्य है कि हर शिष्य बुद्ध बन सकता है, कृष्ण बन सकता है अगर वह सद्‌गुरु के बताए मार्ग पर चले।
- दीक्षा के प्राप्त होने से व्यक्ति जब अपने दैनिक मंत्र जप साधना में बैठता है, साधक में अदम्य साहस, सब कुछ करने की क्षमता आ जाती है और वह निर्भय होकर कार्य करने लगता है, साथ ही गृहस्थ की सभी समस्याओं का निराकरण होने लगता है।
- वे साधक सौभाग्यशाली होते हैं, जो सद्‌गुरु से श्रेष्ठ दीक्षाएं पाप्त करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।
- आज के युग में जब सर्वत्र भयावह स्थिति बनी हुई है, कब क्या घटना हो जाये; ऐसी स्थिति में दीक्षाएं प्राप्त करनी चाहिए ताकि व्यक्ति विषम से विषम परिस्थितियों में सुरक्षित अनुभव कर सके तथा सफलता प्राप्त कर सके।
- अगर व्यक्ति समय-समय पर श्रेष्ठ गुरु से उचित दीक्षाएं प्राप्त करता रहे तो असफलता एवं बाधाएं उसके जीवन में व्याप्त हो ही नहीं सकती तथा वह निरंतर उच्चता एवं श्रेष्ठता की और बढ़ता रहता है।
- दीक्षा तो एक संस्कार है, जिसके माध्यम से कुसंस्कारों का क्षय होता है, अज्ञान, पाप और दारिद्रय का क्षय होता है तथा ज्ञान शक्ति और सिद्धि प्राप्त होती है।
- गुरु के निर्णय और आदेश के अनुसार दीक्षा ग्रहण की जाये तो श्रेष्ठ रहता है।
- जीवन के रहस्य को समझने के लिए, उच्चता प्राप्ति के लिए तथा बार-बार जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति के लिए दीक्षित होना आवश्यक है।
- जितने भी महापुरुष हुए हैं, चाहे वह कृष्ण हो, चाहे वह राम हो अथवा विश्वामित्र हो, सबने सद्‌गुरु से दीक्षा प्राप्त कर पूर्णता प्राप्त की।
- दीक्षा संस्कार आज के युग में जीवन का अद्वितीय सौभाग्य है जिसके माध्यम से आज के युग में मुरझाये लोगों के चेहरों पर नई उमंग व चेतना आ सकती है।

मनोकामना पूर्ति प्रयोग

व्यक्ति की इच्छाएं अनेक हैं तथा उनकी पूर्ति भी सदैव से युगानुसार अपने परिवर्तित रूप में होती रही है।

लेकिन जब व्यक्ति की आकांक्षाएं अधिक हो जाएं और उनके पूर्ण होने में संशय होने लगे, कोई भी कार्य सम्पन्न होने में अत्यधिक बाधाएं उपस्थित होने लगें, तो फिर कोई न कोई ऐसा माध्यम अपनाना पड़ता है, जो वर्तमान युग में तीव्र प्रभावी हो और उसके प्रति मन संशय रहित हो।

इसके लिए तो फिर मात्र एक ही उपाय श्रेष्ठ होता है, कि गुरु से ही सम्बन्धित कार्यों की पूर्ति के लिए प्रार्थना करें और गुरु अपने साधक की कामनापूर्ति में संलग्न हो जाए।

प्रस्तुत प्रयोग कामना पूर्ति का प्रयोग है। किसी भी सोमवार को प्रातःकाल स्नानादि करके, पीली धोती पहनकर व गुरू चादर ओढ़कर, पीले रंग के आसन पर 'गुरू चक्र' स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत व पुष्प से करें। गुरू चक्र के समक्ष निम्न मंत्र का 5 माला जप पांच दिन तक करें-

।। ॐ ह्रीं श्रीं मानसा सिद्धि करीं ॐ ।।

OM HREEM SHREEM MANASA SIDDHI KAREEM OM

पांच दिन के पश्चात् गुरू चक्र को नदी या किसी मन्दिर में विसर्जित कर दें।

गुरू चक्र : 120/-
गुरू माला : 300/-

सौन्दर्य सर्वोज्जवला

अनंग त्र्योदशी 25.04.21

या किसी भी शुक्रवार

अनिन्द्य अद्वितीय जगमगाता सौन्दर्य

ऊर्जस्वतं सुदीप्तत्वं, तेजस्वं सुमनोहरम्।
आह्लादकत्वं माधुर्यं, सौन्दर्य जीवनोद्भव।।

ऊर्जस्विता, सुदीप्तत्व, तेजस्विता, आह्लाद
और माधुर्य ही जीवन का वास्तविक सौन्दर्य है।

सौन्दर्य साधना

जिसे अप्सराएं भी सिद्ध करती हैं

जीवन में हास्य, विनोद, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाना कोई सामान्य सी बात नहीं होती, यह तो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसे प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े योगियों और ऋषि-मुनियों ने कठिन-से-कठिन तप किये हैं, तब जाकर वे पूर्ण कहलाये और यह दिखा दिया, कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चयी और आत्मविश्वासी हो, तो वह तप व साधना के बल पर क्या कुछ नहीं कर सकता, और जब ऐसा होगा, तो उसके चेहरे पर एक ओज, एक उमंग, एक आह्लाद, एक प्रसन्नता स्वत: ही झलकने लग जायेगी . . .और यही तो वास्तविक सौन्दर्य है।

सौन्दर्य किसी नारी, अप्सरा या प्रकृति का नाम नहीं है, वे तो केवल सौन्दर्य के प्रतिमान हैं। ''जिसे देखकर आप अपने-आप को चिंतामुक्त अनुभव करने लगें और आनन्द की स्थिति उत्पन्न होने लगे, सही अर्थों में वही सौन्दर्य है।''

आज सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से व्यक्ति सौन्दर्यशाली बने रहने का प्रयास करता है, तरह-तरह के विटामिन्स खाता है। सौन्दर्य विशेषज्ञ भी सौन्दर्य का स्थायी हल ढूंढ़ने के प्रयास में रत हैं, किन्तु आज तक स्थायी उपाय प्राप्त करने में असफल ही हैं। हाँ, यह जरूर है कि सर्जरी के माध्यम से चेहरे व शरीर की झुर्रियों को समाप्त करने में डॉक्टर सफल हुए हैं, किन्तु यह चिकित्सा अत्यंत महंगी है और अत्यंत कष्ट साध्य भी, जिसे अपनाना प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है।

"सौन्दर्य का अर्थ है –
जो अच्छा लगे, जिसे देखने का मन करे, ऐसा रूप, सौन्दर्य ही वास्तविक सौन्दर्य है . . .
सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है, चाहे वह 'प्राकृतिक सौन्दर्य' या 'नारी सौन्दर्य' . . .
क्योंकि सौन्दर्य ही सृष्टि का आधार है।

यदि हम अपना थोड़ा सा ध्यान ऋषि परम्परा द्वारा अविष्कृत उपायों पर डालें, तो हमें पता चलेगा कि सौन्दर्य का स्थायी उपाय उन लोगों ने बहुत पहले ही ढूँढ़ निकाला है। हमारे प्राचीन ऋषि धन्वन्तरी, अश्विनी, च्यवन आदि ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लगा दिया, कि –

- आखिर जीवन का वास्तविक तथ्य क्या है?
- कैसे अपने आप को ओजस्वी, यौवनवान और सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है?
- किस प्रकार बुढ़ापे को जवानी में बदला जा सकता है?
- किस प्रकार अपने पूर्ण शरीर का कायाकल्प किया जा सकता है?

"'कायाकल्प'' का तात्पर्य उस सदाबहार तरोताजगी, अद्वितीय सौन्दर्य और उस मस्ती से है, जो जीवन में आनन्द का बीज बो दे, 60 वर्ष के वृद्ध को भी यौवन का पूर्ण सौन्दर्य प्रदान कर दें, क्योंकि व्यक्ति तन से भी अधिक मन पर थोपे गये विचारों से बूढ़ा हो जाता है और उसका सारा सौन्दर्य ही ढल जाता है . . . जीवन में इस आनन्द का होना ही सौन्दर्य-वृद्धि है।

सौन्दर्य तो आधार है जीवन का, ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसका प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठता, पूर्णता कही जाती है। जितने भी ग्रंथ, वेद, पुराण लिखे गये हैं, उन सबमें सौन्दर्य का विस्तृत विवेचन हुआ है।

सुन्दर होना, सुन्दर दिखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है। मैंने अपने जीवन में सिद्धाश्रम में अनिन्द्य सुन्दर साधिकाओं और संन्यासियों को देखा है, एक से बढ़कर एक सुन्दरियों व अप्सराओं को भी साधनारत होते देखा है, जो अपनी देहयष्टि को पूर्ण यौवनवान, सौन्दर्यवान और चैतन्यवान बनाये रखने के लिए साधनारत रहती हैं।

अनिन्द्यं अद्वितीयं च सौन्दर्य यान्ति निश्चितम्।
साधनां सौन्दर्याख्याय कांक्षन्त्यपरोऽपि यत्।।

"निश्चित रूप से साधना के द्वारा अनिन्द्य सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, अप्सराएं भी सुन्दरतम बनने के लिए सौन्दर्य साधना करती हैं।"

"सौन्दर्य साधना" ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जिसे अप्सराओं ने भी सिद्ध किया, वैसे तो पूर्ण यौवनवान और सौन्दर्यवान बनने के लिए 16 प्रकार की अप्सराओं की साधनाओं का ही महत्त्व पुराणों में प्रतिपादित किया गया है, किन्तु जिसे प्राप्त करने के लिए स्वयं अप्सरायें भी लालायित हों, उस सौन्दर्य की तो मात्र कल्पना ही की जा सकती है और ऐसे अद्वितीय सौन्दर्य का प्राप्त होना जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन की सम्पूर्णता है।

इस साधना को स्त्री व पुरुष दोनों ही सम्पन्न कर अपने शरीर का पूर्ण कायाकल्प कर सकते हैं, जहाँ पुरुष यह साधना कर ऊंचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक दिव्य और तेजस्वी आँखें, उभरा हुआ वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं और इसके साथ-ही-साथ दृढ़ता, पौरुषता, साहस प्राप्त कर ऐसे सौन्दर्य का मालिक बनता है, जो दर्शनीय हो, शौर्य और साहस का प्रतिबिम्ब हो, वहीं स्त्रियां भी साँचे में ढला हुआ भरा-पूरा शरीर, गोरा रंग, अण्डाकार चेहरा, उन्नत उरोज और पतली कमर - एक ऐसा शरीर, जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, जिसे देखकर बहते हुए झरने का लुभावना नृत्य दिखाई दे, जिसके एहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, प्राप्त कर लेती है।

एक ऐसा शरीर, जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, जिसे देखकर बहते हुए झरने का लुभावना नृत्य दिखाई दे, जिसके एहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, प्राप्त कर लेती है।

साधना विधि

1. कामदेव के मंत्रों से प्रतिष्ठित 'सौन्दर्य यंत्र', 'रूपा माला' और 'नीलकर्ण मुद्रिका' इन तीनों सामग्रियों को साधना से पूर्व साधक प्राप्त कर लें।
2. यह साधना अनंग त्र्योदशी 25.4.21 से या फिर माह के किसी भी शुक्रवार के दिन इस साधना को प्रारंभ करें।
3. रात्रि को 9.35 से 12.00 बजे के मध्य यह साधना करें।
4. साधना करने से एक दिन पूर्व ही अपने साधना कक्ष को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरा कर लें। साधना काल में प्रत्येक सामग्री में नूतनता स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि सौन्दर्य साधना के लिए यह सब आवश्यक है।
5. स्वयं भी स्वच्छ व सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण करें।
6. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर, सफेद आसन पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें।
7. अपने सामने एक चौकी बिछा कर, उसके ऊपर एक कपड़ा बिछा लें, पानी से भरा एक 'कलश' रखें, उसके ऊपर पीला चावल हल्दी से रंगकर एक प्लेट में, जो उस कलश पर रखी जा सके, रख दें।
8. इसके बाद यंत्र को जल से धोकर पोंछ लें और यंत्र पर इत्र छिड़क दें तथा अपने ऊपर भी इत्र छिड़कें। धूप व दीप से वातावरण को सुगंधमय बनायें।
9. यंत्र को पीले चावलों के ऊपर स्थापित करे, इसके बाद यंत्र पर केसर से 5 बिन्दी लगायें, जो पाँच प्राणों की प्रतीक हैं, क्योंकि सौन्दर्य का प्रतिस्फुरण इन्हीं प्राणों के माध्यम से शरीर में अभिव्यक्त होता है।
10. 'मुद्रिका' को भी यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।
11. ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिर्णीं।
    ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।
    इस मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर पांच बिन्दियां लगायें तथा मुद्रिका पर भी एक बिन्दी लगायें।
12. अक्षत चढ़ायें -
    अक्षतान् धवलान् देवि शीलायांतन्दुलांस्तथा।
    आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरि।।
    यंत्र, कलश तथा मुद्रिका पर चावल छिड़कें।
13. इसके बाद धूप और दीप दिखाकर दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि अर्पित करें -
    नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च।
    पुष्पांजलिर्मयादत्ता गृहाण परमेश्वरि।।
    यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ा दें।
14. इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें - "हे देवी! आपके भीतर समाहित सभी गुण मुझमें अनुप्राणित हो।"

    सौन्दर्य भवतीरहोके,
    माधुर्य ओजमं तेजस्तथेदं।
    रूपोज्वला, रूपदिव्या प्रपन्ना,
    याचे य नित्यं त्वं देहि मात:।।

    "हे माँ! आप सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी हैं, ओज और तेज सभी दिव्य गुण आपमें समाहित हैं, मैं आप से इसी रूपराशि की प्राप्ति की कामना करता हूँ।"
15. इसके बाद निम्न मंत्र का 2 दिनों तक नित्य 27 माला मंत्र जप 'रूपा माला' से करे -

    मंत्र - "ॐ श्रीं सौन्दर्याभिवाप्तये श्रीं नम:"
16. जप समाप्ति के बाद गुरु पूजन करें व इच्छानुसार गुरु मंत्र जप करें।
17. दो दिन इसी प्रकार मंत्र जप करें, इसके बाद समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अत्यंत ही प्रभावोत्पादक एवं शीघ्र लाभप्रद है। साधना के थोड़े दिन बाद ही आप अपने भीतर विशिष्ट गुणों का आविर्भाव अनुभव करेंगे तथा शनै:-शनै: सौन्दर्य-वृद्धि अनुभव होने लगेगी और दूसरों के साथ-साथ स्वयं को भी इस बात का एहसास होने लगेगा। इस साधना को गंभीरतापूर्वक, पूर्ण श्रद्धा से करें।

साधना सामग्री (यंत्र, माला, मुद्रिका) न्यौछावर - 570/-

महाशैलं समुत्पाट्य, धावतं रावणं प्रति।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट, घोर-रावत् समुत्सृजन्।।
लाक्षा-रसारूणं रौद्रं कालान्तक यमोपगम्,
ज्वलदग्नि लसन्नेत्रं, सूर्य कोटि समप्रभम्।
अंगदाद्यैर्महा-वीरैर्वेष्टितं रुद्र-रूपिणिम्।।

अर्थात् सभी प्रकार के शत्रुओं का नाश करने वाले, अपने भक्तों की पुकार सुनकर अत्यन्त क्रोधमय स्वरूप धारण कर लेने वाले, युद्ध भूमि में श्री हनुमान लाक्षा रस के समान-रक्त-वर्णीय एवं कालान्तक हो गये हैं, उनके दोनों नेत्रों से क्रोधाग्नि निकल रही है और उनका शरीर कोटि-कोटि सूर्यों की तेजस्विता के समान उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। रुद्र रूप हनुमान अंगदादि महावीर गुणों से घिरे हुए, घोर गर्जना करते हुए, महाशैल को उखाड़ कर रावण की ओर दौड़े और उसे ललकारते हुए कहा—ठहर जा रावण! युद्ध से पलायन मत कर। ऐसे ही वीर हनुमान सभी संकटों से हमारी रक्षा करें।

अंजनी पुत्र हनुमान अतुलनीय पराक्रमी और सर्वाधिक साहसी हैं। इनकी साधना-आराधना करने से समस्त दुष्ट शक्तियाँ, प्रेत-बाधाएँ तथा जीवन में आने वाली सभी परेशानियाँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

श्री हनुमान को बजरंग बली, महावीर और पवनपुत्र भी कहा जाता है। इनकी साधना तो स्वयं महाप्रभु श्रीकृष्ण ने अर्जुन से सम्पन्न करवायी थी। कृष्ण ने अर्जुन को 'हनुमतकल्प' का तांत्रोक्त विधान समझाते हुए कहा था कि यदि तुम पवनपुत्र की कृपा प्राप्त कर लोगे तो रणभूमि में ही नहीं, अपितु जीवन के किसी भी विपत्ति भरे क्षण में भी विजय व यश तुम्हें ही प्राप्त होगा। वैसे तो श्री हनुमान जन-जन के मानस में व्याप्त हैं ही, क्योंकि प्राय: देखा गया है कि जब भी किसी पर थोड़ा सा भी संकट आता है, तो वह अपने आप हनुमान चालीसा का पाठ करने लगता है। यहाँ तक कि यदि छोटा सा बच्चा भी अकेले कहीं से गुजर रहा हो, सुनसान रास्ता हो या हल्का अंधकार हो तो वह भी जोर-जोर से बोलने लगता है-'भूत पिशाच निकट नहीं आवे...'

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि हनुमान हमारे जीवन में, साहस के सम्बल के रूप में प्रतिक्षण साथ-साथ रहते ही हैं। इन्हें श्री हनुमान की साधना का 'तांत्रोक्त हनुमत कल्प' हमें प्राप्त हुआ पूज्य गुरुदेव द्वारा। जब हम सभी लोग सम्पूर्ण भारतवर्ष की यात्रा कर, अन्त में आध्यात्मिक नगरी काशी में पहुँचे। वहाँ पर **'संकट मोचन मंदिर'** में पूज्यपाद गुरुदेव ने अत्यन्त कृपाकर, संकटनाशक श्री हनुमान की साधना सम्पन्न करायी। उस दिन सौभाग्यवश मैं भी वहाँ था, और मैं उस समय बहुत अधिक उल्लसित हुआ, जब उन्होंने इस अत्यधिक गोपनीय साधना को सम्पन्न कराने की घोषणा की, क्योंकि मैं तो अपना इष्ट हनुमान जी को ही मानता हूँ। उन्होंने मेरे जीवन में आने वाली अनेक बाधाओं और परेशानियों से मुक्ति दिलाई है।

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व गुरुदेव ने इस साधना में ध्यान रखने योग्य सावधानियों का वर्णन किया, जिसे उस समय मैंने अपनी डायरी में लिख लिया था। उस ज्ञान से सभी लाभ प्राप्त कर सकें, अत: उसे यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ-

1. हनुमान साधना यदि अनुष्ठान के रूप में करें तो पूरे साधनाकाल में पूर्णत: ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
2. **'हनुमान विग्रह या यंत्र'** जिस पर भी साधना सम्पन्न की जाए उसे जल और पंचामृत से स्नान कराने के उपरान्त तिल के तेल में सिन्दूर मिलाकर लगाना चाहिए।
3. हनुमान साधना में लाल पुष्प, लाल वस्त्र तथा लाल आसन का प्रयोग करना चाहिए।
4. नैवेद्य के रूप में गुड़ और रोटी का चूरमा अथवा बेसन के लड्डू चढ़ाने का विधान है।
5. यह साधना दक्षिणाभिमुख होकर सम्पन्न करनी चाहिए।
6. श्री हनुमानजी की साधना स्त्री, पुरुष, बालक कोई भी कर सकता है। हाँ! यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि रजस्वला स्त्री यह साधना न करे और न ही उस कक्ष में जाये, जहाँ हनुमान अनुष्ठान हो रहा हो।
7. मंत्र जप प्रात:, सांय अथवा रात्रि में जब भी व्यक्ति को अवसर मिले कर सकता है।
8. हनुमान उपासना में चरणामृत नहीं चढ़ाया जाता है।
9. इन्हें तुलसीदल अत्यधिक प्रिय है, अत: तुलसी की पत्ती चढ़ाते हैं।
10. हनुमत कल्प प्रयोग के लिए मंगलवार का दिन अत्यधिक उपयुक्त होता है।

इस प्रकार सावधानियों से अवगत कराकर, गुरुदेव ने हमें एक अत्यधिक गोपनीय मंत्र दिया और उसके प्रयोग की विधि निम्न प्रकार से स्पष्ट की-

अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर 'संकट निवारक यंत्र' स्थापित करें और तिल के तेल में सिन्दूर मिलाकर यंत्र पर आठ बिन्दियाँ लगायें। फिर ध्यान करें-

अतुलित बलधामा हेमशैला भ देहं
दनुजवनकृशानुं जातिनामाग्रगण्यम्।
सकलगुण निधान वानराणामधीशं
रघुपति प्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

इस प्रकार मंत्र बोलकर मन में यह भावना लायें कि श्री हनुमान की दिव्य और बलवान शक्तियाँ मेरे हृदय व शरीर में प्रवेश कर रही हैं। मेरे चारों तरफ के अणु उत्तेजित होकर, सशक्त वातावरण का निर्माण कर रहे हैं और मेरी मन: शक्ति को बढ़ा रहे हैं।

फिर मूलमंत्र का उच्चारण करते हुए आठ लाल पुष्प अर्पित करें। फिर अपनी परेशानियों को नम्रतापूर्वक बोलते हुए उनसे मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें। तत्पश्चात 'रक्तवर्णीय माला' द्वारा निम्न मंत्र का आठ माला मंत्र जप सम्पन्न करें-

मंत्र

ॐ हुं हुं हनुमतये फट्

साधना **27.04.21 या किसी मंगलवार** को प्रारम्भ करें, लगातार आठ दिन तक नित्य यंत्र पर पुष्प अर्पित करें तथा तेल का दीपक प्रज्वलित करें और आठ माला मंत्र जप करें। नौंवे दिन यंत्र तथा माला को जल में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार हनुमत कल्प प्रयोग सम्पन्न करने वाले साधक के जीवन में विद्या, धन, राज्यबाधा और शत्रुबाधा समाप्त हो जाती है तथा जो कुछ भी साधक की इच्छा होती है, उसे वह वर प्राप्त होता ही है।

साधना सामग्री - 450/-

नाम–संस्कृत–हिंगु। हिन्दी–हींग। गुजराती–हींग। बंगाल–हींग। मराठी–हींग। कश्मीर–अंजुदान।

वर्णन–हींग एक प्रकार के वृक्ष का दूध होता है। यह दूध जमकर गोंद की शकल में हो जाता है। इसके वृक्ष ईरान में बहुत होते हैं और यह ईरान से ही भारत में बिकने को आती है। जो हींग कुछ कालापन लिये भूरे रंग की, उग्र गन्धयक्त, अत्यन्त तीक्ष्ण स्वादवाली और त्वचा पर लगाने से जलन उत्पन्न करने वाली होती है वही उत्तम होती है। उसे हीरा हींग कहते हैं।

गुण, दोष और प्रभाव–आयुर्वेदिक मत से हींग पित्तजनक, गरम, ह्रदय को हितकारी, कड़वी, सारक, चरपरी, हलकी, तीक्ष्ण, रुचिकारक, पाचक, अग्निदीपक, स्निग्ध, मलस्तम्भक तथा श्वास, खाँसी, कफ, आफरा, गुल्म, शूल, ह्रदय रोग,अजीर्ण, कृमि और उदर रोग को नष्ट करती है।

हींग का उपयोग भारत में कई सौ सालों से मसाले के रूप में किया जाता है। दाल, सब्जी या साधारण खाने में हींग का छौंक स्वाद को कई गुना बढ़ा देता है। यह सिर्फ रसोई में ही उपयोग के लिए नहीं है, यह एक बेहतरीन औषधि भी है।

महर्षि चरक के अनुसार हींग दमा के रोगियों के लिए रामबाण औषधि है। कफ का नाश करने, गैस में राहत हेतु, पक्षाघात के रोगियों के लिए, आँखों के लिए बेहद लाभदायक होती है।

- सौंठ, काली मिर्च, छोटी पीपल, अजवाइन, सफेद जीरा, काला जीरा, शुद्ध घी में भुनी हींग और सेंधा नमक सब समान मात्रा में बारीक पीस लें। इस चूर्ण को रोजाना खाने के बाद 2 ग्राम/ 4 ग्राम की मात्रा में पानी से लें, नियमित सेवन से गैस की समस्या समाप्त होती है।
- हींग पानी में घोलकर नाभि के आसपास लेप करने से या घी में भुनी हींग शहद में मिलाकर खाने पेट दर्द में आराम मिलता है।
- हींग चने की बराबर का टुकड़ा निगल लेने से पेट दर्द में बहुत जल्द लाभ होता है।
- पेट दर्द में 2 ग्राम हींग आधा किलो पानी में उबालें चौथाई बचे तो इसे हल्का गर्म कर पी लें।
- हींग पानी में मिलाकर घुटनों पर लेप करने से घुटनों का दर्द ठीक होता है।
- दांत दर्द में दर्द वाले स्थान पर हींग लगायें, राहत मिलेगी।
- हींग पानी में उबाल कर कुल्ला करने से दांत दर्द में राहत मिलेगी।
- शुद्ध हींग पानी में घोलकर कुछ बूंदें रोजाना नाक में डालें, माइग्रेन से छुटकारा मिल जायेगा।
- पसलियों में दर्द हो तो पानी में घोल कर पसलियों में लेप करें, आराम मिलता है।
- बच्चों का न्यूमोनिया में हींग का पानी थोड़ी-थोड़ी मात्रा में देते रहने से बहुत आराम मिलता है।
- हींग के नियमित प्रयोग से महिलाओं के गर्भाशय का संकुचन होता है और मासिक धर्म से जुड़ी परेशानियां दूर हो जाती है।
- गन्ने के रस में सिरके के साथ थोड़ा हींग पाउडर मिलाये। सुबह-शाम दाद पर लगायें कुछ ही दिनों के प्रयोग से दाद खत्म हो जायेगा।
- यदि कोई जहर खा ले तो उसे तुरंत हींग का पानी पिलाएं ऐसा करने से उल्टी के द्वार जहर बाहर निकल जाता है और जहर का प्रभाव कम हो जाता है।

- हिस्टीरिया के रोगी को हींग सुंघाने से तुरंत होश आ जाता है।
- हींग का नियमित प्रयोग निम्न रक्तचाप और दिल की बीमारियों में लाभदायक है।
- अगर किसी जख्म पर कीड़े पड़ गये हों तो उस जगह पर हींग का चूर्ण लगाने से कीड़े मर जाते हैं।
- पेट का फूलना, उदरशूल, कब्जियत, आमाशय और आंतों की शिथिलता, अपचन और कृमिरोग में हींग बहुत गुणकारी होती है, इन रोगों में हींग को अजवायन के साथ देते हैं। आँतों के रोग में तथा कृमि रोग में हींग के पानी का एनीमा देना चाहिए।
- गृध्रसी, अर्दित, पक्षाघात, आक्षेप इत्यादि वात रोगों में हींग को देने से बहुत लाभ होता है। मलेरिया ज्वर में भी यह एक उपयोगी वस्तु है। ज्वर के अन्दर सन्निपात का लक्षण दिखाई देने पर 'हींगकर्पूर-बटी' देना चाहिए। अगर रोगी में गोली को निगलने की सामर्थ्य न हो तो गोली को अदरक के रस में पीसकर उसको जबान पर लगा देना चाहिए। इससे नाड़ी की गति में सुधार होता है। हाथ-पांवों की कम्पन मिटती है।
- हृदय-रोगों में भी हींग एक उत्तम वस्तु है। छाती की छड़कन, हृदय का शूल, घबराहट, चक्कर आना इत्यादि रोगों में तथा हृदयोदर में 'हींगकर्पूर-वटिका' देने लाभ होता है।
- हींग को शुद्ध करने की विधि—आयुर्वेद में हींग को भी शुद्ध करके उपयोग में लेने का विधान है। इसको शुद्ध करने की विधि इस प्रकार है—लोहे के पात्र में घी के अन्दर हींग को डालकर आग पर रख दें, जब कुछ लाल हो जाय तब उतार कर काम में लें।
- हिंग्वष्टक चूर्ण—सोंठ, मिर्च, पीपर, जीरा, स्याह जीरा, अजमोद, सेंधा नमक काला नमक ये आठों चीजें एक-एक तोला और हींग तीन माशा इन सब चीजों का चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को तीन माशे की मात्रा में लेने से सब प्रकार के उदररोग मिटते हैं।
- मात्रा—हींग की मात्रा दो रत्ती से 6 रत्ती तक होती है।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

फॉर्म नं. 4
(नियम-8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान : जोधपुर
2. प्रकाशन की अवधि : मासिक
3. मुद्रक : श्री अरविन्द श्रीमाली
4. प्रकाशक : श्री अरविन्द श्रीमाली
5. सम्पादक का नाम : श्री अरविन्द श्रीमाली
   क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ
   पूरा पता : 1 हाईकोर्ट कॉलोनी, डॉ. श्रीमाली मार्ग, जोधपुर-342001(राज.)
6. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या साझेदार हों : श्री अरविन्द श्रीमाली

मैं अरविन्द श्रीमाली एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार दिया गया विवरण सत्य है।

अरविन्द श्रीमाली
(मुद्रक प्रकाशक)

दुःख से प्रभु की सामीप्यता
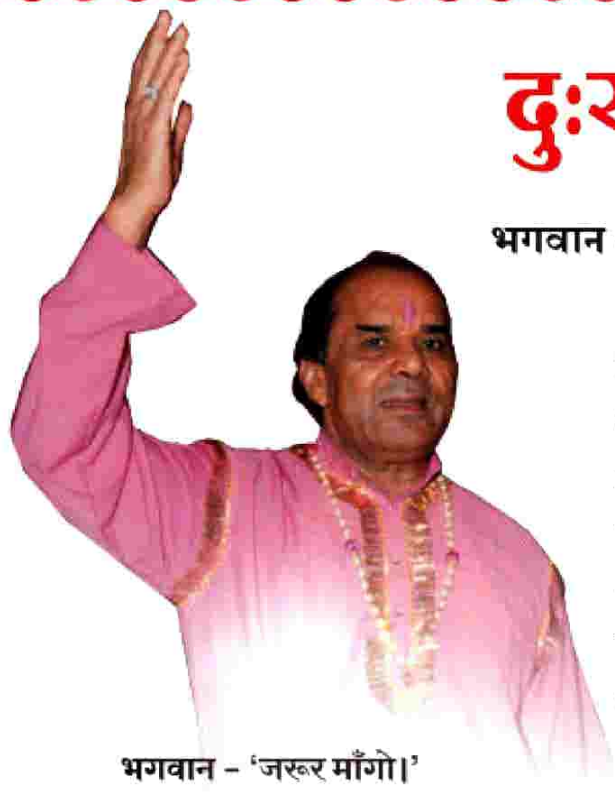
भगवान श्रीकृष्ण ने कुंती जी से पूछा कि मैं आपकी क्या सेवा करूँ।

उन्होंने जवाब दिया कि 'आप वह हैं जो हमारी इच्छाओं को हमारी इच्छा और प्रार्थनाओं से पहले ही जान लेते हैं और समय-समय पर जैसा जिसके लिये जरूरी होता है, उसको वैसा ही देते रहते हैं। लेकिन चूँकि आप आज बहुत प्रसन्न मालूम होते हैं, इसलिये मैं आज आपसे कुछ माँगे बगैर न रहूँगी और यदि आप किसी कारणवश देने से इंकार करेंगे, तो भी मैं लिये बगैर न रहूँगी; मैं आपको आपका वायदा हमेशा याद दिलाऊँगी। ऐसा न हो कि लोग आपको वायदा शिकन यानी वादा पूरा न करने वाला कह बैठे। इसलिये दीजिये, प्रभो! मैं माँगने लगी। आपके खजाने में सबसे प्रिय वस्तु है, मैं उसी को माँगूंगी।'

भगवान - 'जरूर माँगो।'

कुन्ती - 'हाँ, शायद आप इसलिये जल्दी कर रहे हैं कि मैं जल्दी में उस रत्न को भूलकर कुछ और ही माँग बैठूँ।'

प्रभु - 'तो क्या मैं कंजूस हूँ?'

कुन्ती - 'नहीं, यह तो नहीं; लेकिन फिर भी शायद...'

भगवन - 'अच्छा तो सोच समझकर माँगो।'

कुन्ती - 'लीजिये, प्रभो! अब मैं खुश हूँ। मुझको वह रत्न याद आ गया जो आपके खजाने में सबसे सुन्दर है। दे दीजिये और आप स्वयं ही दे दीजिये।'

'क्या धन?'

'नहीं।'

'इज्जत? स्वर्ग का सुख?

'नहीं।'

'चमत्कार की शक्तियां?'

'नहीं।'

'बड़े-बड़े लोकों का राज्य?'

'जी नहीं।'

'ऋद्धि-सिद्धियाँ?'

'नहीं।'

भगवान - (हैरान होकर) 'तो आखिर ऐसा क्या, जिसको आप बड़ा रत्न कहती हैं?'

कुन्ती - 'यही तो मैं कहती थी कि आप वह मुझे न देंगे, क्योंकि मैं उसके लायक नहीं।'

भगवान् - 'नहीं, नहीं: आप सब लायक हैं। माँगिये, माँगिये, जल्दी माँगिये; हम सब कुछ देंगे। मुझे याद नहीं आता कि आखिर वह कौन सी वस्तु है, जो इनसे भी अधिक प्रिय है।'

कुन्ती - 'दे तो देंगे?'

भगवान - 'अवश्य।'

कुन्ती - 'लेकिन आप कहीं यह कहकर टाल न दें कि वह चीज तुम्हारे काम की नहीं, इसलिये न देंगे।'

भगवान - 'आखिर हम जो करेंगे ठीक ही तो होगा।'

कुन्ती - 'तो ठीक है, जो आपकी इच्छा हो कीजिये; लेकिन मैं उस रत्न को जरूर माँगूंगी।'

भगवान - (प्रसन्न होकर) 'कुन्तीजी, जरूर माँगिये।'

कुन्ती - 'प्रभो, तो फिर मुझको दु:ख दिये जाइये।'

भगवान (चौंककर) 'हैं! यह क्या माँगा? दु:ख? और फिर मैं आपको दूँ? मैं तो आपको दु:खों से मुक्त करने आया हूँ, न कि दु:ख देने!'

कुन्ती - 'प्रभो! दु:ख जब आप दे देंगे, मैं दु:खों से मुक्त हो जाऊँगी।'

भगवान - 'यह क्या बातें कर रही हो? दु:ख लेकर दु:खों से मुक्त कैसे हो सकती हो?'

कुन्ती - 'प्रभो! पहले तो मैं इस बात से सुखी होऊँगी कि जो मैंने आपसे माँगा था, वह मुझको मिला; और दूसरे, जो-जो भाव उस दु:ख से संबंध रखते हैं, उनकी वजह से सुखी होऊँगी।'

भगवान - 'तो क्या हम जान सकते हैं कि वे भाव क्या हैं?'

कुन्ती - 'मैं समझती हूँ कि जीवन का लक्ष्य आपकी

समीपता और आपकी याद है। मैं अभी तक ऐसी नहीं बनी कि सुख में आपको याद कर सकूँ। इसलिये, प्रभो! वह दु:ख मेरे लिये अच्छा है कि जिससे आप हमेशा याद आयें। इसलिये दु:ख को प्यार करने और माँगने का पहला भाव मेरा यह है कि उससे आप याद आयें और लगातार याद आयें। चूँकि दु:ख से आप याद आयेंगे, इसलिये दु:ख से भी मुझे प्यार होगा; और जिस चीज से प्यार हो, वह दु:ख कहाँ रहा? क्योंकि दु:ख प्रतिकूल अवस्था का नाम है। जहाँ प्रतिकूलता नहीं, वहाँ दु:ख नहीं। हे प्रभो! मैं तो लोभिन हूँ, नाममात्र को दु:ख माँग रही हूँ। वास्तव में तो सुख ही माँग रही हूँ।

'दु:ख मुझको इसलिये प्यारा है, कि इससे आपकी याद आती है। और चूँकि आपकी याद हर दु:ख को मिटाने वाली है, इसलिये वह खुद ही जाता रहेगा। मैं सब दु:ख सह लूँगी, लेकिन आपको भूलने का दु:ख नहीं सह सकती। तीसरा भाव यह है कि मैं देखूँ कि जो चीज मुझे मेरे प्रभु से मिली है, उसको मैं कहाँ तक प्रेम कर सकती हूँ।'

'संसार का तू माली है, तूने बाग में दु:ख और सुख के काँटे और फूल बनाये हैं। अगर फूल तेरे हैं तो काँटे किसके हैं? तूने एक ही जल से दोनों को सींचा है। मैं दोनों से प्यार करूँगी, बल्कि तेरे काँटों से अधिक प्रेम करूँगी; क्योंकि वह तेरे काँटे हैं। हे प्रभो, मैं इस तरह दु:खों से प्रेम करना भी सीख लूँगी।'

'एक प्रेमी का उसके प्रीतम ने सुन्दर लिबास फाड़ डाला। वह अपने प्रीतम के ध्यान में हर समय रोता रहता था, चिल्लाता था और इस कोशिश में था कि उसको कोई चीज भी तो अपने प्रीतम की मिल जाए। जब उसने देखा कि उसका सुंदर लिबास उसके प्रीतम के हाथों से फट गया है तो वह नाचने लगा और कहने लगा कि यही सबसे सुंदर लिबास है कि जिसको प्रीतम ने अपने हाथों से फाड़ा है। लोग उसकी हँसी उड़ा रहे थे कि बुद्धिमानों और प्रतिष्ठा वालों की सभा में फटा लिबास पहने आया है। उसके किसी मित्र ने उसको और भी सुंदर लिबास लाकर दिया कि लोग आ रहे हैं, तुम अंदर चलकर इसको बदल लो; तो उसने उसको उठाकर फेंक दिया और कहा कि 'तू क्या जानता है कि इस फटे वस्त्र का क्या मूल्य है? इस प्रेम की क्रिया में जो चीज मुझे नजर आ रही है, उसको तुम देख नहीं सकते और जो तुम देख रहे हो, उसको मैं नहीं देखता।' वह कभी उस फटे वस्त्र को चूमता था, कभी प्यार करता था और कभी उस वस्त्र को देख-देखकर रोता कि 'तू खुशनसीब है कि जिसको मेरे प्रीतम ने छुआ तो है। काश, वह बजाय तुम्हारे मुझे फाड़ता !' वस्त्र बोला - 'क्यों घबड़ाता है, क्यों ईर्ष्या करता है? तू मुझसे अधिक भाग्यशाली है! अगर उसने मुझको फाड़ा तो तेरे हृदय को भी तो अपने प्रेम से चाक-चाक, तार-तार कर दिया!!' देखिये, अगर एक प्रेमी अपने प्रीतम के हाथ से मिले फटे वस्त्रों से भी प्रेम कर सकता है तो क्या कारण है कि प्रभो! मैं आपके दिये हुए दु:खों से प्रेम न करूँ?'

भगवान - 'तो फिर आप दु:ख माँग रही हैं या सुख?'

कुन्ती - 'प्रभो! माँग तो दु:ख ही रही हूँ, लेकिन वह दु:ख जिसमें असली सुख हो।'

गोया यह बात संसार के लोगों के लिये शिक्षाप्रद साबित होती है। अगर हम दु:ख को उसका भेजा समझें और उससे प्यार इसलिये करें कि उससे भगवान की याद सदैव आती है तो यह भी तो कितना बड़ा तरीका दु:ख को सुख बनाने का है! और अगर कोई कहता है कि 'नहीं, दु:ख हमारे पाप कर्मों के फल में आ रहा है, प्रभु का दिया नहीं। तो क्या प्रभु जालिम हैं जो हमको दु:ख देंगे ?' अगर दु:ख पाप-कर्मों का भी फल है, तो भी उसे क्यों न माँगा जाए और यों (दु:ख) लेकर सब (पाप कर्मों) को खत्म क्यों न किया जाए?

क्योंकि मांगने पर भगवान हमें कृपास्वरूप उसे सहने की शक्ति भी तो प्रदान करेंगे।

जब सब गुजर रहा है, तो यह भी गुजर जाएगा। अगर पाप-कर्मों का फल दु:ख है और वह आये बगैर भी न रहेगा तो आने दीजिये। आपको तो धूप में चलना आपके कर्मों के फल रूप में प्राप्त हुआ है। लेकिन आप अपने विचाररूपी छाते से उस सफर को आसानी से तय करने की कोशिश करें; समझें कि ये दु:ख आये हैं - हमारे पापों को कम करने के लिये, जो किसी और तरह कम नहीं हो सकते थे। अच्छा हुआ। हालांकि मंजिल कड़ी है, लेकिन इसको किसी-न-किसी वक्त काटना तो पड़ता ही। अब धीरज यह है कि दु:ख तो कट ही जायेगा, साथ-साथ पाप-कर्म भी नष्ट हो जायेंगे। ऐ दु:ख! तू मुबारक है, जो मेरे पापों को नष्ट तो करता है और मुझको शुद्ध करके प्रभु के समीप पहुँचाता है।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष-माह के प्रारम्भ के दिन कष्टप्रद रहेंगे।कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। कार्य बीच में छूट सकते हैं। पुराना रोग गंभीर हो सकता है। उदासी एवं निराशा रहेगी। परिवार में प्रेम भावना रहेगी। विद्यार्थी वर्ग परिश्रम का फल पायेगा। जीवन का सपना पूरा होता दिखाई देगा। दुश्मनों से सावधान रहें, माह के मध्य में घर में अशांति हो सकती है। संयम का व्यवहार करें। आय में वृद्धि होगी। उत्साह एवं मनोबल बढ़ेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। तीसरे सप्ताह कोई अनहोनी घटना चिंता पैदा कर सकती है। आय की वृद्धि होने से परेशानियों में कमी आयेगी। मुसीबत में दूसरों की सहायता करेंगे। गलत मार्ग से धन संग्रह से बचें। विघ्नहर्ता गणपति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 7, 15, 16, 17, 24, 25, 26

वृष-सप्ताह का प्रारम्भ समृद्धिदायक है। अपनों का सहयोग मिलेगा। बाधाएं दूर होगी, जमीन-जायदाद का निपटारा हो जायेगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधान हरें। कोई व्यक्ति धोखा दे सकता है, दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप न करें। कोर्ट का फैसला आपके अनुकूल होने की पूरी संभावना है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। दूसरा सप्ताह अनुकूलता प्रदान करेगा। मनचाहा कार्य मिलने से सुकून मिलेगा। नया वाहन खरीद सकते हैं। रुके हुये पैसे वसूल कर सकेंगे। नौकरीपेशा लोगों की कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। पारिवारिक समस्या हो सकती है। तीसरे सप्ताह में निर्णय सोच-समझ कर करें। अचानक नुकसान हो सकता है। किसी अनजान के वाद-वाद में संयम रखें। आखिरी तारीख में लाभ के साथ हानि उठानी पड़ सकती है। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27, 28

मिथुन-प्रारम्भ लाभकारी रहेगा। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। अदालतों के चक्कर काटने से छुटकारा मिलेगा। दूसरे सप्ताह में आर्थिक परेशानियां रहेंगी। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। काम-धंधे में प्रगति होगी, कोई भी कार्य हड़बड़ी में न करें, मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है। शत्रुओं के सामने अपनी कोई कमजोरी उजागर न करें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। कार्यों में आ रही अड़चनें और बाधाएं दूर होंगी। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। मन में भक्ति की भावना रहेगी। लम्बी दूरी की यात्रा सफलता देगी। आखिरी सप्ताह में सावधान रहें। महत्वपूर्ण कार्य कल पर न छोड़ें, आलस्य न करें। मन की स्थिरता के लिए गुरु मंत्र जप अधिक से अधिक करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 28, 29

कर्क-माह का प्रारम्भ लाभकारी होगा। किसी दूसरे व्यवसाय से भी लोगा होगा। कहीं से रुके हुये पैसे प्राप्त होंगे। कार्य में प्रगति होगी, विद्यार्थी वर्ग अपनी सफलता से प्रसन्न होगा। इस समय परिवार में अनबन का माहौल रहेगा। समय थोड़ा प्रतिकूल है। माह के मध्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। कोई अनहोनी घटना हो सकती है। शत्रुओं से सावधान रहें। कई उलझनें परेशानी पैदा करेंगी। आखिरी सप्ताह में परिस्थितियाँ बदलेंगी। जमीन का सौदा भी हो सकता है। कोर्ट-कचहरी के झमलों से दूर रहें, गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें अन्यथा कर्ज लेने की नौबत आ सकती है। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23

सिंह-सप्ताह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। स्वयं में आत्मविश्वास में कमी महसूस करेंगे, वाहन धीमी गति से एवं सावधानी से चलाएं। उसके आद अचानक परिस्थितियां बदलेंगी। धनप्राप्ति के योग हैं। जीवनसाथी का साथ मिलेगा, संतान भी सहयोग करेगी। आपकी अच्छी छवि से शत्रु पक्ष परेशान होगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा के उन्नति के अवसर हैं। कोई अशुभ समाचार सुनने को मिल सकता है। यात्रा से लाभ होगा, नये मित्र बनेंगे। नशीली वस्तुओं से दूर रहें। कोई लांछन लग सकता है। उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। सोच-समझकर लेन-देन करें। आप अपनी सूझ-बूझ से बिगड़े कार्यों को निपटा लेंगे। रोजगार के अवसर आयेंगे। आमदनी में वृद्धि होगी। आप पत्रिका में प्रकाशित भैरव प्रयोग सम्पन्न करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 7, 15, 16, 17, 24, 25, 26

कन्या-प्रारम्भ सुखप्रद है। महत्वपूर्ण योजनाएं बनेगी। आर्थिक उन्नति के रास्ते खुलेंगे। कोई भी कार्य आवेश में आकर न करें। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी। मित्रों से व्यवहार अच्छा रहेगा। कोई अशुभ समाचार रुकावट पैदा करेगा। आर्थिक नुकसान से मानसिक अशांति रहेगी, शत्रु यह देखकर प्रसन्न होंगे। माह के मध्य के बाद बदलाव आयेगा। यात्रा से लाभ होगा, शेयर बाजार से लाभ के अवसर

हैं। किसी भी गलत कार्य में संलग्न न हों। किसी अनजान से टकराहट पर संयम रखें, आपकी छवि समाज में अच्छी बनेगी, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। परिवार में कुछ अनबन हो सकती है। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। नौकरीपेशा लोगों की पदोन्नति के अवसर हैं। इस माह आप **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27, 28

तुला-माह के प्रारम्भ के 3-4 दिन शुभफल देंगे। कोई मांगलिक कार्य भी हो सकता है। जायदाद का मामला सुलझेगा। नौकरीपेशा लोगों के उच्चाधिकारियों से सम्बन्ध होंगे। इसके बाद उतार- चढ़ाव की स्थिति से परिवार में टेंशन हो सकती है। आप बिगड़े कार्यों को सुधारने में सक्षम होंगे। विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम का फल मिलेगा। व्यापार में वृद्धि होगी। नये कार्य को प्रारम्भ करने से बचें। वाहन चालन में सावधानी रखें। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें। किसी अनजान व्यक्ति की सहायता व्यापार वृद्धि में सहायक होगी। अविवाहितों की सगाई हो सकती है। विरोधी परास्त होंगे, आखिरी सप्ताह में अनाश्यक खर्च बढ़ेंगे। अवांछित साधनों से पैसा कमाने का प्रयास न करें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। सच्चाई का साथ दें। **माँ दुर्गा साधना** करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 28

वृश्चिक-माह का प्रारम्भ मध्यम फलकारी है। अपने साहस से आगे बढ़ सकेंगे। सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में अशांति का वातावरण बनेगा। आमदनी से अधिक खर्च होगा। इस समय जोखिम के कार्यों से बचें। टेंशन का समय है, आपकी कोई छुपी बात उजागर होने से मन अशांत होगा। लेन-देन में सतर्क रहें। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है। जीवनसाथी से गलतफहमी दूर होकर प्यार का माहौल बनेगा। साझेदारी में अनबन हो सकती है। वांछित रुपयों की आवक न होने से खिन्नता रहेगी। आलस्य से नुकसान हो सकता है, उत्साह की कमी रहेगी। नया कारोबार प्रारम्भ करने से बचें। विदेश यात्रा हो सकती है। आप **तारा साधना** करें।

शुभ तिथियाँ- 3, 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24

धनु-माह का प्रारम्भ असंतोषप्रद रहेगा। मन में अशांति रहेगी। जीवनसाथी के साथ तनाव की स्थिति रहेगी। नौकरीपेशा लोगों को आगे बढ़ने के अवसर हैं। आप निश्चय करके ही सफलता पा सकेंगे। किसी कागज पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें, किसी मुसीबत में पड़ सकते हैं। अपनी भाषा पर संयम रखें। यात्रा से लाभ होगा। कोई शुभ समाचार मिल सकता है, अनावश्यक खर्च से बचें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। नशे आदि से दूर रहें। विरोधी परास्त रहेंगे, मित्रों का सहयोग मिलेगा। संतान पक्ष सहयोग करेगा। नया वाहन अभी खरीदने से परहेज करें। पुरानी बीमारी गम्भीर रूप ले सकती है फालतु के खर्च अधिक होंगे। आप **लक्ष्मी वरवरद माल्य** धारण करें।

शुभ तिथियाँ-5, 6, 7, 15, 16, 17, 24, 25, 26

मकर-प्रारम्भ अनुकूलता से होगा। कहीं से लाभ भी हो सकता है। फालतू के कार्यों में अपनी ऊर्जा बर्बाद न करें। सांसारिक कार्यों के लिए यह समय श्रेष्ठ नहीं है। धार्मिक स्थलों की यात्रा से मानसिक शांति मिलेगी। जमीन-जायदाद के मामले सुलझेंगे। सट्टेबाजी जैसी प्रवृत्ति से दूर रहें। संतान अच्छे नम्बरों से पास होगी। घर में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। अनावश्यक कलह से किसी उलझन में फंस सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। तीसरे सप्ताह में सावधान रहें, उलझनें बढ़ेंगी। आप संयम एवं समझदारी से ही

सर्वार्थ सिद्धि योग -	अप्रैल - 1, 11, 13, 23, 25, 29
अमृत सिद्धि योग-	अप्रैल- 13, 25
रवि योग-	अप्रैल- 3, 16, 18, 21, 25

सफलता पायेंगे। भाइयों से प्रेम व्यवहार बढ़ेगा। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। आखिरी तारीखों में मिलाजुला असर रहेगा। ज्यादा लालच में न पड़ें। **कायाकल्प दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 7, 8, 9, 17, 18, 19, 26, 27, 28

कुम्भ-प्रारम्भ के दिन लाभप्रद हैं। आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा। विपरीत परिस्थितियों में मित्रों का सहयोग ले सकेंगे। इसके बाद परिस्थितियाँ अनुकूल न होने से कष्ट होगा। दूसरे सप्ताह में व्यापार में वृद्धि एवं परिश्रम का उचित परिणाम मिलेगा। इस समय का सदुपयोग करें। परन्तु सोच-समझ कर निर्णय लें। अवांछित साधनों से पैसा कमाने से बचें। मित्रों से कठोर भाषा का उपयोग न करें, काम बिगड़ सकते हैं। बिना पढ़े महत्वपूर्ण कागजातों पर हस्ताक्षर न करें। उतार-चढ़ाव का समय है, ज्यादा लालच के सौदों से बचें। विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगी। परिवार में मेलजोल का वातावरण रहेगा। आखिरी सप्ताह अशुभकारी है, परिस्थितियाँ विपरीत हैं। आय के साधन कम होंगे, नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहें। नौकरीपेशा लोगों को कोई शुभ समाचार मिल सकता है। **तारा साधना** करें।

शुभ तिथियाँ-1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 29, 30

मीन-माह का प्रारम्भ शुभ समाचार लायेगा। किसी अनजान की मुलाकात आपकी दिनचर्या बदल देगी। रुके हुये कार्य पूरे होंगे, संतान पक्ष के कार्य खुशी देंगे। कोई छिपी बात सामने आने से अशांति रहेगी। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान दें। आर्थिक स्रोत बढ़ेंगे। पति-पत्नी में पूर्ण सहयोग की भावना रहेगी। इस समय के व्यापारिक अनुबंध भविष्य में लाभ देंगे। तीसरे सप्ताह में लाभ के साथ नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। इस समय कार्यों में विघ्न आयेंगे। वाणी में मिठास रखें, सफलता मिलेगी, गृहस्थ सुखपूर्ण रहेगा। आखिरी की तारीखों में सचेत रहें, नया व्यापार प्रारम्भ न करें, आर्थिक हानि की सम्भावना है। वाहन चालन में सावधानी रखें। बच्चों की पढ़ाई पर भी ध्यान रखें। निर्णय सोच-समझ कर लें। विघ्नहर्ता **गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23, 24

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

02.04.21	शुक्रवार	अपूर्ण इच्छापूर्ति दिवस
06.04.21	मंगलवार	दस महाविद्या दिवस
07.04.21	बुधवार	पाप मोचनी दिवस
13.04.21	मंगलवार	चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ
17.04.21	शनिवार	श्री पंचमी
20.04.21	मंगलवार	दुर्गाष्टमी
21.04.21	बुधवार	सद्गुरुदेव अवतरण दिवस तारा जयंती, राम नवमी
23.04.21	शुक्रवार	कामदा एकादशी
25.04.21	रविवार	अनंग त्र्योदशी
27.04.21	मंगलवार	हनुमान जयंती (दक्षिण भारत)

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक		श्रेष्ठ समय
रविवार (अप्रैल-4, 11, 18, 25)	दिन	06:00 से 10:00 तक
	रात	06:48 से 07:36 तक
		08:24 से 10:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
सोमवार (अप्रैल-5, 12, 19, 26)	दिन	06:00 से 07:30 तक
		10:48 से 01:12 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अप्रैल-6, 13, 20, 27)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:00 से 12:24 तक
		04:30 से 05:12 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		12:24 से 02:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अप्रैल-7, 14, 21, 28)	दिन	07:36 से 09:12 तक
		11:36 से 12:00 तक
		03:36 से 06:00 तक
	रात	06:48 से 10:48 तक
		02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (अप्रैल-1, 8, 15, 22, 29)	दिन	06:00 से 08:24 तक
		10:48 से 01:12 तक
		04:24 से 06:00 तक
	रात	07:36 से 10:00 तक
		01:12 से 02:48 तक
		04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अप्रैल-2, 9, 16, 23, 30)	दिन	06:48 से 10:30 तक
		12:00 से 01:12 तक
		04:24 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		01:12 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अप्रैल-3, 10, 17, 24)	दिन	10:30 से 12:24 तक
		03:36 से 05:12 तक
	रात	08:24 से 10:48 तक
		02:00 से 03:36 तक
		04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अप्रैल 21

11. भगवान सूर्य को जल अर्पित करें और तीन प्रदक्षिणा करें।
12. आज सोमवती अमावस्या है, स्नान कर कुछ अन्न दान करें।
13. आज से नवरात्रि प्रारम्भ है, घट स्थापन कर माँ दुर्गा का पूजन करें।
14. प्रातः पूजन के बाद 11 बार 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' मंत्र का जप करके जाएं।
15. आज गणपति मंत्र 'ॐ गं गणपतये नम' का 11 बार उच्चारण करके जाएं।
16. मां दुर्गा का मंत्र 'ॐ दुं दुर्गाय नमः' का 21 बार जप करके जाएं।
17. घी का दीपक लगायें एवं 'श्रीं' बीज मंत्र का 108 बार जप करें।
18. प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि सी.डी. का श्रवण करें।
19. गाय माता को रोटी खिलायें।
20. आज नवार्ण मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
21. आज सद्गुरु अवतरण दिवस पर पत्रिका में प्रकाशित पूजन करें।
22. पीपल के वृक्ष में जल अर्पित करके 1 परिक्रमा करें।
23. आज के दिन कोई भी मनोकामना के साथ देवी मन्दिर में 3 पुष्प चढ़ायें।
24. आज सरसों का तेल एवं कुछ दक्षिणा दान करें।
25. आज प्रातः निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं -'ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व रोग नाशय फट।'
26. 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' का 11 बार उच्चारण करें।
27. प्रातः पूजन के साथ हनुमान चालीसा का 1 पाठ करें।
28. आज लक्ष्मी पूजन करके कार्य पर जाएं।
29. तुलसी के वृक्ष के पास दीपक जलायें।
30. काली मिर्च के पांच दाने अपने ऊपर सात बार घुमा कर दक्षिण में फेंक दें।

मई 21

1. प्रातः पूजन के बाद 'ह्लीं' मंत्र का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
2. 'ॐ घृणीं सूर्याय आदित्याय नमः' 11 बार मंत्र जप करके जाएं।
3. किसी मनोकामना के साथ मनोकामना गुटिका (न्यौ. 150/-) 'ॐ नमः शिवाय' का 11 बार उच्चारण कर किसी शिव मन्दिर में चढ़ा दें।
4. सरसों के तेल का दीपक हनुमान विग्रह के समक्ष लगायें।
5. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-'ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ'।
6. भगवान विष्णु का पूजन करके जाएं।
7. आज एकादशी को अन्न का दान दक्षिणा के साथ करें।
8. आज शनि मुद्रिका (न्यौ. 150/-) धारण कर सकते हैं।
9. दुर्लभोपनिषद सी.डी. श्रवण करें।
10. शिव मन्दिर में अभिषेक करें।

प्रत्येक युग में
भगवान युग की आवश्यकता
के अनुरूप स्वरूप ग्रहण कर
इस धरा पर अवतरित होते हैं,
अपने भक्तों के कष्ट निवारण
करने के लिए -
यह एक सुस्थापित धारणा है
हिन्दू धर्म की।
किन्तु क्या उनके प्रत्येक
आगमन में कोई मूक संदेश
भी नहीं निहित होता? इसी की
समुचित विवेचना कर रहा है
यह लेख इस नृसिंह जयंती के
अवसर पर . . . .

यदि आप साधक हैं तो
केवल नर नहीं नर केसरी बनिए इस

नृसिंह साधना से

ऐसा व्यक्ति जिसके प्राणों का ही हनन किया जा चुका हो, कोई आवश्यक नहीं, कि जीवित रहते हुए भी वह जीवित व्यक्तियों की श्रेणी में आता हो, क्योंकि केवल श्वास-प्रश्वास के चलते रहने को ही तो 'जीवन' नहीं कहा जा सकता।

जिस प्रकार से पुनर्जन्म का विश्वास हिन्दू धर्म का एक मूल-भूत विश्वास है, उसी प्रकार से इस बात में दृढ़ आस्था है, कि ईश्वर अपने भक्तों के कष्ट-निवारणार्थ समय-समय पर अवतरण के माध्यम से आकर उन्हें पाप-ताप-संताप से मुक्त करने की क्रिया करते हैं। यह भी हिन्दू धर्म का एक आधारभूत विश्वास है। दोनों ही विश्वासों के पीछे जो मुख्य बात है, वह यही है, कि भारतीय चिंतन में कभी भी ईश्वर से अलगाव की कल्पना तक नहीं की गई है। जिस प्रकार जीवन एक सहज घटना है उसी प्रकार ईश्वर का निश्चित कालावधि पर अवतरण भी एक सतत् घटना है, जो मत्स्यावतार से लेकर इस कलियुग में होने वाले कल्कि अवतरण के रूप में पुराणादि शास्त्रों में विस्तार से वर्णित हैं जैसा कि लोक श्रुतियों में मान्य है, जब यह धरा ढाई हजार वर्ष तक तपस्या करती है, तब ईश्वर युग के अनुरूप स्वरूप ग्रहण कर इस धरा पर अवतरण के माध्यम से अपने भक्तों का कल्याण करते हैं तथा उन्हें जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाने के उपाय सृजित करते हैं।

वस्तुतः प्रत्येक अवतरण का एक निश्चित अर्थ रहा है और सामान्य लोक विश्वास से पृथक (कि ईश्वर ऐसा प्राणी मात्र के उद्धार के लिए करते हैं) अवतरण की घटना के विशिष्ट अर्थ भी होते हैं। प्रत्येक अवतरण किसी एक या दो भक्त की विपत्ति में रक्षा करने अथवा उसके उद्धार तक ही सीमित न रह कर अनेक गूढ़ संदेश भी छिपाए हुए होता है, यद्यपि पौराणिक कथाओं से अभिव्यक्त ऐसा ही होता है, मानों ईश्वर ने किसी भक्त-विशेष की पुकार पर इस धरा पर आना स्वीकार किया और यही बात भगवान श्री विष्णु के नृसिंहावतार के संदर्भ में भी पूर्ण प्रासंगिक है।

पौराणिक गाथाओं के अनुसार भगवान ब्रह्मा के दो द्वारपालों ने एक बार भगवान ब्रह्मा की आज्ञा के पालन के क्रम में भगवान ब्रह्मा के चार प्रथम मानस पुत्रों में से एक को भीतर प्रवेश करने से वर्जित कर दिया, जिससे उन्होंने क्रोधयुक्त हो उन दोनों को राक्षस योनि में चले जाने का श्राप दे दिया। बाद में क्रोध शांत होने व वास्तविकता का ज्ञान होने पर उन्होंने द्वारपालों की प्रार्थना पर उन्हें यह वरदान दिया, कि यद्यपि उनका वचन मिथ्या नहीं हो सकता, अतः वे राक्षस योनि में तो जाएंगे ही, किन्तु उनका वध स्वयं भगवान विष्णु के हाथों से होने के कारण वे मुक्त होकर परमपद की प्राप्ति कर सकेंगे।

कालांतर में ये दोनों द्वारपाल ही क्रमशः हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकश्यप के रूप में आए, जिनके अत्याचारों से सारी धरा ही नहीं देवलोक आदि तक त्राहि-त्राहि कर पड़े जिन्हें समाप्त करने के लिए भगवान विष्णु ने दो बार अवतार लिए। हिरण्याक्ष को समाप्त करने के लिए शूकर अवतार तथा हिरण्यकश्यप को समाप्त करने के लिए नृसिंह अवतार इसी कारणवश संभव हुए।

पौराणिक गाथाओं की कथात्मक शैली में क्या तथ्य छुपे होते हैं अथवा क्या वे केवल विशिष्ट घटनाओं का कथात्मक विस्तार भर होती हैं, यह तो पृथक विवेचना और चिंतन की बात है, किन्तु जैसा कि प्रारंभ में कहा, कि प्रत्येक अवतरण स्वयं में एक संदेश भी निहित रखता है, उसी क्रम में चिंतन करने पर स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है, कि भगवान श्री विष्णु के इस विशिष्ट अवतरण (नृसिंह अवतरण) का भी एक गूढ़ संदेश है और संदेश है, 'नृ' अर्थात् मनुष्य को 'सिंह' अर्थात् पराक्रमी बनने का संदेश।

यह जीवन का एक सुस्वीकृत तथ्य है कि केवल इस युग में ही नहीं वरन् प्रत्येक युग में वही व्यक्ति जीवित रह सका है, जिसने जीवन में संघर्ष किया है। जीवन संघर्षों का एक अविराम क्रम होता है तथा इसमें जो क्षण भर चूका, जीवन उसकी प्राण शक्ति का हनन कर देता है और फिर ऐसा व्यक्ति जिसके प्राणों का ही हनन किया जा चुका हो, कोई आवश्यक नहीं, कि जीवित रहते हुए भी वह जीवित व्यक्तियों की श्रेणी में आता हो, क्योंकि केवल श्वास-प्रश्वास के चलते रहने को ही तो 'जीवन' नहीं कहा जा सकता।

वास्तव में जीवन तो उसका कहा जा सकता है, जो अपने जीवन के लक्ष्यों को सिंह की भांति झपट कर प्राप्त करने की क्षमता से युक्त हो। वन्य प्राणियों में सर्वाधिक ओजस्वी पशु सिंह को ही माना गया है, जो अनायास कभी किसी पर

यह भी जीवन का एक कटु सत्य है,

कि जब तक जीवन रहेगा तब तक समस्याएं भी आएंगी हीं, लेकिन जो साधक दृढ़ निश्चयी होते हैं, जिनके मन में सर्वोच्च बनने का भाव हिलोरे ले रहा होता है,

वे अवश्यमेव ऐसी साधना सम्पन्न कर अपने जीवन को एक नया ओज व क्षमता देते हैं,

हमला करता ही नहीं, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर अथवा क्रुद्ध हो जाने पर जब वह हुंकार भर कर खड़ा हो जाता है, तो अन्य छोटे-छोटे जानवरों की कौन कहे, मस्त गजराज भी कतरा कर निकल जाने में ही अपनी भलाई समझते हैं। ऋषियों ने भी पुरुष की इसी 'सिंहवत्' रूप में कल्पना की थी। 'सिंहवत्' बनना केवल शौर्य प्रदर्शन की ही एक घटना नहीं होती वरन् सिंहवत बनना इस कारण से भी आवश्यक है, कि केवल इसी प्रकार का स्वरूप ग्रहण करके ही जीवन की गति को सुनिर्धारित किया जा सकता है, अन्यथा एक-एक आवश्यकता के लिए वर्षों घिसट कर उसे प्राप्त करने में जीवन का सारा सौन्दर्य, सारा रस समाप्त हो जाता है।

भगवान विष्णु ने तो एक ही हिरण्यकश्यप को समाप्त करने के लिए नृसिंह स्वरूप में, पौराणिक गाथाओं के अनुसार अवतरण लिया, किन्तु मनुष्य के जीवन में तो प्रतिदिन नूतन राक्षस आते रहते हैं, जो हिरण्यकश्यप की ही भांति अस्पष्ट होते हैं, तब उनसे मुक्ति पाने का क्या उपाय हो सकता है? और यह भी सत्य है, कि यदि जीवन में अभाव, तनाव, पीड़ा (शारीरिक, मानसिक अथवा दोनों), दारिद्रय जैसे राक्षसों से एक-एक करके निपटने का चिंतन किया जाए, तो मनुष्य की आधी से अधिक क्षमता तो इसी विचार-विमर्श में निकल जाती है, शेष तो आधी बचती है, वह किसी भी प्रयास को सफल नहीं होने देती। साथ ही जीवन के ऐसे राक्षसों से तो केवल सामान्य प्रयास से ही नहीं वरन् ऐसे क्षमता युक्त प्रयास से जूझना आवश्यक होता है, जो साक्षात् नरकेसरी की ही क्षमता हो। तभी जीवन में कुछ ऐसा घटित हो सकता है, जिस पर गर्वित हुआ जा सकता है।

सामान्यतः साधना का क्षेत्र अत्यंत दुष्कर प्रतीत होता है, क्योंकि साधना जीव को वास्तविकताओं का यथावत् प्रस्तुतिकरण व विवेचन कर देती है। उसमें भक्ति जगत की भांति दिवास्वप्नों की मधुर लहर नहीं होती है, किन्तु अन्ततोगत्वा व्यक्ति का हित, साधना से ही साधित होता है, क्योंकि साधना जीवन की कटु वास्तविकताओं का यथावत् वर्णन करने के साथ-साथ उससे मुक्त होने का उपाय भी वर्णित करती चलती है। वस्तु स्थितियों का विवेचन इस कारणवश आवश्यक होता है, जिससे साधक के मन में एक सुस्पष्ट धारणा बन सके, कि अन्ततोगत्वा उसकी समस्या क्या है, किस प्रकार से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है? यहाँ नृसिंहावतार की संक्षिप्त व्याख्या से भी यही तात्पर्य था और साधकों की सुविधार्थ उस साधना विधि का प्रस्तुतिकरण भी किया जा रहा है, जो इस व्याख्या को पूर्णता देने की क्रिया है अर्थात् केवल वर्णन-विवेचन नहीं, वह उपाय भी प्रस्तुत करने का प्रयास है, जिसके माध्यम से कोई भी साधक अपने जीवन को संवारता हुआ, अपनी रग-रग में सिंह की ही लपक और शौर्य को भरता हुआ जीवन की उन समस्याओं पर झपट्टा मार सकता है, जो नित नये स्वरूप में आती रहती है तथा यह भी जीवन का एक कटु सत्य है, कि जब तक जीवन रहेगा तब तक समस्याएं भी आएंगी हीं, लेकिन जो साधक दृढ़ निश्चयी होते हैं, जिनके मन में सर्वोच्च बनने का भाव हिलोरे ले रहा होता है, वे अवश्यमेव ऐसी साधना सम्पन्न कर अपने जीवन को एक नया ओज व क्षमता देते हैं, जैसा कि नीचे की पंक्तियों में प्रस्तुत साधना विधि की भावना है।

नृसिंह साधना को मूलरूप में सम्पन्न करने के इच्छुक साधक के पास ताम्रपत्र पर अंकित नृसिंह यंत्र व नृसिंह माला आवश्यक उपकरण के रूप में होनी चाहिए। इस साधना नृसिंह जयंती (25.05.2021) अथवा किसी भी रविवार की रात्रि में सम्पन्न की जा सकती है। साधक इसमें वस्त्र आदि का रंग काला रखें तथा दिशा दक्षिण की ओर मुख करके हो। यंत्र व माला का सामान्य पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प की पंखुड़ियों से कर, तेल का एक बड़ा दीपक लगा दें व निम्न मंत्र की इक्यावन (51) मालाएं 'नृसिंह माला' से दत्तचित्त भाव से करें -

मंत्र

।। ॐ क्ष्रौं क्रौं नृसिंहाय नमः।।

OM KSHROUM KROUM NREE SINGHAAYA NAMAH

साधक यह मंत्र जप दो बार में भी सम्पन्न कर सकते हैं, अर्थात् एक बार में इक्कीस (21) माला मंत्र जप कर पुनः विश्राम कर इकतीस (31) माला मंत्र जप सम्पन्न कर सकते हैं, किंतु सम्पूर्ण मंत्र जप एक ही दिन में सम्पन्न हो जाना आवश्यक होता है।

मंत्र जप के अगले दिन सभी सामग्रियों को दक्षिण दिशा में जाकर कहीं सुनसान में गड्ढा खोदकर दबा दें तथा घर आकर स्नान कर लें। संभव है मंत्र जप के पश्चात् साधक को आगामी दस-पन्द्रह दिनों तक शरीर में विचित्र से खिंचाव आदि होते महसूस हो, किन्तु ये सभी साधना में सफलता के विशेष लक्षण होते हैं।

साधना सामग्री : 450/-

भुवनेश्वरी विवाह प्रयोग

दस महाविद्याओं में भुवनेश्वरी देवी को गृहस्थ जीवन की दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता एवं सिद्धि देने वाली अधिष्ठात्री देवी माना गया है

विवाह के सम्बन्ध में यह प्रयोग यदि कन्या स्वयं सम्पन्न कर सके, तो ज्यादा उचित रहता है अन्यथा उसके नाम का संकल्प कर कोई अन्य भी प्रयोग कर सकता है।

यह प्रयोग किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ किया जा सकता है और एक बार प्रारम्भ करने के पश्चात् जब तक प्रयोग पूर्ण न हो, मंत्र जप तो नियमित रूप से अवश्य ही सम्पन्न करते रहना चाहिए।

साधना के दिन प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर, चावलों की ढ़ेरी पर 'भुवनेश्वरी यंत्र' स्थापित करें, यंत्र के चारों ओर 'ह्रीं' बीज मंत्र कुंकुम से लिखें। एक घी का दीपक जलाएं। सर्वप्रथम अपने इष्ट देवता का ध्यान कर सिन्दूर से यंत्र पूजन करें, लाल पुष्प अर्पित करें और प्रार्थना करें कि कार्य सम्बन्धी मनोकामना शीघ्र पूरी हो।

तत्पश्चात् 'भुवनेश्वरी माला' से नीचे लिखे मंत्र का ग्यारह माला जप करें और प्रत्येक माला पूर्ण होने के साथ देवी को पुष्प अर्पित करते रहें।

।। ऊँ ऐं ऐं अनंगाय फट्।।

OM AYEIM AYEIM ANANGAAYA PHAT

यह प्रयोग नौ दिन तक करें। नौ दिन के पश्चात् सभी पुष्प एकत्र कर एक कपड़े में बांध कर रखे दें तथा यह विशेष भुवनेश्वरी यंत्र, जो कि ताबीज रूप में होता है। उसे कन्या के बायें हाथ में बांध दें, और सवा माह के पश्चात् यंत्र तथा माला शिव मन्दिर में अर्पित कर दें।

साधना सामग्री - 450/-

बगलामुखी जयंती – 20.5.21

शत्रु स्तम्भन साधना

स्तम्भन का तात्पर्य है
शत्रु को कुंठित कर देना

शत्रु की बुद्धि स्तम्भित कर देना, जिससे उसकी सोचने-विचारने की शक्ति समाप्त हो जाती है, वह अपनी बात सही समय पर भलीप्रकार से बोल नहीं पाता। उसकी वाणी स्तम्भित हो जाती है।

सामग्री

बगलामुखी यंत्र, पीली हकीक माला, बगलामुखी चित्र, जल पात्र, पीले पुष्प।

समय

रात्रि का कोई भी समय।

- **आसन** - पीले रंग का आसन।
- **दिशा** - पश्चिम

मंत्र

॥ ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

इसमें साधक को पीली धोती पहिन कर पीले आसन पर बैठना चाहिए। इस साधना को साधक बगलामुखी जयंती 20.5.21 या किसी भी गुरुवार से प्रारम्भ करें।

सर्वप्रथम अपने सामने बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर बगलामुखी यंत्र एवं चित्र स्थापित करें। सिन्दूर का तिलक लगायें एवं सामान्य पूजन करके पीले पुष्प चढ़ायें। सामने अगरबत्ती एवं दीपक लगायें फिर पीली हकीक माला या हल्दी की माला से इकतीस माला मंत्र जप प्रतिदिन तीन दिनों तक करें। फिर तीसरे दिन यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। इसके बाद यदि कोई शत्रु अत्यधिक परेशान कर रहा हो तो एक हकीक पत्थर लेकर उस पर शत्रु का नाम लिखकर देवी बगलामुखी के सामने रखकर 1 माला मंत्र जप करें और फिर उस हकीक पत्थर को किसी निर्जन स्थान पर जमीन में गाड़ दें तो शत्रु शांत हो जाता है।

न्यौछावर - 450/-
हकीक पत्थर 120/:

।। श्री गुरु स्तवन ।।

नमस्तुभ्यं महा मंत्र दायिने शिवरूपिणे।
ब्रह्म ज्ञान प्रकाशाय संसार दु:ख तारिणे।।
अति सौभाग्य विद्याय वीरायाज्ञान हारिणे।
नमस्ते कुल नाथाय कुल कौलिन्यदायिने।।
शिव तत्व प्रकाशाय ब्रह्म तत्व प्रकाशिने।
नमस्ते गुरवे तुभ्यं साधकाभय दायिने।।
अनाचाराचार भाव बोधाय भाव हेतवे।
भावाभाव विनिर्मुक्त मुक्ति दात्रे नमो नम:।।
नमस्ते सम्भवे तुभ्यं दिव्य भाव प्रकाशिने।
ज्ञानानन्द स्वरूपाय विभवाय नमोनम:।

शिवाय शक्ति नाथाय सच्चिदानन्द रूपिणे।
काम रूपाय कामाय काम केलि कलात्मने।।
कुल पूजोपदेशाय कुलाचार स्वरूपिणे।
आरक्त निज तच्छक्ति वाम भाग विभूतये।।
नमस्तेऽस्तु महेशाय नमस्तेऽस्तु नमो नम:।
इद स्तोत्र पठेन्नित्य साधको गुरु दिगमुख।।
प्रातरुत्थाय देवेशि! ततो विद्या प्रसीदति।
कुल सम्भव पूजायामादौ यो न: पठेदिदम।।
विफला तस्य पूजा स्यादभिचाराय कल्प्यते।
इति कुब्जिका तंत्रे गुरु स्तोत्रं समाप्तम।।

महामंत्र प्रदाता शिव स्वरूप ब्रह्म ज्ञान देने वाले सांसारिक दुखों को हरने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम है, अति सौम्य स्वभाव वाले, विद्या सम्पन्न, वीर हम शिष्यों के अज्ञान को हरण करने वाले, उदात्त, वंश परम्परा को देने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम है, शिव तत्व को जानने वाले, ब्रह्म को प्रकाशित करने वाले साधकों को अभय दान करने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम, सदाचार और दुराचार के स्वरूप को जानने वाले, ज्ञान के हेतुभूत, भाव और अभाव से परे मुक्ति दाता, गुरुदेव आपको प्रणाम, शिव स्वरूप, दिव्य ज्ञान को देने वाले, ज्ञान स्वरूप सर्वत्र व्यापक रहने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम, शिव रूप सर्व शक्ति सम्पन्न, सतचित्त, आनन्द स्वरूप, इच्छाधारी साधकों की इच्छा पूर्ति करने वाले, इच्छानुसार लीला करने वाले गुरुदेव आपको प्रणाम, वंश मर्यादा को जानने वाले, तदनुसार उपदेश देने वाले, प्रेममय शक्ति स्वरूपा, भगवती माता को अपने वामभाग में विराजमान किये हुये, हे! महेश्वर गुरुदेव आपको मेरा बार-बार प्रणाम।

अद्वितीय ज्योतिषी

सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

भविष्य ज्ञान के लिए ज्योतिष, हस्तरेखा का समुचित ज्ञान होना चाहिए।

आज के ज्योतिषी काल दर्शन से संबंधित छोटी-मोटी या विशेष साधना से सम्पन्न होते हैं।

आज कर्ण पिशाचिनी सिद्ध बहुत से भविष्य वक्ता मिल जाएंगे जो कर्ण पिशाचिनी से पूछ कर आपका भूतकाल स्पष्ट कर आश्चर्यचकित कर देंगे और फिर अनाप-शनाप जो भी भविष्य बता कर आपसे मोटी रकम तो ऐंठ लेंगे पर यह भविष्य वे कैसे जान सकते हैं

उन्हें कैसे पता चला क्योंकि कर्ण पिशाचिनी से भूत ज्ञान तो संभव है परंतु भविष्य नहीं पता चलता। ज्योतिष का ज्ञान आज बहुत ही विरलों को है। परम पूज्य गुरुदेव ने उसकी आवश्यकता को समझते हुए लगभग सौ से अधिक ग्रंथों की रचना कर ज्योतिष की पुनःस्थापना की है।

ज्योतिष के लुप्त प्राय सूत्रों तथा योगों को उन्होंने खोजा है। वास्तव में ज्योतिष के माध्यम से ग्रहों की गति स्थिति आदि स्पष्ट कर उसके भूत-भविष्य को स्पष्टता से समझा जा सकता है।

जोधपुर की चिलचिलाती तेज धूप भरी दोपहरी, डॉ. श्रीमाली जी के समक्ष दिल्ली से आये एक नेता अपना हाथ दिखा रहे थे उन्हें मंत्रिमंडल में फेर बदल को लेकर अत्यधिक चिंता थी क्योंकि उन्हें अपनी कुर्सी हिलती नजर आ रही थी। तभी थोड़े से खुले दरवाजे के बाहर धीरे-धीरे रोटी खाता भिखारी हाथ बढ़ा कर बोला - दो-चार पैसे मिलेंगे। दरियादिल डॉ. श्रीमाली जी उठे और चार आने का सिक्का देते-देते अचानक रुके क्योंकि उनकी दृष्टि एक रेखा पर थी वे कुछ सोचने लगे और फिर उन्होंने भिखारी का हाथ पकड़कर उसे अंदर खींच लिया। नेताजी से यह देखा न गया और उन्होंने पूछा कि इस उजड्ड को यहाँ कहाँ ले आए। श्रीमाली जी बोले इसकी रेखाओं से स्पष्ट है कि यह धनवान है और गुप्तचर विभाग में सेवारत है। मजबूर होकर जब उस व्यक्ति ने अपना परिचय पत्र दिखाया तो नेता जी भी आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सके। क्योंकि वह गुप्तचर विभाग में उच्च पद पर सेवारत था।

परम पूज्य गुरुदेव की पुस्तकों ने भी आज समाज में ज्योतिष और ज्योतिषियों को जो सम्मान दिलवाया है वह अत्यंतोच्च है। श्री चरणों में स्थान पा कर यदि हम भी सागर की कुछ बूँदे प्राप्त कर ले तो जीवन चमत्कृत हो उठेगा।
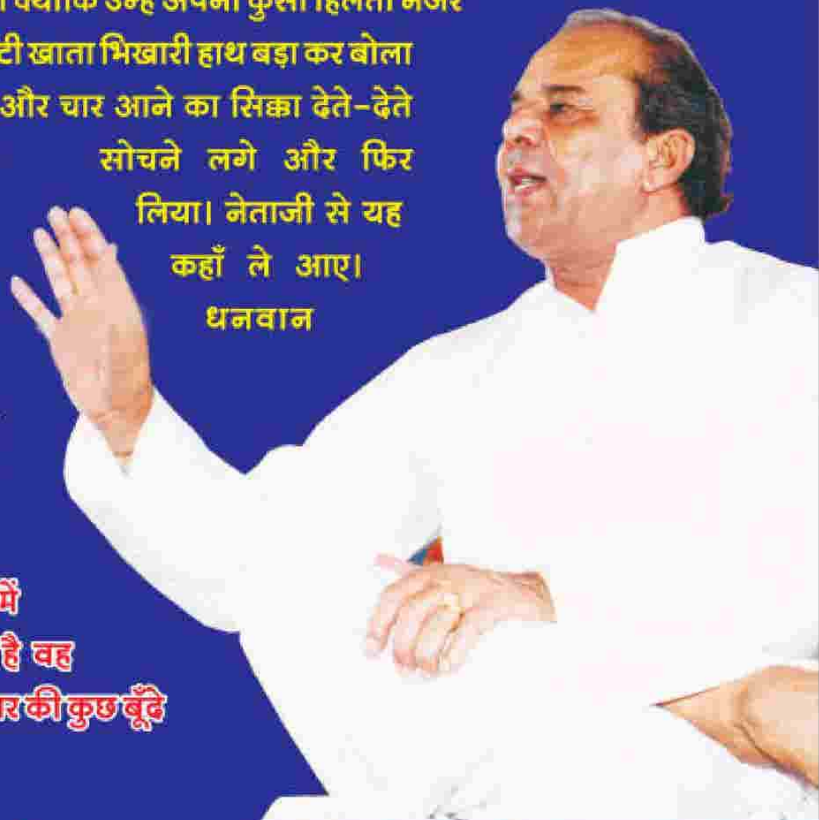
पद्मासन

भारतीय योग शास्त्र अपने आप में अत्यन्त समृद्ध एवं श्रेष्ठ है तथा इसके माध्यम से शरीर बाह्य एवं आन्तरिक शक्तियों को जागृत करने और उन्हें ऊर्ध्वगामी बनाकर पूर्णता तक पहुँचाने का श्रेष्ठ विधान है, योगशास्त्र में यह बताया गया है कि व्यक्ति किस प्रकार से अपनी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत कर सकता है और उसका लाभ उठाकर अपने जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहता है, कर सकता है।

पर इसके लिए सबसे पहले शरीर को संतुलित रखने और निरोग होने के लिए आसनों का ज्ञान एवं अभ्यास आवश्यक है।

पत्रिका के माध्यम से आपको आसनों के बारे में जानकारी दी जाती है क्योंकि आसनों का अभ्यास होने के बाद ही साधक साधना के क्षेत्र में तीव्रता से आगे बढ़ता है। इस बार पद्मासन के बारे में पूर्ण जानकारी दी जा रही है, आसनों में पद्मासन को श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण आसन कहा गया है।

योग प्रदीपिका में पद्मासन के बारे में बताया है—

वामोरूपरि दक्षिणं च चरणं संस्थाप्य वामं तथा
दक्षोरुपरि पश्चिमेन विविधा धृत्वा कराभ्यां दृढम्।
अंगुष्ठौ हृदये निधाय चिबुकं नासाग्रमालोकये-
देतद्व्याधिविनाशकारि यमिनां पद्मासनं प्रोच्यते।।

—योग प्रदीपिका, पृ. 10

अर्थात् दाहिना पांव बांयीं जंघा पर तथा बायां पांव दाहिनी जंघा पर रखिये, जब दोनों पांव दोनों जंघाओं पर ठीक प्रकार से आ जाए, तब अपना बायां हाथ बायें घुटने पर तथा दाहिना हाथ दाहिने घुटने पर रखिये, इस बात का ध्यान रखिये कि पीठ, कमर, गला, सिर और रीढ़ की हड्डी सीधी और सम रेखा में रहे, अपनी दृष्टि भ्रूमध्य अर्थात् दोनों भौहों के बीच या नासिका के अग्र भाग पर अथवा किसी बाह्य बिन्दु पर स्थिर रहे, इसको पद्मासन कहते हैं।

बद्ध पद्मासन
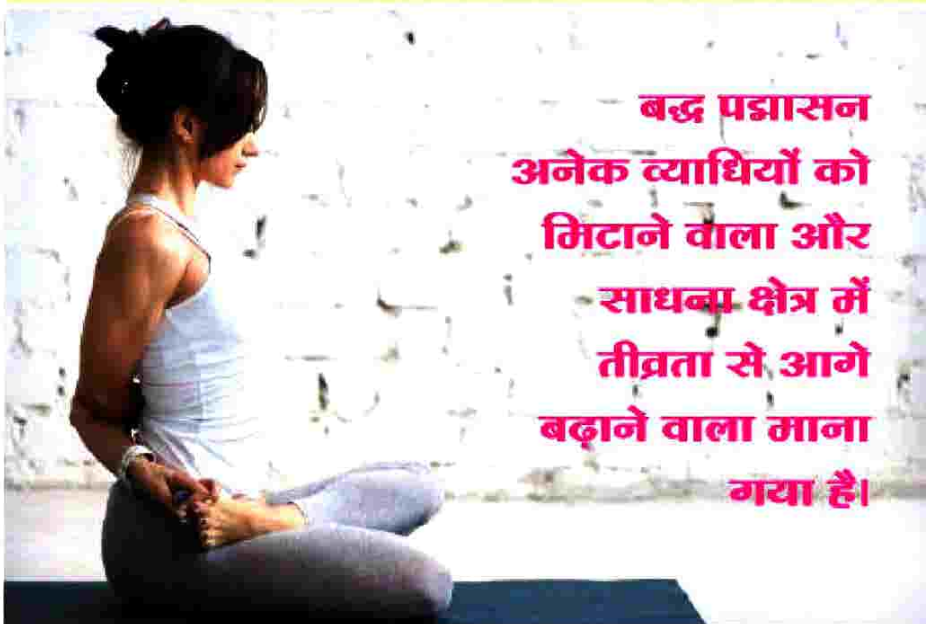
जब साधक को पद्मासन का अभ्यास हो जाय तो उसे बद्ध पद्मासन का अभ्यास करना चाहिए, इसमें ऊपर लिखी विधि के अनुसार ही पद्मासन लगा लेना चाहिए इसके बाद अपने हाथों को पीठ के पीछे ले जाकर क्रास करते हुए दाहिने हाथ से दाहिने पैर के अंगूठे को पकड़े और बांये हाथ से बांये पैर के अंगूठे को। ऐसा करते समय भी ध्यान रहे कि उसकी दृष्टि स्थिर सामने, किसी बिन्दु पर स्थित हो तथा पीछे का मेरुदण्ड स्पष्ट और सीधा हो, बद्ध पद्मासन अनेक व्याधियों को मिटाने वाला और साधना क्षेत्र में तीव्रता से आगे बढ़ाने वाला माना गया है।

जब साधक को बद्ध पद्मासन का अभ्यास हो जाय तब उसे चाहिए कि वह अपनी ठोडी को हृदय के समीप स्थान में लगावें और नासिका के अग्र भाग को देखने का प्रयास करे, यह पद्मासन की तीसरी विधि है और इससे कुण्डलिनी जागरण एवं कुण्डलिनी संचरण में विशेष सहायता मिलती है।

सिद्ध पद्मासन

पद्मासन के अभ्यास क्रम में यह चौथा अभ्यास है, जब साधक को ऊपर के तीनों अभ्यासों में सफलता मिल जाय, तब उसे चाहिए कि वह सीधा पद्मासन लगाकर बैठ जाय और दोनों एडियों के बीच वाम और दाहिनी हथेली को अंजली वत् बनाकर बैठ जाय और अपनी ठोडी को वक्ष स्थल में स्थापित कर, दृष्टि को नासिका के अग्र भाग में स्थित करे ओर धीरे-धीरे वायु को

प्राण और अपान वायु के संघर्षण से जो ऊष्मा पैदा होती है, वह इड़ा और पिंगला नाड़ियों को सुषुम्ना से अलग कर लेती हैं और इस प्रकार व्यक्ति कुछ ही समय में अभ्यास करके कुण्डलिनी जागरण में सफलता प्राप्त कर लेता है।

पद्मासन कुण्डलिनी जागरण में सहायक है

शीत्कार की ध्वनि के साथ ग्रहण करे, ऐसा अभ्यास अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है और कहा जाता है, कि श्रेष्ठ अभ्यास के बाद ही इस अलभ्य पद्मासन को साधक पूर्ण कर सकता है, यह अभ्यास शरीर की समस्त व्याधियों को मिटाने में सहायक है।

ऊपर लिखे हुए अभ्यास को धीरे-धीरे साधक को करने चाहिए, और इस प्रकार के अभ्यास को बढ़ाना चाहिये, जब शीत्कार ध्वनि के साथ वायु ग्रहण करने की सामर्थ्य उत्पन्न हो जाय, तब साधक को आगे बढ़कर ॐ का चिन्तन करता हुआ प्रारम्भिक क्रम में साधक को पूरक और रेचक दोनों का अभ्यास करना चाहिए, और अभ्यास के बाद जितना और जहां तक हो सके, कुम्भक का सफल अभ्यास पूर्ण करना चाहिए।

पूरक और रेचक अथवा दूसरे शब्दों में प्राण और अपान के घर्षण द्वारा कुण्डलिनी रूपी सामर्थ्य का उदय होता है, और प्राणवायु सुषुम्ना द्वारा ब्रह्मरन्ध्र में प्राण स्थित होने लगता है, फलस्वरूप साधक चित्त एकाग्र करने में सफल हो जाता है और समाधि की अवस्था की ओर अग्रसर होने लगता है।

पद्मासने स्थिता योगी नाडरीद्वारेण पूरितम्।
मारुतं धारयेद्यस्तु स मुक्तो नात्र संशयः।।

ऊर्ध्व पद्मासन

कुछ साधकों का अभ्यास और आगे बढ़ जाता है, और वे शीर्षासन करके ऊपर ही पांवों में पद्मासन लगा लेते हैं, इस प्रकार की क्रिया को ऊर्ध्व पद्मासन कहते हैं।
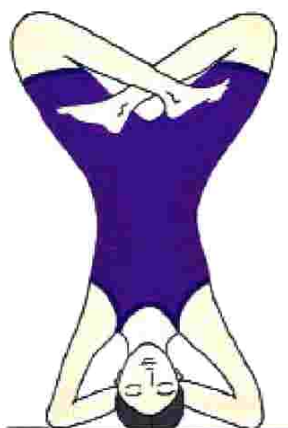
उत्थित पद्मासन

यह आसन सामान्य एवं सरल है, साधक पहले पद्मासन लगा ले और फिर
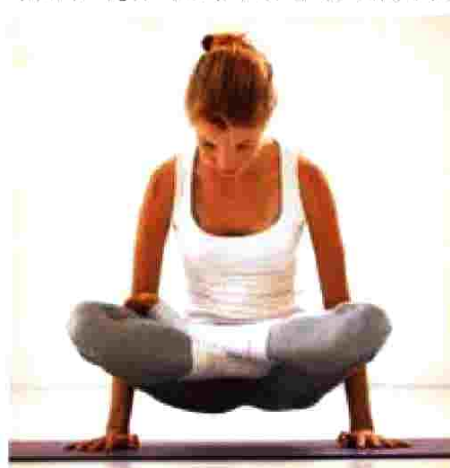
अपने दोनों हाथों को हथेलियों को जमीन पर टिकाकर, उसके सहारे ऊपर उठ जाय, ये दोनों हाथ दोनों जंघाओं के पास जमीन पर टिके होंगे और शरीर का सारा भार इन हथेलियों पर ही होगा, इसमें पद्मासन बराबर लगा रहेगा।

इस प्रकार के पद्मासन से हाथों की ताकत बढ़ जाती है और पेट सम्बन्धी रोग समाप्त हो जाते हैं, योगिक भाषा में इस प्रकार के आसन को लोलासन या दोलासन भी कहते हैं।

अर्द्ध पद्मासन

कुछ लोगों की जंघाएँ इतनी अधिक मोटी होती हैं, कि उनके दोनों पांव दोनों जंघाओं पर किसी भी रीति से नहीं आ सकते, ऐसे लोग प्रारम्भ में पूर्ण पद्मासन नहीं कर पाते इनके लिए उचित है कि वे प्रारम्भ में अर्द्ध पद्मासन करे।

अर्द्ध पद्मासन में एक पांव दूसरे पांव की जंघा पर रखे, इसे वाम अर्द्ध पद्मासन कहते हैं, इसके बाद बायें पैर के पंजे को दाहिने पैर की जंघा पर स्थापित करे, इसे दक्षिण अर्द्ध पद्मासन कहते हैं, इस अभ्यास से धीरे-

पद्मासन लगाने से सभी नाड़ियाँ ऊर्ध्वगामी संचरित होने लगती है और ऐसी स्थिति में जब साधक अपने दोनों नेत्रों की दृष्टि को दोनों भौहों के मध्य या नासिका के अग्र भाग में स्थित करता है तो प्रकाश बिन्दु स्थापित होता है फलस्वरूप इसका सीधा प्रवाह सहस्रार पर पड़ता है और कुछ ही समय के अभ्यास के बाद साधक पूर्ण ध्यान की ओर अग्रसर हो सकता है।

धीरे जंघाओं का व्यर्थ का मांस चरबी पिघल कर समाप्त हो जाती है और कुछ समय के अभ्यास के बाद वह व्यक्ति पूर्ण पद्मासन लगाने में सक्षम हो जाता है।

सावधानियाँ

यह पद्मासन पढ़ने या सुनने में जितना आसान दिखाई देता है, उतना आसान नहीं है, यदि किसी भी आसन को सही तरीके से नहीं किया जाय, तो हानि भी हो सकती है, अत: पद्मासन के अभ्यास को करते समय निम्न सावधानियाँ बरतनी चाहिए–

1. यह आसन प्रात:काल किया जाय तो उचित रहता है।
2. भोजन करके कभी भी पद्मासन नहीं लगाना चाहिए, अन्यथा आंतों में सूजन आने की सम्भावनाएं बन जाती हैं।
3. यह आसन किसी गुदगुदे नरम आसन पर करना चाहिये, वह आसन रेशमी, सूती या ऊनी किसी भी प्रकार का हो सकता है, अभ्यास होने के बाद तो साधक जमीन पर भी इसको लगाने का अभ्यास कर लेता है।
4. आसन करते समय ढीले-ढाले वस्त्र पहने होने चाहिये, यदि साधक लंगोट लगाकर अभ्यास करे तो ज्यादा उचित रहता है।
5. यह आसन स्त्रियाँ भी कर सकती हैं, परन्तु ऋतुकाल में इस आसन को करना वर्जित माना गया है।
6. प्रारम्भ में हड्डियाँ सख्त होने की वजह से आसन नहीं लग पाता, तब साधक को धीरे-धीरे अभ्यास करना चाहिए, उतावली या जबरदस्ती नहीं करना चाहिए।

यौगिक लाभ–

1. यह महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ आसन माना गया है, क्योंकि इससे मेरुदण्ड सीधा और सपाट रहने की वजह से नाड़ियों के संचरण में सुविधा होती है।
2. आसन लगाकर जब ठोडी को सीने से लगाते हैं, तो इसे जालंधर बन्ध कहा जाता है, इससे वायु को रोकने में सहायता मिलती है, ऐसा साधक अपने नाभि प्रदेश में पूरक एवं कुम्भक करके कुण्डलिनी को जागृत कर सकता है।
3. प्राण और अपान वायु के संघर्षण से जो ऊष्मा पैदा होती है, वह इड़ा और पिंगला नाड़ियों को सुषुम्ना से अलग कर लेती हैं और इस प्रकार व्यक्ति कुछ ही समय में अभ्यास करके कुण्डलिनी जागरण में सफलता प्राप्त कर लेता है।
4. पद्मासन लगाने से सभी नाड़ियाँ ऊर्ध्वगामी संचरित होने लगती है और ऐसी स्थिति में जब साधक अपने दोनों नेत्रों की दृष्टि को दोनों भौहों के मध्य या नासिका के अग्र भाग में स्थित करता है तो प्रकाश बिन्दु स्थापित होता है फलस्वरूप इसका सीधा प्रवाह सहस्रार पर पड़ता है और कुछ ही समय के अभ्यास के बाद साधक पूर्ण समाधि की ओर अग्रसर हो सकता है।
5. यह अभ्यास जब कम से कम 32 मिनट का हो जाता है तब उसे अनुभूतियाँ होने लगती हैं।
6. किसी भी प्रकार के पद्मासन को कम से कम 32 मिनट का करना चाहिए, इसके बाद इस अभ्यास को आगे बढ़ाना चाहिए, 32 मिनट से कम के अभ्यास को असफल या अपूर्ण अभ्यास कहते हैं।

स्वास्थ्य लाभ :–

पद्मासन से शरीर की कई व्याधियाँ मिट जाती हैं और स्वास्थ्य लाभ होने लगता है।

1. इस अभ्यास से कटि भाग तथा कमर से नीचे के भाग की नाड़ियों को सुदृढ़ता मिलती है और ये नाड़ियाँ लचकीली बनती है।
2. इसके अभ्यास से श्वांस क्रिया सम होकर निरन्तर प्रवाह बनता है।
3. इसके अभ्यास से इंद्रियां और मन शांत होता है। फलस्वरूप एकाग्रता में सफलता प्राप्त होती है।
4. मेरुदण्ड के सीधे रहने से सुषुम्ना में प्राण की गति ठीक रहती है और इससे अपान वायु संचरण में सफलता मिलती है।
5. पद्मासन लगाकर ठोड़ी को सीने पर लगाने से मस्तिष्क का मज्जा प्रवाह ठीक होता है, फलस्वरूप सहस्रार खुलने में सफलता मिलती है।
6. इस आसन के अभ्यास से हाथों और पैरों को ताकत मिलती है, वे सुड़ौल बनते है तथा व्यर्थ की चर्बी समाप्त हो जाती है।
7. इस आसन के अभ्यास से पेट के बहुत से रोग स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं।
8. इस आसन के अभ्यास से शरीर बल बढ़ जाता है और आरोग्य वृद्धि के साथ-साथ व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

वस्तुत: पद्मासन अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ आसन है, इसका अभ्यास प्रत्येक विद्यार्थी, गृहस्थ एवं साधक को करना चाहिये, इस प्रकार के निरन्तर अभ्यास से ओज तथा चेहरे पर चमक एवं दीप्ति आ जाती है।

Divya Suryatva Sadhana

OM NAMAH SAHASTRA BAAHAVE AADITYAAY NAMO NAMAH, NAMASTE PADHYAM HASTAAY VARUNNAAY NAMO NAMAH, SARVAGAH SARVABHUTESHU NA HI KINCHITVAYAA BINAA. CHARAACHARE JAGATYASMIN SARVA DEH VYAVASTHITAH.

I bow down before Lord Aaditya, who has thousand hands representing the rays emanating from his divine form, and I bow down before Lord Varun who holds a lotus his hand. O Lord ! You are Omnipresent and Omniscient and without you, life cannot exist. You are present in every life-form existing on this earth.

The whole life system on this earth survives due to the vital life energy of the sun, called Surya Dev in Indian scriptures. In fact, sun is a manifestation of the Ultimate Power, the Param Brahm and is a unique confluence of divine powers and radiance which is capable of making a person total in respect of all the four essential aspects of life i.e. - ***Dharma (Righteousness), Arth (Wealth), Kaam (Pleasures) and Moksh (Salvation).*** All living beings whether Gods, humans, animals, microorganisms or plants, depend on the energy from the Sun in order to subsist. All the realms of this solar system exist and thrive due to the energy received from it. Hence the sun is an incomparable source of vital life energy.

In the **Padam Puran** it has been expounded that a person is absolved of all sins by the Darshan or the glimpse of Surya Dev at the time of sunrise, and he can attain salvation by worshipping the Sun. Brahmins while carrying out Sandhya (morning and evening prayers) raise their hands and thus worship the Sun.

It is said that a sinful person becomes pious just by the contact of

All living beings whether Gods, humans, animals, microorganisms or plants, depend on the energy from the Sun in order to subsist. All the realms of this solar system exist and thrive due to the energy received from it. Hence the sun is an incomparable source of vital life energy.

the sun rays with his body. A person can even get rid of all diseases by worshipping Sun. Many great boons are obtained from the sun because, although one cannot have the Darshan of Lord Vishnu, Shiva and other Gods so easily, every life form can see the sun.

History of India reveals that much stress has always been laid on the worship of Sun and several temples have been raised in his honour. Even in other countries sun has been worshipped for ages. Temples of sun have been found in Iran, Afghanistan, Egypt, Greece, and many other countries. Among the nine planets in Astrology sun is the most important, Sadhana of sun promises fame, respect, power and success to the Sadhak.

By performing the Sadhana of Surya Dev all ailments and evil planetary effects are also vanquished. A person may be afflicted by any congenital disease yet if he accomplishes the **Divya Suryatva Sadhana** he is sure to be cured of the ailment forever. In fact this Sadhana is the best to attain a healthy and disease-free life.

Divya Suryatva Sadhana

Before commencing the Sadhana procure a **Divya Surya Yantra.** On any Sunday get up in the Brahm Muhurat (4.30 am to 6 am) and go upto your terrace or to some open place where you can see the sun rising. You should arrange for sweets and fruit, a banana leaf, red sandal wood paste, vermilion and flowers.

Wash the place where you intend to carry out the Sadhana. Lay down the banana leaf on the floor and on it draw a circle with vermilion, and place the **Surya Yantra** in the circle. Apply a mark of red sandalwood paste on the Yantra and offer the sweets, fruit and flowers before it.

Flold your hands and bow down before the sun, and pray to him-

"O Lord! You are pure, sacred and the Preserver of the whole world. You are the life force present in all life forms and you are the protector of all life on this earth. You are vanquisher of all ailments, diseases, darkness, sorrows and poverty. You are the best friend in this world and you always keep a vigilant eye on all life in this solar system. Hence O Lord! Please vanquish all diseases present in my body and bless me with a healthy life."

After speaking out these words chant the following Divya Surya Mantra 108 times with a **Sfatik rosary**, sitting before the Yantra, facing the morning Sun.

MANTRA

Om Ghrinnim Suryaay Phat

मंत्र

।। ॐ घृणिं सूर्याय फट्।।

After chanting the Mantra offer water to the Sun God. The righty way to do this is to take water in a copper tumbler and stand facing the rising sun. Then slowly pour out the water onto the ground before you, with your eyes directed at the sun. After offering water pick up the Yantra and touch it to the disease-affected parts of your body.

Continue this practice every day till the next Sunday. If you cannot do the Sadhana in the open then place the Yantra in a sacred place in your house and perform the ritual.

Before commencing the Sadhana one should worship the Guru and chant at least one rosary of Guru Mantra. The water offered to the Sun God should contain the following articles- Holy water of the Ganga (or pure water), honey, unbroken rice grains, red sandal wood paste, milk, curd and a red flower.

Sadhana Articles : 450/-

गुरु को रक्त कण-कण में धारण करना शिष्य के जीवन की सर्वोच्च निधि है, जिसके माध्यम से शिष्य के शरीर के कण-कण में गुरु की स्थापना हो जाती है। उसे पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ता, उसे लक्ष्य का ज्ञान गुरुकृपा से होने लगता है क्योंकि इस दीक्षा के माध्यम से गुरु पूर्णरूपेण हृदय में स्थापित हो जाते हैं और साधक ध्यान में बैठते ही ज्ञान और आनंद के सागर में गोते लगाने लग जाता है। जीवन के अभाव मिटने लगते हैं। शिष्य के हृदय की वेदना, उसकी हृदय की बेचैनी फिर सद्गुरुदेव से कहां छिपी रह सकती है। जैसे-जैसे साधक इस दीक्षा प्राप्ति के उपरांत मंत्र को जपने लगता है, उसमें व्याकुलता का भाव जगने लगता है। सत्य तो यह है कि व्याकुलता ही हृदय को सद्गुरुदेव के प्रेम से आप्लावित करती है और जब प्रेम स्थापित होता है तो सद्गुरुदेव के दर्शन होने लगते हैं और साधक अपने लक्ष्य को पूर्णता से प्राप्त कर लेता है। क्योंकि पवित्र एवं निःस्वार्थ प्रेम ही तो सद्गुरुदेव हैं। यह दीक्षा जीवन की एक श्रेष्ठ दीक्षा है।

उपहारस्वरुप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

गुरु रक्त कण-कण स्थापन दीक्षा

योजना केवल 16-17-18-19 अप्रैल 2021 इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- ' नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

आगामी माह में विभिन्न शहरों में आयोजित होने वाले साधना शिविर

2 अप्रैल, 2021

श्री निखिलेश्वरानन्दजी देह स्थापन प्रयोग एवं दीक्षा शिविर

शिविर स्थल :

जोरावर स्टेट पार्टी प्लॉट, वाघोडिया क्रॉसिंग एवं डभोई क्रॉसिंग के बीच, नेशनल हाईवे नं. 8 बाईपास, नियर इस्टर्न आर्केड,

जिला : **वड़ोदरा** (गुजरात)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक : अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, बड़ोदा, सम्पर्क सूत्र : पी.के. शुक्ला-9426583664, चिराग महेश्वरी-9725323930, कनुभाई सोनी-9737836800, सुनील सोनी-9925555035, विरल सोनी-9925234536, महेन्द्र सिंह राणा-98250 26711, हितेश शुक्ला-8141376295, विजय भाई दर्जी, हितेश बिरला, अपूर्व वोरा, कान्ति भाई परमार, रमाकान्त सोनी- 9725880140, ज्योति पाटिल, प्रकाश पटेल, अल्पेश राठवा, अजय अग्रवाल, विरेन्द्र शर्मा, मनोज महेश्वरी, राजेश भट्ट, रोहित मोरे, कमलेश शर्मा, यतिन पंडया, रेवजी पटेल, मुकेश पढियार, अशोक परमार, भावेश पटेल, ललित प्रसाद, भूपेन्द्र भाई सुथार, क्रुणाल उपाध्याय

04 अप्रैल, 2021

त्रिशक्ति साधना शिविर

शिविर स्थल :

नामधारी गार्डन, सीसमो होटल, कल्पना एसकोयर,

जिला : **भुवनेश्वर** (उड़ीसा)

आयोजक-भुवनेश्वर : इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003 चैतन्य गुंजन योगी जी 8144904640, वैश्णो चरण साहू 8249804350, वेंकेट राव-8917672820, लक्ष्मी पानीग्राही-9437616301 भुवनेश्वर-वासुदेव परिदा 9437001098, अनिल महापत्रा-9438525977 प्रदीप कुमार महापत्रा, प्रकाश कुमार समंत राय, आनन्द प्रसाद सोईन-809349498, बिदुरा नदीलाई, गौतम कुमार सिंह, मदन मनोरमा, मानस साहू, सुशान्त कुमार जेना, तुषार, कालाहांडी-प्रदीप साहू-9777830254, सुजीत जी, कटक-मंगेश बेहेरा, उपेन्द्र मलिक, राउरकेला-नरेश राजगड़िया-8018406882, सरोज कुमार प्रधान, गौर सिंह भूमिज, रोहित कुमार पेलई, बांडामुण्डा-सूरत धुर्वा एवं सत्यवति धुर्वा-9777582338, झारसुगड़ा-हरि बाग बाबू लाल साहू, राजू मेहर, जगरनाथ साहू, नीतिन जी, सुन्दरगढ़-अशोक कुमार, श्री नाथ समल, सुनील कुमार पटेल सम्बलपुर-दीलिप मिश्रा, किशोर कुमार बरिहा, गोविन्द पंडा, लिंग राज प्रधान, चन्द्रशेखर डोरा, बलांगीर-घनश्याम भागरती, अशोक राउत, बासुदेव रता, अश्विनी त्रिपाठी, विजय भुषण बघेल, सेशा देव मेहर, दीपक कुमार जोशी, दीपा जोशी, सुशील कुमार तांदी, रन राज सिन्ध्देओ, भीम सेनन्दा, विकास मिश्रा, वरूण थनाप्ति, सुब्रत बोहिदार, कामदेव बारिक, अनिल कुमार मिश्रा, सत्य बागरति, गजेन्द्र साहू, रविन्द्र मेहर, मनोज कुमार मैती, विजय पानी, नन्दी मिश्रा, देवाशीष पानीग्राही, सुजीत राउत, अन्तराष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार ब्रह्मपुर - झारखण्ड (धनबाद)- राहुल सिंह, झारखण्ड (राँची)-मुनमुन सिंह, बिहार (लखीसराय) मुरारि महतो

11 अप्रैल, 2021

श्री निखिलेश्वरानन्दजी देह स्थापन प्रयोग एवं दीक्षा शिविर

शिविर स्थल :

शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्री वल्लभदास मार्ग, निअर गुरु कृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व),

जिला : **मुम्बई-400022**

(सायन स्टेशन वॉकेबल 5 मिनिट)

आयोजक-मुम्बई : तुलसी महतो-9967163865, संतलाल पाल -97680 76888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, अजय मांचरेकर, मानव, पीयूष, सुनील साल्वी, श्रीनिवास, गुरु, रोहित शेट्ठी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, गंगा, जिया, सीता, सोनू, दिलीप झा, उपाधे, पूर्णिमा (नेपाल), प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, बसन्ती, पीताम्बर (नेपाल), रामेश्वर, अनयसिंह, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहनी सैनी, हरिभाई विश्वकर्मा, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, वीरेन्द्र, श्यामसुन्दर, भावप्रसाद पाण्डे, रवि साहू, राकेश तिवारी, भाव प्रकाश, निर्मल कुमार, राघवेन्द्र प्रताप, प्रवीण भारद्वाज, प्रीतम भारद्वाज, संतोष अम्बेडकर, राजकुमार मिश्रा, अनीता हंसराज भारद्वाज, अरविन्द अरोड़ा, राहुल पाण्ड्या, विवेक पवार, गीता, ममता, राजेश उपाध्याय

14 अप्रैल, 2021

भगवती दुर्गा साधना शिविर

शिविर स्थल :

जानोलकर मंगल कार्यालय, केशव नगर, रिंग रोड

जिला : **अकोला** (महाराष्ट्र)

(निखिल स्तवन पाठ सुबह 9.00 बजे से 10 बजे तक)

आयोजक मण्डल : राजेश सोनोने-9823033719, रविंद्र अवचार- 99211 38349, 9423468059, भास्कर कापडे-9623454354, विष्णु जायले-9623454353, आनंद गुप्ता, विनायकराव देशमुख- 94229 37169, पुंजाजी गावंडे-9527570406, श्याम दायमा-8805710711, राजू चिंचोळकर -9850574122, श्रीनिवास पायसाळे-9767605061, शंकरराव अंभोरे- 99601 52144, राजेश राऊत-9145860760, दिनेश कोरे-98225 60901, संतोष दांडगे-9822730441, संजय शेन्डे-96044 83029, दयाराम घोडे-7350655850, धीरज टापरे-9975054742, गुणवंत जानोरकर -92260 70462, किशोर नरहर पाटिल-97667 75911, राजेश पाटिल- 9028465950, सुनील खंडारे-9623744190, सुनील जामनारे-9850333769, शरद पवार-9696323452, शशिकांत लोंढे- 7798130130, मनीष येन्डे- 9326917415, गणेश काळे-98506 63935, संदीप बढे-7387393556, प्रह्लाद भरसाळदे-9766333084, गजानन बलोदे-9822716368, मंगेश सोनोने-9623454352, धनराज माळी- 8007727479, प्रवीण सोनोने- 9405674015, ज्ञानेश्वर लिखार- 9860972211, अरुण म्हैसने-99233 13939, नारायण इंगळे-9922072683, अरुण रावरकर- 9822943520, प्रवीण वाघमारे-72493 90312, पांडुरंग मास्कर-9860279267, सौ. ममता घाटोळ-9552658461, अरुण पवार-9822808593, मुरलीधर शेटे-98502 51078, दिलीप कुमरे-8975255794, कृष्णा रावणकार-9011883645, विजय भगत- 90750 72619, शकील सर्जेकर-7841969809, पुरुषोत्तम निंबाळकर- 90119

29278, अवधूत सिरसाट-9766451677, किशोर चव्हाण- 99759 57702, रामकृष्ण नवघरे-9850159069, प्रमोद सोनोने-9370549394, हरीभाऊ उकर्डे-9325811463, दीपक मालोकार-9921964053, सुधाकर पुंडकर-9637384570, विजय लोहकरे-81494 83987, राजेश सरोदे- 9623408967, अंकुश मिसाळ- 9860674496, निलेश चव्हाण- 9579034331, महेंद्र पवार-8788364330, मनीष कनोजिया- 94229 88945, अशोक चव्हाण- 92268 93205, चंद्रपुर-वतन कोकास-9422114621, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्प्रे- 94067 51186, गडचिरोली- दुल्लुराज वुइक-9422615423, यवतमाळ- श्रीकांत चौधरी-9822728916, अमरावती-रोहित काळे-8551975547, वर्धा- चंद्रकांत दौड-8379080867, नागपुर-वासुदेव ठाकरे -9764662006, किशोर वैद्य, सारंग चौधरी- 9921672114, भण्डारा -देवेन्द्र काटखाये-7020221640, नरेन्द्र काटेखाये-9403419979, गोंदिया -डी.के. सिंह-9226270872

21 अप्रैल, 2021

सद्गुरु जन्मोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल :

गैलेक्सी वेंकट हॉल, सांई हास्पीटल के सामने,
दिल्ली रोड, **मुरादाबाद** (उत्तरप्रदेश)

सम्पर्क सूत्र : पुष्पेन्द्रसिंह-9412342835, खिलेन्द सिंह-9837458090, मुनेन्द्र सिंह-9756700204, रणजीत सिंह-9027765397, आयोजक मण्डल-कैप्टन श्यामवीरसिंह-9997944895, डॉ. सतीश सक्सेना, युवराज सिंह-96276 42048, नितिन अग्रवाल-9258890999, कुसुम लता यादव, रागिनी गुप्ता-8433446020, कृष्णकुमार मिश्रा- 98971 05859, यशवीरसिंह -97583 37325, सोमपालसिंह, कर्मकेन्द्रसिंह, मुकुलसिंह, भूपेन्द्रसिंह, मनोज विश्नोई, अर्पित विश्नोई, योगेन्द्र चौहान, कुलवीरसिंह, सम्भल-मोनू कुमार, रिंकू सैनी, पदमसिंह, सतेन्द्रसिंह, सुरेन्द्रसिंह, विजेन्द्रसिंह, नागेन्द्रसिंह, अक्षय त्यागी, नीतूपाल, मिलन शर्मा, रामनाथ त्यागी, नवीन वर्मा, गजरौला-प्रेमनाथ उपाध्याय, श्यामसुन्दर कौशिक, शेखर वर्मा, विकास अग्रवाल, हरवेन्द्रसिंह, अनिल शर्मा, विनोद पाण्डे, अनिल राजपूत, गतेन्द्रसिंह, शत्रुध्न त्यागी, दीपक कोहली, बिजनौर-अनुराग त्यागी, सुरभि अग्रवाल, धामपुर-अनिल अग्रवाल, सुरेश रस्तौगी, राजकुमार रस्तौगी, काशीपुर-वी.के. मिश्रा, आसू मिश्रा, मयंक मिश्रा, हल्द्वानी-आनन्द राणा, हरीश प्रसाद, चन्दजीत भसीन, उधमसिंह नगर-सुनील रुहेला, हरभजनसिंह, सी.एस. पाण्डे, बरेली-राजेश प्रताप, लखीमपुर खीरी-भोलेशंकर सिंह, सरोज रस्तोगी, कानपुर-शैलेन्द सिंह-9721167706, श्रीमती नीलम- 8004793975, सुरेश पाण्डे, महेन्द्र सिंह, कायमगंज-अरुण कुमार शाक्य, रमाकान्त, लखनऊ-अजयकुमार सिंह, सतीश टण्डन, जयंत मिश्रा, नागपुर-वासुदेव ठाकरे, नैनीताल-पप्पन जोशी।

25 अप्रैल, 2021

गुरु हृदयस्थ धारण साधना शिविर

शिविर स्थल : **धनबाद** (झारखण्ड)

आयोजक मण्डल : यू.पी. सिंह, इंद्रजीत राय-8210257911, 9199409003, राम मनोज कुमार ठाकुर-9431357893, 7870945101, अरुण सिंह- 94317 31522,सुभाष कुमार भदानी-7903151172, जितेंद्र प्रा सिंह-8809047408, कमलेश कुमार पांडे -9835555092,राहुल सिंह आर डी पासवान, राजेश कुमार गुप्ता-9693376408, विजय कुमार मिश्रा, कमलनाथ प्रसाद, श्रीमती कुंती सिंह (पूर्व झरिया विधायक), पी.आर. ता, ममता देवी,मनोज कुमार सिंह, मिंटू कुमार, बजरंगी जी, दुखहरण पासवान, मनजीत कुमार सुरेश मंडल, बलियापुर - मनोज महतो, सुनील महतो, संजय महतो, लोके महतो, शांति लाल महतो, दुर्गा महतो ,मुकेश महतो, शत्रुघ्न महतो, श्रीमद् माता रामकेसर महतो, बरताकोला - बिरजू साउथ, गंगा वर्मा इंदर चौहान, धर्मेंद्र चौहान, नारायण चौधरी, अशोक कुमार राय, सिजुवा - सुदर्शन सिंह, भगवत सिंह ,जनेश्वर प्रसाद, अनुज कुमार सिंह, तरुण कुमार , श्याम सुंदर राजभर, सकलदीप रवानी, विक्रम सिंह, श्रीमती सुनीता सिंह, सुरेंद्र सिंह, अर्जुन व्यास, अजीत मंडल बी. के. मंडल. शिवदानी पासवान, इनवन हरिजन, रामधनी ठाकुर, लेखो चौहान, राम लखन निषाद, सत्येंद्र चौहान, दिलीप गुप्ता, राम कुमार महतो, अरुण कुमार, अनिल विश्वकर्मा, देव कुमार दुसाध, रंजीत सिंह शैलेश कुमार सिंह, संजय कुमार सिंह, हौसला पंडित, श्रीनाथ माली, हरिश्चंद्र कहार, रामनाथ रावत, समर शक्ति सिंह, सुधीर सुमन, रीता देवी सूजन महतो, बिष्टि महतो, संजय कुमार, मुन्ना चौधरी, कतरास-प्रदीप भदानी पूरन सिंह, ओम प्रकाश उपाध्याय, आर. पी. चौरसिया, तेतुलमारी- रामेश्वर महतो, डॉ. विजय यादव, अखिलेश सिंह, सेवक चौहान. पप्पू वर्मा, सुनीडीह-रिंकू बावरी, मधुबन श्याम किशोर सिंह, बाघमारा - अ.सि साधक परिवार समस्त, साधकगण चंद्रपुरा- बुलो देवी, गोमो- राजेश सिंह, श्रीमती सुरेखा देवी, फुसरो तुलसी सिंह धनपत महतो, धनेश्वर सिंह, अरुण मुंडा, बोकारो, गोमिया- आर.सि. साधक परिवार बोकारो, गोमिया-हरेंद्र कुमार महतो -7739347254, प्रमोद साव, रमेश कुमार महतो, टेकलाल महतो, विष्णुगढ़- निर्मल विश्वकर्मा, हजारीबाग - बी.एम. द्विवेदी, अर्जुन रजत, रजरप्पा क्षेत्र - सोलोमनी कश्यप-9199094953, सुदीप गोस्वामी, सरोज देवी, हलधर महतो, रांची- बालमुकुंद नाथ सहदेव 73699 32670, मोहन शर्मा 9771602958, दिलीप कुमार राज- 9304318211, चंद्रशेखर पांडे , नरेंद्र कुमार सिंह, मुकेश कुमार कश्यप, आभा रानी एवं मुताई कुदादा, आर.के. हाजरा, संतोष कुमार मेहता, प्रकाश साहू, पिंटू कुमार बुंडू, अनूप चेल- 9234478546, भुनेश्वर प्रमाणिक, संतोष चेल, विष्णु चरण सिंह, सपन चेल, झंदू चेल, मदन मोहन भगत, मीना देवी, अशोक ठाकुर, तमाड़ भूतना बाबा, रमेश सिंह मुंडा, टाटानगर - नीरज कुमार श्रीवास्तव, सरायकेला- रसवा श्याम शरण गोडासोरे, दीपक कुमार,मधुसूदन सिंह, चक्रधरपुर-चंदन कुमार, गुमला- बीरबल भगत, रमेश बघेल, जनार्दन भगत, सुनील सिंह, विनोद मांझी , देवघर- सुनील देवदर्शी, दुमका - मंटू कुमार, चुन्नू केवट, अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार दुमका साधकगण,

9 मई, 2021

सद्गुरु निखिलेश्वरानन्द कृपा युक्त
सहस्त्राक्षी लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल :

अन्नपूर्णा मन्दिर, लदरुहीं, **चौंतड़ा,**
जिला : **मण्डी** (हिमाचल प्रदेश)

आयोजक : अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, हिमाचल प्रदेश : आर. एस. मिन्हास-8894245685, संजीव कुमार-7018562564, अजय कुमार, विनीत कुमार, रमेश कुमार-9459252752, विकास सूद, अजय धरवाल, त्यागी, पुरुषोत्तम राम, बलराम, काकू, गोविंद राम, खेमचन्द, विजय कुमार, रोहित कुमार, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, महेश कुमार बस्सी, कृष्ण कुमार, बबलू, रमेश चन्द, बीना देवी, पालमपुर-संजय सूद-9816005757, ओंकार राणा, देव गौतम, सीमा चन्देल, कुसुम, मिलाप चन्द, सुनन्दा देवी, गौतम, काँगड़ा-अशोक कुमार-9736296077, राजू, सुनील नाग, धर्मशाला-केसर गुरंग-9882512558, संध्या-9805668100, जुल्फीराम, नगरोटा सूरियाँ- ओम प्रकाश शर्मा-9418250674, कुशल गुलेरिया, जगजीत पठानिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, जीतलाल कालिया, श्रेष्ठा गुलेरिया, नूरपुर-पीताम्बर दत्त, नरेश शर्मा-9816152967, सुन्दरनगर -जयदेव शर्मा.9816314760, बंशीराम ठाकुर-9805042544, पृथ्वी-8580721061, नरेश वर्मा, नीलम, नीलमणी, हमीरपुर-निर्मला देवी-9805243860, राजेन्द्र शर्मा-9418103439, डॉ. गगन प्रवीण धीमान, घुमारवीं- ज्ञानचन्द रत्न-9418090783, सोहनलाल-9418808883, हेमलता कौण्डल, गोवर्धन शर्मा, डॉ. सुमन, जगरनाथ नड्डा, धर्मदत्त, राजेश कुमार, कुल्लू-रतोराम, तपेराम, सरकाघाट-अशोक कुमार, के.डी. शर्मा, ऊना-अमरजीत-9418350285, प्रदीप राणा, दसुआ टाण्डा-रघुवीर सिंह एवं पार्टी।

भारतवर्ष में हिमालय का नाम आते ही हमें स्वतः ही पवित्रता का बोध होने लगता है। हिमालय वह स्थान है, जहाँ ऋषि-मुनि, योगी आज भी तपस्यारत हैं। उसी हिमालय की पवित्रतम ऊँचाइयों पर बसे हैं-हमारे चार विशिष्ट तीर्थ स्थल यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ, जिन्हें सामूहिक रूप से चार धाम के रूप में भी जाना जाता है। यह स्थल उत्तर भारत में धार्मिक यात्रा का महत्वपूर्ण केंद्र है।

सद्गुरुदेव की कृपा से हम गुरुदेव के सानिध्य में पूर्व में बद्रीनाथ एवं गंगोत्री की पुण्य यात्रा का लाभ प्राप्त कर चुके हैं। इसी क्रम में गुरुदेव ने फिर इस बार अपने शिष्यों को केदारनाथ यात्रा ले जाने का निश्चय किया है, भगवान शिव का स्थान है। यह स्थान शिव उपासकों के लिए सबसे पवित्र तीर्थों में से एक है। भगवान शिव, अर्थात् गुरु, क्योंकि शिव ही गुरु हैं और गुरु ही शिव हैं इसलिये इस स्थान की यात्रा अपने आप में ही शिष्यों के हृदय में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह स्थान बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

स्कन्द पुराण, केदारनाथ खण्ड 1, 40वें अध्याय के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात युधिष्ठिर आदि पाण्डवों ने जब सगे-संबंधियों की हत्या के पाप का प्रायश्चित श्री व्यास जी से पूछा तब व्यास जी ने कहा कि बिना केदारखण्ड जाए इन पापों का प्रायश्चित नहीं हो सकता। तुम लोग वहां जाओ। पाण्डव केदारखण्ड आये, इस पर महादेव बैल का रूप लेकर पशुओं में शामिल हो गये और भूमि में अंतर्ध्यान होने लगे तभी पाण्डव को इस बात का भान हो गया और भीम उन पर झपट पड़े और पीठ को पकड़ लिया। पाण्डवों की इच्छाशक्ति एवं भक्ति देखकर भोलेनाथ प्रसन्न हो गये। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भूमि में अंतर्ध्यान होते वक्त बैल रूपी भगवान शिव के धड़ से आगे का हिस्सा काठमाण्डू में प्रकट हुआ जिससे वे पशुपतिनाथ कहलाए एवं बैल की पीठ की आकृति की पिंड के रूप में भगवान केदारनाथ में पूजा होती है। इस प्रकार तप करके पाण्डवों ने भगवान को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

कहा जाता है कि केदारनाथ जी का मन्दिर पांडवों का बनाया हुआ प्राचीन मन्दिर है। ये द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। जहाँ पाण्डवों ने अपनी तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न किया था उसी मन्दिर को 8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा पुनः जीवित किया गया।

यहाँ श्राद्ध तथा तर्पण करने से पितर लोग परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। मन्दिर के समीप ही हंसकुण्ड है जहां तर्पण किया जाता है।

कुर्म पुराण 36वां अध्याय के अनुसार हिमालय तीर्थ में स्नान करने एवं केदार के दर्शन करने से रुद्र लोक प्राप्त होता है। गरुढ़ पुराण (81वां अध्याय) के अनुसार केदारतीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें गुरुदेव के सानिध्य में ऐसी विशेष तीर्थ यात्राओं में जाने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

ऐसे विशिष्ट तीर्थ केदारनाथ धाम जहाँ देवाधिदेव भगवान शिव स्वयं गुरु रूप में विराजमान है जहाँ हिमालय के उच्चतम शिखर पर जाकर पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर साधना प्राप्त करना, दीक्षा प्राप्त करना आपके कई

जन्मों का पुण्य ही है। ऐसा उत्सव हमारे जीवन का एक स्वप्निल क्षण बन जायेगा जब हम भगवान केदार के प्रांगण में विशेष दीक्षा प्राप्त करेंगे और अपने गुरु के सानिध्य में सद्गुरुदेव के आशीर्वाद से भगवान शिव की आराधना साधना करेंगे।

शिविर का कार्यक्रम केदारनाथ के प्रांगण में ही रहेगा। आयोजकों ने गुरुदेव की आज्ञा से 17 जून को भगवान केदारनाथ के प्रांगण में ही रात्रि रुकने की व्यवस्था की है जो हमारे जीवन के सर्वोच्च सौभाग्यशाली क्षण होंगे वह पूरी रात्रि आपकी साधना की रात्रि होगी और आपके जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि होगी।

अत: हम बार-बार आप को आमंत्रण दे रहे हैं ऐसे शिव तीर्थ स्थल केदारनाथ चलने एवं विशेष क्षणों का साक्षी बनने के लिए।

आप यथाशीघ्र अपना ट्रेन का आरक्षण करवा लें, जिससे आपको हरिद्वार पहुंचने एवं वापस आते वक्त कोई परेशानी न हो और अपना नाम हमारे जोधपुर कार्यालय में लिखवा कर अपनी बुकिंग करवा लें क्योंकि पहाड़ों पर होटल की बुकिंग यथाशीघ्र करवानी पड़ती है।

यात्रा - 15 जून से 19 जून 2021

15 जून - आपको शाम तक सीधा हरिद्वार पहुँचना है।

16 जून - प्रात: हम गुरुदेव के साथ हरिद्वार से केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे और शाम को रामपुर नामक स्थान पर होटल में विश्राम करेंगे।

17 जून - प्रात: 5 बजे रामपुर से गौरीकुण्ड पहुँचकर वहाँ से पैदल केदारनाथ की ओर प्रस्थान करेंगे (गौरीकुण्ड से केदारनाथ की दूरी लगभग 16 कि.मी. है, पैदल जाने में लगभग 6-7 घंटे लगते हैं)। आप वहाँ पहुँचने के बाद उसी दिन केदारनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लें एवं पास के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों के दर्शन भी कर लें। मन्दिर से लगभग 600 मीटर की दूरी पर एक पहाड़ी पर भैरव मन्दिर है। आप चाहें तो केदारनाथ तक की 16 कि.मी. की दूरी घोड़ा, खच्चर, पोनी या डोली से भी तय कर सकते हैं। जो साधक हेलीकॉप्टर से जाने के इच्छुक हों, तो वह स्वयं इन्टरनेट पर हेलीकॉप्टर की बुकिंग ऑन लाइन कर सकते हैं। हेलीकॉप्टर से केदारनाथ जाने में सिर्फ 15 मिनट लगते हैं। यह सुविधा सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। आप इसका उपयोग शीघ्र पहुँचने हेतु कर सकते हैं।

दीक्षा एवं साधना कार्यक्रम वहाँ के मौसम के अनुसार 17 जून की शाम या 18 जून की सुबह ब्रह्म मुहूर्त में सम्पन्न होगा एवं हवन कुण्ड में गुरुदेव के सानिध्य में आप आहुति भी प्रदान कर सकेंगे।

18 जून - प्रात: 10 बजे सभी साधक नाश्ता करके वापस प्रस्थान करेंगे एवं वापस पहुंचकर रामपुर अपने होटल में विश्राम करेंगे।

19 जून - प्रात: रामपुर से प्रस्थान कर रात्रि में हरिद्वार में विश्राम करेंगे।

20 जून - प्रात: नास्ते के बाद अपने-अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान करेंगे।

यात्रा शुल्क 17000 रुपये प्रति साधक रखा गया है, जिसमें हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था तथा पांच रातों में ठहरने के लिए होटल व्यवस्था एवं नाश्ते व भोजन शुल्क भी शामिल है एवं दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी नि:शुल्क प्रदान की जायेगी। आप अपना नाम जोधपुर ऑफिस में शीघ्र लिखवा कर जाने हेतु बुकिंग करवा लें।

15 जून से 19 जून 2021

ज्योतिर्लिंग केदारनाथ यात्रा

ध्यान दें

केदारनाथ धाम की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 3584 मीटर है

1. अपनी आवश्यक दवाइयाँ एवं यदि कोई दवा नित्य लेनी है तो दवा की पर्ची साथ रखें।
2. अपने साथ रेनकोट (अत्यावश्यक), छतरी, टॉर्च, कुछ ड्राई फ्रूट्स, कपूर (ऑक्सीजन की कमी होने पर), गर्म कपड़े, अदरक के सूखे टुकड़े (उल्टी में उपयोगी) आदि अपने साथ रखें।
3. होटल में तीन-चार साधकों के मध्य शेयरिंग रूम की व्यवस्था होगी।
4. सभी यात्री ट्रेंकिंग शूज ही पहनें।
5. यात्रा में जाने हेतु सभी साधक शीघ्र अपना पंजीकरण गुरुधाम जोधपुर या सिद्धाश्रम दिल्ली में करायें।
6. महिलायें परिवार के किसी सदस्य के साथ ही पंजीकरण करायें।
   (विशेष ध्यान दें - अस्थमा, ह्रदय रोगी, गठिया रोग या अन्य किसी बड़ी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति इस यात्रा में अपने डॉक्टर की सलाह से एवं स्वयं की जिम्मेदारी पर ही यात्रा करें।)
7. अपना ऑरिजनल आधार कार्ड साथ लाना अनिवार्य है।

प्रत्येक साधक के लिए पंजीयन शुल्क 17000 रुपये है।
साधना सामग्री एवं दो शक्तिपात दीक्षाएँ भी इसी शुल्क में प्रदान की जायेंगी

पंजीकरण शुल्क आप निम्न दिये गये किसी भी खाते में जमा करा कर फोन पर सूचना दें

खाताधारी	बैंक का नाम	खाता संख्या	IFSC CODE
देवेंद्र पांचाल	इलाहाबाद बैंक, दिल्ली	50307581597	ALLA0212299
उमेंद्र सिंह रावत	ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, दिल्ली	52102191001064	ORBC0105210
हरीश	भारतीय स्टेट बैंक, दिल्ली	32334179876	SBIN0011547
नरेन्द्र सिंह रघुवंशी	भारतीय स्टेट बैंक, जोधपुर	20239358444	SBIN0006490

यात्रा में अपने साथ अपना ओरिजनल आधार कार्ड एवं उसकी दो फोटोकॉपी साथ लाना अनिवार्य है।

अधिक जानकारी के लिए निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें

जोधपुर - 0291-2432209,7960039, 2432010, 2433623, दिल्ली - 011-79675768, 79675769, 27354368

यात्रा शुल्क में हरिद्वार से जाने एवं आने की बस व्यवस्था, नाश्ते, खाने एवं ठहरने की व्यवस्था के साथ ही दो विशेष शक्तिपात दीक्षाएं एवं साधना सामग्री भी इसी शुल्क में शामिल है।

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 March, 2021
Posting Date : 21-22 March, 2021
Posting office At Jodhpur RMS

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
16-17 अप्रैल
13-14 मई

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
18-19 अप्रैल
15-16 मई

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002